'दीधा निज गुण देवता, रिखियां दी आसीस।
जिण दिन सिरजी मरुधरा, सोणी नायो सीस।।'

'दीधा नहीं जो देवता, लूंठापण ही लीण।
इन्दर माग्यो आंतरै, अब लग बरखाहीन।।'

→ राजस्थान में मानव की सबसे पहली हलचल बनास और उसकी सहायक नदियों के आस-पास देखने को मिली।

→ Stone Age :

(1) BAGORE – In Bhilwara dist.
- कोठारी नदी के किनारे
- पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य यहाँ मिले हैं।
- पाषाणकालीन औजारों के भंडार यहाँ मिले हैं।
- यहाँ का उत्खनन सर्वप्रथम 'विरेन्द्र नाथ मिश्र' ने किया।

(2) TILWARA – In Barmer dist.
- लूनी नदी के किनारे
- यह बागोर की बस्ती के समकालीन थी तो यहाँ भी पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं।
- 'अग्नि कुंड'

* Jayal, Deendwana } Nagore

* Budha pushkar · Ajmer

* राजस्थान, सिंधु सभ्यता के युग में —

[1] KALIBANGA : In Present hanumangarh.

- अर्थ → काली चूड़ियां
- 1952 → सर्वप्रथम अमलानन्द घोष ने उत्खनन प्रारम्भ किया।
- 1961-1969 → वास्तविक उत्खनन B.K. Thaper & B.B. Lal ने किया (5 स्तरों तक)
- कालीबंगा से प्राक् हड़प्पा और विकसित हड़प्पा के अवशेष मिले हैं।
- सर्वप्रथम जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा के लोग दो फसलें उगाया करते थे – चना, सरसों
- अग्नि वेदिकाएँ प्राप्त हुयी हैं।
- कालीबंगा में लकड़ी की नालियां बनी हैं।
- मकान कच्ची ईंटों व अलंकरित ईंटों के बने थे।
- युग्मित शवाधान प्राप्त हुये हैं।
- भूकम्प के अवशेष मिले हैं।
- कालीबंगा प्राचीन सरस्वती या घग्घर नदी के किनारे बसा हुआ था. शायद इन नदियों के मार्ग परिवर्तन कर लेने पर कालीबंगा नष्ट हो गया।
- 1985-86 A.D. भारत सरकार ने एक संग्रहालय बनवाया

[2] SOTHI : In Bikaner.

- अमलानन्द घोष ने इसे सम्पूर्ण हड़प्पा सभ्यता का उद्गम स्थल कहा है। इसे 'कालीबंगा I' भी कहा जाता है।
- इस प्रकार के दो केन्द्र और मिले हैं — (1) सोथाणीया (2) पूगल

[3] आहड़ :

- वर्तमान उदयपुर जिले में स्थित।
- चूंकि यह सभ्यता बनास नदी के आस-पास मिली है, इसलिए इसे बनास सभ्यता भी कहते हैं।
- 'आहड़' स्थल बनास की सहायक नदी आयड़ / बेड़च नदी के किनारे बसा हुआ था।
- इसे मृतकों के टीलों की सभ्यता भी कहते हैं।
- यहां 1 घर में 6 से 8 चूल्हे मिले हैं। इससे हमें संयुक्त परिवार व सामुहिक भोज की जानकारी मिलती है।
- यहां से एक यूनानी मुद्रा मिलती है, जिस पर 'अपोलो' का चित्र बना हुआ है। [सूर्य का देवता]
- यहाँ काले व लाल मृद् भांड मिले हैं, जिन्हें 'गोरे' या 'कोठ' कहते हैं।
- यहां से बैल की मृण मूर्ति प्राप्त हुयी है, जिसे 'बनासीयन बुल' कहते हैं।
- बिना हत्थे के जलपात्र मिले हैं, ऐसे जलपात्र हमें ईरान की सभ्यता से प्राप्त हुये हैं। जो ईरान के साथ सम्बन्ध को दर्शाते हैं।
- आहड़ का प्राचीनतम नाम 'आघाटपुर' है। स्थानीय भाषा में इसे 'धूलकोट' भी कहते हैं।
- 'अक्षय कीर्ति व्यास' ने यहां सर्वप्रथम उत्खनन प्रारम्भ किया। उसके बाद { रतन चन्द्र अग्रवाल, हंसमुख धीरज सांकलिया, वीरेन्द्र नाथ मिश्र }, ने यहां खुदाई की।
- आहड़ के अन्य केंद्र -
  (1) गिलुण्ड - राजसमंद
  (2) बालाथल - उदयपुर
  (3) ओझीयाणा - भीलवाड़ा

21 June 2013

- आहड़ से हमें तांबा गलाने की भट्टियाँ प्राप्त हुयी हैं इसलिये इसे ताम्रवती नगरी भी कहते हैं।

☆ महाजनपद काल

- भारत की दूसरी नगरीय क्रांति भी कहा जाता है।
- महाजनपदों में <u>गणतंत्रात्मक</u> व्यवस्था थी।
- राज. में जनपद

① मत्स्य
- वर्तमान अलवर व जयपुर
- राजधानी - विराटनगर
- ऋग्वेद में भी मत्स्य जनपद की जानकारी मिलती है।

② शुरसेन
- राजधानी - मथुरा
- अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली का क्षेत्र

③ कुरु
- राजधानी - इन्द्रप्रस्थ (Delhi)
- उत्तरी अलवर

अलवर
→ उत्तरी ↓ कुरु
→ द. प. ↓ मत्स्य
→ पूर्वी ↓ शूरसेन

④ राजन्य जनपद
- भरतपुर का कुछ हिस्सा

⑤ शिवि जनपद
- वर्तमान चित्तौड़गढ़ और उदयपुर जिलों में स्थित
- राजधानी - माध्यमिका (नगरी - वर्तमान नाम)
- राज. का पहला उत्खनित स्थल : नगरी

1904 A.D. D. R. Bhandarkar.

(6) – मालव जनपद
- वर्तमान जयपुर और टोंक
- राजधानी – नगर (टोंक) (इसे खेड़ा सभ्यता भी कहते हैं।)
- सर्वाधिक सिक्के मालव जनपद के प्राप्त होते हैं।

(7) शाल्व जनपद
- अलवर जिले में स्थित।

(8) यौद्धेय जनपद
- वर्तमान गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले में स्थित।
- रूद्रदामन (शक शासक) के गिरनार / जूनागढ़ से यह जानकारी मिलती है कि कुषाणों की शक्ति को यौद्धेयों ने रोका।

(9) अर्जुनायन जनपद
- वर्तमान अलवर, भरतपुर जिलों में स्थित।

— महाजनपद काल में बीकानेर और जैसलमेर (जोधपुर) के आस-पास के क्षेत्र को जांगल प्रदेश कहा जाता था।

* कालान्तर में बीकानेर के शासकों ने 'जांगलधर बादशाह' की उपाधि का प्रयोग किया।

मौर्य काल

— मौर्य काल में सबसे महत्त्वपूर्ण केन्द्र बैराठ (विराटनगर) था।
— 1837 A.D. में 'कैप्टन बर्ट' ने बीजक पहाड़ी से अशोक का भाबरू शिलालेख खोजा। इसमें अशोक द्वारा बौद्ध संघ के प्रति निष्ठा व्यक्त की गयी है। यहाँ से एक बौद्ध स्तूप और एक बौद्ध गोलाकार मंदिर प्राप्त होता है।
— ह्वेनसांग भी यहां बौद्ध मठों की पुष्टि करता है।
↓
आत्मकथा – सी - यू - की

- कालान्तर में हूण शासक मिहिरकुल ने इन बौद्ध मठों को नष्ट कर दिया।
- अशोक का भाब्रू शिलालेख वर्तमान में कलकत्ता में Musium में रखा गया है।
- जयपुर का राजा सवाईराम सिंह ने यहां खुदाई करवायी थी। जिसमें सोने की एक मंजूषा प्राप्त हुयी। सम्भवतः इसमें भगवान बुद्ध के अवशेष रहे होंगे। उस समय बैराठ का किलेदार 'कीताजी खंगारोत' था।

→ जैसासिंह सूरी की पुस्तक 'कुमारपाल प्रबन्ध' के अनुसार 'चित्रांग (चित्रांगद) मोरी' ने चित्तौड़ का किला और चित्तौड़ में एक तालाब का निर्माण करवाया।

→ 713 A.D – के मानसरोवर (चित्तौड़) लेख के अनुसार यहां राजा 'मान मौर्य' का शासन था। इस अभिलेख में चार शासकों के नाम प्राप्त होते हैं –

(1) महेश्वर (2) भीम
(3) भोज (4) मान

'कर्नल जेम्स टॉड' द्वारा लंदन ले जाते समय यह अभिलेख गलती से समुद्र में गिर गया था।

→ 734 A.D. में 'बापा रावल' ने राजा मान मौर्य से चित्तौड़ छीन लिया।

→ 738 A.D. में कणसवा (कोटा) शिवालय के अभिलेख से मौर्य राजा धवल का जिक्र मिलता है।

इसके बाद हमें राज. में मौर्यों का कोई जिक्र नहीं मिलता है।

→ बैराठ से सर्वाधिक मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होते हैं।
→ बैराठ में चट्टानों में लिखी लिपि को शंख लिपि कहते हैं।
→ 1936 में दयाराम साहनी ने यहां का उत्खनन किया था।

मौर्योत्तर काल

- यूनानी शासक 'मिनाण्डर' ने 150 A.D. में माध्यमिका पर अधिकार कर लिया था इसकी पुष्टि 'पतंजलि के महाभाष्य' से होती है। बैराठ से हमें मिनाण्डर की 16 यूनानी मुद्राएँ प्राप्त होती हैं।
- भरतपुर के 'नोह' से शुंग कालीन 5 मीटर ऊँची यक्ष की मूर्ति मिली है। इसे 'जाख बाबा' की मूर्ति कहा गया है।
- हनुमानगढ़ के रंग महल से कुषाण कालीन मुद्राएं प्राप्त हुयी हैं। एक गुरु - शिष्य की मूर्ति मिली है।
- रंगमहल की खोज (उत्खनन) डॉक्टर 'हन्नारिद' ने की थी (स्वीडन)

गुप्तकाल

- समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार, उसने राजस्थान के गणतंत्रों को अपनी अधीनता स्वीकार करवायी थी।
- चन्द्रगुप्त II ने शक राजा रुद्रसिंह III को हराकर, यहाँ के शेष भागों को अपने अधिकार में कर लिया।
- कुमारगुप्त के समय बयाना (भरतपुर) में सर्वाधिक गुप्तकालीन सिक्के प्राप्त हुये हैं।
- बड़वा (बारां) से गुप्तों का एक अभिलेख प्राप्त होता है। जिसमे मोखरी शासकों का वर्णन है।
- हूण शासक 'मिहिरकुल' ने बाड़ोली (कोटा) (चित्तौड़) में एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- चारचौमा (कोटा) का शिव मंदिर भी गुप्तकालीन स्थापत्य कला का उदाहरण है।

गुप्तोत्तर काल /

त्रिपक्षीय संघर्ष के दौरान राजस्थान

→ गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी 'भीनमाल' थी।

— ह्वेनसांग अपनी यात्रा के दौरान भीनमाल होकर गुजरा था।
वही भीनमाल को 'पी लो मो लो' लिखता है।

— ब्रह्मगुप्त (भारत का न्यूटन), भीनमाल के थे।
पुस्तकें - ब्रह्म स्फुट सिद्धान्त
खंड खाद्यक

— कवि माघ भी भीनमाल के थे।
पुस्तक - शिशुपालवध

— गुर्जर प्रतिहारों ने अरबों को सिंध से आगे बढ़ने से रोका था।

→ राष्ट्रकूटों की एक शाखा कालान्तर ने राज॰ में राठौड़ के रूप में आयी थी।

⇒ कुछ अन्य ताम्र पाषाण कालीन स्थल —

(1) गणेश्वर — सीकर जिले में कान्तली नदी के किनारे।
· गणेश्वर को ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी कहते हैं।

(2) सुनारी — झुंझुनू जिले में कान्तली नदी के किनारे।

(3) कुराड़ा — नागौर जिले में
'औजारों की नगरी'

(4) ईसवाल — उदयपुर जिले में
'औद्योगिक नगरी' (प्राचीनकाल में यहां से लोहा निकाला जाता था।)

(5) रैढ़ — टोंक जिले में
यहां से सर्वाधिक मात्रा में सिक्के प्राप्त हुये हैं।
इसे प्राचीन भारत का टाटानगर कहते हैं।

(6) जोधपुरा - जयपुर में साबी नदी के किनारे

(7) नलियासर - सांभर (जयपुर) में

(8) गरदड़ा - बूंदी में (प्राचीन भारत की Rock Painting)

मध्यकालीन राजस्थान

(1) मेवाड़ :

'होतो नहीं मेवाड़ तो; होती नहीं हिन्दवाण।
खांडो कदै न खड़कतो, भारत छिपतो भाण॥'

- मेवाड़ सूर्यवंशी हिन्दू शासकों का शासन था।
- विश्व का सबसे दीर्घकालीन वंश
- यहाँ के शासकों को हिन्दुआ सूरज कहा जाता था।
- मेवाड़ के शासकों की कुलदेवी - बाण माता
- मेवाड़ के शासक स्वंय को एकलिंग नाथ (शिव) जी के दीवान मानते हैं।
- मेवाड़ के राज्यचिन्ह में एक पंक्ति लिखी हुयी है -
  'जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहि राखै करतार ॥'
- गुहिल ने 566 A.D. (566 A.D) में मेवाड़ में गुहिल वंश की स्थापना की।
  इसके वंशज गुहिल या गहलोत कहलाए।

(i) बापा रावल :

- इनका वास्तविक नाम था - 'काल भोज'
- ये हारित ऋषि की गायें चराते थे।
- हारित ऋषि के आशीर्वाद से 734 A.D. में राजा मान मौर्य से चित्तौड़ छीन लिया। और नागदा को अपनी राजधानी बनाया। यहाँ पर एकलिंग जी का मंदिर बनवाया।

* मुद्रा प्रणाली शुरु की। (अपने नाम के सिक्के चलाए)

शक्ति सिंह (मालवा) — ~~[illegible] सिंह~~ (आहोल) — रणसिंह — क्षेमसिंह — सामंतसिंह (राहोल)

(ii) अल्लट :

- वास्तविक नाम - 'अलु रावल'
- इसने 'आहड़' को अपनी राजधानी बनाया
- आहड़ में एक वराह का मंदिर बनवाया।
- हूण राजकुमारी हरिया देवी से शादी की।

* मेवाड़ राज्य में नौकरशाही की स्थापना की।

- गुहिल शासक शक्ति कुमार के समय में मालवा के राजा मुंज ने चित्तौड़ के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। मुंज के वंशज राजा भोज ने 'त्रिभुवन नारायण शिव मंदिर' जिसे अब मोकल का समिद्धेश्वर मंदिर कहते हैं, का निर्माण करवाया।

(iii) रणसिंह –

- इसका अन्य नाम कर्णसिंह था।
- रणसिंह

  ↓ क्षेमसिंह राजा (रावल) → सांमत सिंह, कुमार सिंह

  ↓ राहप (सीसोदा गांव)

सामंत सिंह 1172 A.D में मेवाड़ का शासक बना लेकिन मेवाड़ के पड़ोसी और नाडौल के राजा कीतू (कीर्तिपाल) ने सामंतसिंह से मेवाड़ राज्य छीन लिया, तब सामंतसिंह ने बागड़ में अपना राज्य स्थापित किया।

- कीर्तिपाल को क्षेमसिंह के छोटे पुत्र कुमारसिंह ने 1179 A.D. में पराजित कर मेवाड़ पर पुनः अधिकार कर लिया।

[कुमार का वंशज — जैत्रसिंह]

(iv) जैत्रसिंह (1213 – 1250) A.D.

- * भूताला का युद्ध (1234 A.D) – सुल्तान इल्तुतमिश और जैत्रसिंह के मध्य जैत्रसिंह विजयी रहा।
- इल्तुतमिश ने नागदा को तबाह कर दिया। इसलिए जैत्रसिंह ने चित्तौड़ को अपनी नयी राजधानी बनायी।
- जैत्रसिंह के समय (1213 - 1250) को 'मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्ण' काल कहते हैं।
- * भूताला युद्ध की जानकारी हमें 'जयसिंह सूरी' की पुस्तक 'हम्मीर मद मर्दन' से मिलती है।

(v) तेजसिंह (1250 – 1273) A.D.

- इनके समय बलबन का चित्तौड़ पर आक्रमण हुआ।
- 1260 A.D. में आहड़ में 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' नामक जैन ग्रंथ चित्रित किया गया, जो राज्य का पहला चित्रित ग्रंथ है।
- तेजसिंह की रानी * 'जैतलदे रानी' ने चित्तौड़ में * श्यामपार्श्वनाथ का मंदिर बनवाया।

(vi) समरसिंह (1273 – 1302) A.D.

- इनके समय में रणथम्भौर के हम्मीर ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर वहां से खिराज वसूला।
- गुजरात आक्रमण के लिए जाते समय अलाउद्दीन की सेना से कर वसूला।

(vii) रतनसिंह (1302 — 1303 A.D.) – [अंतिम रावल शासक]

- रतनसिंह के एक भाई का नाम था - 'कुम्भकरण', ये यहां से नेपाल चला गया। और नेपाल में 'राणाशाही वंश' की स्थापना की।
- रतनसिंह की रानी का नाम पद्मिनी था, ये सिंहल देश के राजा गन्धर्व सेन और चम्पावती की पुत्री थी। राघव चेतन नामक एक ब्राह्मण ने अलाउद्दीन को पद्मिनी की सुन्दरता के बारे में बताया। अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के प्रमुख कारण निम्न थे -
  (a) अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षा
  (b) सुल्तान की प्रतिष्ठा का प्रश्न
  (c) चित्तौड की सामरिक स्थिति, किले का सामरिक व व्यापारिक महत्त्व
- अलाउद्दीन के 8 माह के घेरे के बाद, चित्तौड़ के किले में साका किया गया।

* साका – केसरिया + जौहर

(रानी पद्मिनी ने 16000 रानियों के साथ जौहर किया।)
25 Aug.1303 - जौहर

- राजा रतनसिंह ने अपने महत्त्वपूर्ण योद्धाओं के साथ केसरिया किया। गोरा व बादल नामक दो सेनानायकों ने अद्भुत वीरता दिखायी।
- सिसोदे गाँव का ~~लक्ष्म~~ लक्ष्मणसिंह अपने सात पुत्रों के साथ काम आ गया।
- अलाउद्दीन ने किले पर अधिकार कर लिया।
- यह चित्तौड़ के किले का 'पहला साका' था।
- अलाउद्दीन ने किले का नाम खिजराबाद कर दिया और उसे अपने बेटे को खिज्र खां को दे दिया। (खिज्र)
- इस हमले के समय अमीर खुसरो, अलाउद्दीन के साथ था अपनी पुस्तक 'खजाइन-उल-फुतुह' में इसका जिक्र करता है।
- 1540 A.D में मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी पुस्तक 'पद्मावत' में पद्मिनी की सुन्दरता का वर्णन किया है। ये पुस्तक 'अवधी' भाषा में लिखी है।

• थोड़े दिनों बाद चित्तौड़ का शासन 'मालदेव सोनगरा' को सौंप दिया गया।

* मालदेव - जालौर के कान्हड़देव सोनगरा का भाई था।
. इस मालदेव को मूछाला मालदेव के नाम से भी जाना जाता था।

Note:

राजस्थानी साहित्यिक स्त्रोतों तथा जनश्रुतियों के अनुसार पद्मिनी 'पूगल' के पून्यपाल भाटी की पुत्री थी।

"पूगळ गढ़ री पद्मिनी, तूं राणी सिरमौड़।
जैसळमेर जलम लियो, परणी गढ़ चित्तौड़॥"

• 'गोरा बादल री चौपाई' नामक पुस्तक 'हेमरत्न सूरी' ने लिखी।

(viii) हम्मीर (1326 - 1364 A.D.)

• हम्मीर सीसोदे गांव के लक्ष्मण सिंह का पोता था, जो चित्तौड़ के पहले साके में काम आ गये। इनके पिता का नाम अरिसिंह था।

• हम्मीर ने मालदेव सोनगरा के बेटे 'बनवीर सोनगरा' से चित्तौड़ छीना। चूंकि यह सीसोदे गांव से आया था, इसलिए मेवाड़ के राजा अब सिसोदिया कहलाने लगे, मेवाड़ में 'राणा' शाखा की स्थापना हुई।

राहप
↓
सीसोदा - (राणा)
↓
लक्ष्मणसिंह
↓
अरिसिंह
↓
हम्मीर ← राणा शाखा
↓
मेवाड़ के रावल से मेवाड़ के राणा में परिवर्तन।

* सिंगोली का युद्ध -

हम्मीर v. मुहम्मद बिन तुगलक

• 'कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति' में हम्मीर को 'विषम घाटी पंचानन' कहा गया है।
(विकट युद्धों में शेर के समान)

• 'रसिक प्रिया' में हम्मीर को 'वीर राजा' कहा गया है।

• चित्तौड़ के किले में 'अन्नपूर्णा मंदिर' का निर्माण करवाया।

• हम्मीर को 'मेवाड़ का उद्धारक' कहा जाता है।
(क्योंकि मेवाड़ को फिर से जीता था)

(ix) राणा लाखा – (राणा लक्ष सिंह) 1382 – 1421 A.D.

- इनके समय में 'जावर' मे चांदी की खान निकल गयी।
- इनके समय में ही एक बन्जारे ने 'पिछोला झील' का निर्माण करवाया।

(नटनी का चबूतरा – पिछोला झील के पास)

- कुम्भा हाड़ा नकली बूंदी की रक्षा करते हुये मारा गया।

'नकली गढ़ दीधो नहीं, बिना घोर घमसाण।
सिर टूट्या बिन किम फिरै, असली गढ़ पर आण।।'

⇒ मेवाड़ → लाखा → चूंडा

मारवाड़ → चूंडा → बेटी – हंसाबाई; चूंडा → रिडमल / रणमल

- राणा लाखा की शादी, मारवाड के राव चूंडा की पुत्री हंसा बाई के साथ हुई।
- इस अवसर पर लाखा के बेटे चूंडा ने यह प्रतिज्ञा की मेवाड का अगला राणा वह न बनकर हंसाबाई के पुत्र को बनाएगा. ऐसी प्रतिज्ञा के कारण चूंडा को *मेवाड़ को भीष्म पितामह* कहते है।
- इस बलिदान के बदले चूंडा के वंशजो को (चूंडावत) हरावल में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ

* हरावल – सेना का अग्रिम भाग जो सबसे पहले युद्ध लड़ता है।

चूंडावतो को सर्वाधिक (चार) प्रथम श्रेणी के ठिकाणे दिए गए।
(16 ठिकाणों में से – प्रथम श्रेणी के)
द्वितीय – 32
तृतीय – 64 जागीरें

सलूम्बर नामक सबसे बड़ा ठिकाणा इन्हें दिया गया।

- राजधानी में राणा की अनुपस्थिति में सलूम्बर का रावत (रावल) शासन कार्य संभालता था।
- मेवाड़ के शासकों (राणा) का राजतिलक, सलूम्बर का रावत ही करता था।

(X) **मोकल** (1421 – 1433) A.D.

(हंसा बाई का बेटा)

- हंसा बाई के अविश्वास की वजह से चूंडा मेवाड़ छोड़कर मालवा चला गया। अब मोकल का संरक्षक हंसा बाई का भाई रणमल बन गया।
- मोकल ने चित्तौड़ में 'समिद्धेश्वर मंदिर' का पुनः निर्माण करवाया। (परमार राजा भोज ने बनाया था)
- एकलिंग जी के मंदिर का परकोटा बनवाया।
- 1433 A.D. में गुजरात के राजा अहमद शाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। जब मेवाड़ की सेना जीलवाड़ा (राजसमंद) में पड़ाव डाल रखी थी तब चाचा, मेरा, महपा पंवार ने मोकल की हत्या कर दी।
  उस समय इस पड़ाव में मोकल का बेटा कुम्भा भी था, पर अन्य सरदारों ने उसे सुरक्षित चित्तौड़ वापस पहुँचा दिया।
- मोकल की रानी **कमलावती** ने अहमद शाह के साथ युद्ध किया।

(XI) **राणा कुम्भा** (1433 – 1468 A.D.)

- रणमल, राणा कुम्भा का संरक्षक था।
- मेवाड़ के दरबार में राठौड़ों का प्रभाव बढ़ रहा था, उन्होंने चूंडा के भाई राघव देव सिसोदिया की हत्या कर दी थी।
  राठौड़ों के इस प्रभाव को खत्म करने के लिए हंसाबाई ने चूंडा को मालवा से मेवाड़ वापस बुलवाया।
- रणमल की उसकी प्रेमिका 'भारमली' की सहायता से हत्या कर दी गयी।
- रणमल का बेटा **जोधा** अपने अन्य भाइयों के साथ भाग जाता है। व बीकानेर के पास **'काहुनी'** नामक गाँव में शरण लेता है।
- चूंडा ने मंडोर पर हमला करके अधिकार कर लिया।
- हंसा बाई की मध्यस्थता से कुंभा व जोधा के बीच संधि हुयी इस संधि को **'आँवल बाँवल की सन्धि'** कहते हैं।
- जोधा ने अपनी बेटी **शृंगार कंवर** की शादी कुम्भा के बेटे **'रायमल'** से कर दी।

* कुम्भा की माता का नाम - सौभाग्यवती परमार

- 1437 A.D. 'सारंगपुर का युद्ध'

कुम्भा V. महमूद खिलजी
(मालवा का सुल्तान)

कुम्भा इस युद्ध में विजयी रहता है। इस विजय के उपलक्ष्य में चित्तौड़ में विजयी स्तम्भ का निर्माण करवाता है। इस विजयी स्तम्भ को कीर्ति स्तम्भ भी कहा जाता है। बीच में भगवान विष्णु की प्रतिमा लगी होने के कारण इसे 'विष्णु ध्वज' भी कहते हैं। इसे 'मूर्तियों का अजायबघर' कहते हैं। भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष कहते हैं।

यह (नौ) मंजिला इमारत है।

122 feet लम्बा, 30 feet चौड़ा है।

इसकी (तीसरी) मंजिल में 9 बार अल्लाह लिखा है।

इसके वास्तुकार जैता व उसके पुत्र नाता व पुंजा थे।

इसमें कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति लिखी गयी है। जिसकी रचना अत्री व उसके बेटे महेश ने की थी।

इसका ऊपरी भाग क्षति ग्रस्त होने पर महाराणा *स्वरूपसिंह* ने उसका पुनर्निर्माण करवाया था।

कर्नल जेम्स टॉड ने इसकी तुलना 'कुतुबमीनार' से की है।

'फर्ग्यूसन' ने इसे रोम के टार्जन से भी श्रेष्ठ बताया है।

राजस्थान पुलिस का यह प्रतीक चिन्ह है।

राजस्थान की पहली इमारत जिस पर 'डाक टिकट' जारी किया गया।

15 Aug. 1949 को इस पर (1 Rs.) का डाक टिकट जारी हुआ।

* जैन कीर्ति स्तम्भ :

12वीं शताब्दी में एक जैन व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने इसका निर्माण करवाया था। (चित्तौड़ के किले में।)

जैनों के पहले तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित होने के कारण इसे आदिनाथ स्मारक भी कहते हैं।

1457 — चम्पानेर की संधि

मालवा के महमूद खिलजी और गुजरात के कुतुबुद्दीन के बीच दोनों ने मिलकर एक साथ कुम्भा पर आक्रमण करने की योजना बनायी।

- बदनौर के युद्ध में कुम्भा इन दोनों की संयुक्त सेना को हराता है
- सिरोही के 'सहसमल देवड़ा' को हराता है।
- नागौर के शम्स खाँ को मुजाहिद खाँ के खिलाफ सहायता देता है। (नागौर के थे दोनों, नागौर के लिए लड़ रहे थे).

कुम्भा की उपाधियां →

(1) हिन्दु सुल्तान सुरताण
(2) अभिनव भरताचार्य
(3) राणौ रासौ (साहित्यकारों का आश्रयदाता)
(4) हाल गुरू (पहाड़ी किलों को जीतने वाला)
(5) दान गुरू
(6) छापगुरू (छापामार युद्ध प्रणाली)

कुम्भा का स्थापत्य कला में योगदान →

'श्यामलदास' के वीर विनोद के अनुसार, ~~चित्तौड़~~ मेवाड के 84 दुर्गों में से 32 का निर्माण राणा कुम्भा ने करवाया था।

(1) कुम्भलगढ का किला - राजसमन्द
वास्तुकार - *मंडन
कुम्भलगढ का ऊपरी भाग 'कटारगढ' कहलाता है। यह कुम्भा का निजी आवास था। इसे 'मेवाड की आंख' कहते हैं।

(2) अचलगढ के किले का पुनर्निमाण करवाया — सिरोही

(3) बसन्ती
(4) मचान } सिरोही

(5) भोमठ दुर्ग - भोमठ के पठार पर (डूंगरपुर - बांसवाड़ा)

• कुम्भा स्वामी का मंदिर बनवाया।-
तीनों किलों में - चित्तौड़ में, कुम्भलगढ़ व अचलगढ़ में।

• चित्तौड़ के किले मे श्रृंगार चवंरी का मंदिर बनवाया।

• कुम्भा के समय में 1439 A.D. में धरणकशाह ने रणकपुर के जैन मंदिर बनाए। चौमुखा मंदिर - रणकपुर के जैन मंदिरो मे एक मंदिर है।
↓
वास्तुकार - * देपाक

→ कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ था। व इसके संगीत गुरू थे 'सारंग व्यास'

कुम्भा द्वारा रचित संगीत ग्रन्थ :

(1) सूड़ प्रबन्ध
(2) कामराज रतिसार
(3) जयदेव की गीत गोविन्द पर टीका लिखी - 'रसिक प्रिया'
(4) चंडी शतक पर भी टीका लिखी
(5) संगीत राज
(6) संगीत सुधा
(7) संगीत मीमांसा
(8) संगीत रत्नाकर पर टीका लिखी है।

→ कुम्भा के दरबार में एक विद्वान थे - कान्ह व्यास
↓
पुस्तक - 'एकलिंग महात्मय'

एकलिंग महात्मय के पहले भाग की रचना कुम्भा ने की थी, जिसे राज्य वर्णन कहा जाता है।

→ मंडन की पुस्तकें -

(1) वास्तुसार
(2) देवमूर्ति प्रकरण
(3) राज्य वल्लभ

(4) रूप मंडन
(5) वास्तु मंडन
(6) प्रासाद मंडन
(7) शकुन मंडन

→ मंडन के भाई का नाम था - नाथा
उसने एक पुस्तक लिखी - वास्तुमंजरी

→ मंडन के बेटे का नाम था - गोविन्द
उसने पुस्तक लिखी - { कला निधि
द्वार दीपिका

→ कुम्भा की बेटी रमा बाई भी एक अच्छी संगीतिज्ञा थी। रमा बाई को जावर का परगना दिया।

→ कुम्भा की बहन लाला मेवाड़ी की शादी गागरोन के शासक अचल दास खिंची से हुयी थी।
↳ (चौहानों की एक उपशाखा)

→ अपने पिता की हत्या ऊदा ने कटारगढ़ में कर दी। इसलिए ऊदा को पितृहन्ता भी कहते हैं।

✗ महाराणा कुम्भा के काल में ही रणकपुर के जैन मंदिरों का निर्माण 1429 A.D में एक जैन श्रेष्ठि धरनक ने करवाया। रणकपुर के चौमुखा मंदिर का निर्माण देपाक नामक शिल्पी के निर्देशन में हुआ।

(xii) रायमल (1473 - 1509 A·D·)
(जोधा की पुत्री) (रायमल के भाई)

- शृंगार देवी (रायमल की पत्नी) ने चित्तौड़ के पास घोसुण्डी बावड़ी का निर्माण करवाया।

*
घोसुण्डी में 2 century B.C. का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है, जो राजस्थान में वैष्णव धर्म का पहला अभिलेखीय साक्ष्य है।

- रायमल ने चित्तौड़ के किले में 'अद्भुत शिव' मंदिर का निर्माण करवाया।

पृथ्वीराज

- रायमल का ज्येष्ठ पुत्र
- इसे 'उड़ना राजकुमार' के नाम से जानते हैं।
- अपनी पत्नी 'तारा' के नाम पर इसने अजमेर के किले का पुनर्निर्माण करवाकर इसे तारागढ़ नाम दिया।
- पृथ्वीराज की '12 खम्भों की छतरी' कुम्भलगढ़ के किले में बनी हुयी है।
(सिरोही)
- पृथ्वीराज के जीजा जगमाल देवड़ा ने पृथ्वीराज को जहर दे दिया।

जयमल

- जयमल सौलंकियों के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।
(तारा के पिता का नाम सुरताण सौलंकी था।)

(xiii) महाराणा संग्राम सिंह [1509 - 1527 A.D.]

(कुंभा के पौत्र, रायमल के पुत्र)

- एक चारण महिला की भविष्यवाणी सुनकर पृथ्वीराज व जयमल ने सांगा पर आक्रमण कर दिया था। सांगा को अपना एक हाथ खोना पड़ा। सांगा वहां से भागकर सेवन्त्री गांव के रूपनारायण मंदिर में पहुंचता है। यहां पर मारवाड़ का बीदा जैतमालोत (राठौड़ो की उपशाखा) सांगा की रक्षा करता है। बीदा रक्षा करते हुये लड़ता हुआ मारा जाता है।

"जैतमाल दल जूंझिया, करवाला करें।
सांगो मौगे चित्रकूट, सिर बीदा सटें।।" (बदले में)
(चित्तौड़)

- सांगा यहाँ से श्रीनगर (अजमेर) में कर्मचन्द पवार के यहां शरण लेता है।

- खानवा का युद्ध (1527 A.D.) - 17 मार्च
  राणा सांगा V. बाबर

- 1517 A.D.- खातोली का युद्ध, बाड़ी का युद्ध } इब्राहिम लोदी के खिलाफ
  दोनों युद्धों में राणा सांगा जीतता है।

- गागरौन के युद्ध में मालवा के सुलतान महमूद खिलजी II को हराता है।

  * इस समय गागरौन का किला, सांगा के दोस्त 'मेदिनी राय' (चन्देरी के राजा) (M.P.) के पास था।

- गुजरात की रियासत ईडर के उत्तराधिकार के प्रश्न पर गुजरात के राजा 'मुजफ्फर शाह II' को हराया।

- बयाना के युद्ध में सांगा, बाबर को हराता है।

- खानवा का युद्ध – 1527 A.D.

– बाबर इस युद्ध से पहले जेहाद की घोषणा कर दी।
– मुसलमानों से 'तमगा कर' हटा दिया गया।
– शराब के व्यक्तिगत सेवन पर रोक।

– राणा सांगा युद्ध से पहले राज्य की लगभग समस्त रियासतों को युद्ध में सहायता के लिए चिट्ठी लिखता है, इसे 'पाती परवन' कहते हैं

आमेर का पृथ्वीराज कछवाह।
चन्देरी का मेदिनी राय
बीकानेर से कल्याण मल
जोधपुर (मारवाड़) से मालदेव
मेड़ता का वीरम देव
सिरोही का अखैराज देवड़ा
बागड़ का उदयसिंह
(डूंगरपुर- बांसवाड़ा)
काठियावाड़ का झाला (जाति) अज्जा (नाम)
गोगुन्दा से झाला सज्जा
बिजौलिया का अशोक परमार (वंश) / पवांर (जाति)
मेवात का हसन खां मेवाती
इब्राहिम लोदी का छोटा भाई महमूद लोदी

युद्ध में सांगा की आंख में तीर लगने से उसे युद्ध मैदान से मालदेव बाहर ले गया। झाला अज्जा ने फिर युद्ध का नेतृत्व किया।
(मेवाड़ के शासकों की रक्षा करी झालाओं ने प्रतीक)
युद्ध में बाबर की जीत हो गयी।
घायल सांगा को बसवा (दौसा) लाया गया।

सांगा को युद्दरत / युद्ध उन्मुक्त देखकर कालपी (ईरच - जहर) (M.P.) में साथी सरदारों द्वारा जहर देकर मार दिया गया। (समाधि - माण्डलगढ़)

(इस युद्ध में मीराबाई के पति भोजराज (सांगा के ज्येष्ठ पुत्र), मीरा के पिता रतनसिंह राठौड़ काम आ गये थे। (वीरम देव के भाई)

सांगा को 'सैनिकों का भग्नावशेष' कहते हैं।

→ सांगा को 'अंतिम भारतीय हिन्दू सम्राट' के रूप में याद किया जाता है। (भारत के राजनीतिक, संगठित हिन्दू साम्राज्य का अंतिम दृश्य भी पूर्ण हो गया)

(xiv) राणा रतन सिंह [1528 - 1531] A.D.

✓ बुंदी के सूरजमल हाड़ा के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।

(xv) राणा विक्रमादित्य [1531 - 1536] A.D.

- इनकी मां रानी कर्मावती इनकी संरक्षिका थी।
- इनके समय 1533 A.D. में गुजरात के राजा बहादुरशाह ने आक्रमण किया। फिर संधि में रणथम्भौर का किला मेवाड़ वालों ने बहादुरशाह को दे दिया।

✓ 1534 A.D. में फिर बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया इसके बाद रानी कर्मावती ने हुमायूं के पास राखी भेजकर सहायता की गुहार की।

इस समय मेवाड़ का दूसरा साका हुआ
देवलिया के 'बाघ सिंह' के नेतृत्व में केसरीया किया गया।
रानी कर्मावती ने जौहर किया।

* बाघ सिंह की 'रामपोल' के पास छतरी बनी हुयी है। इन्हे देवलियां दीवान के नाम से जाना जाता है।

• 'उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज' के दासी पुत्र बनवीर को मेवाड़ का शासन भार दिया गया। क्यों कि विक्रमादित्य छोटा था।

• बनवीर उदयसिंह को मारने के लिए गया पर पन्ना धाय ने अपने बेटे चन्दन की बलि देकर उदय सिंह को बचा लिया।

महाराणा उदयसिंह (जयंता बाई) (1537-1572):

• पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलगढ़ जाती है। कुम्भलगढ़ का किलेदार आशा देवपुरा इन्हें शरण देता है।

• अखेराज सौनगरा ने अपनी बेटी जयंता बाई की शादी उदयसिंह के साथ की।

• जोधपुर के राजा मालदेव के समर्थन से बनवीर को हराकर उदयसिंह महाराणा बनता है।

* गिरी सुमेल 1545 : (शेरशाह v. उदयसिंह)

• इसमें शेरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। इसमें उदयसिंह संधि कर लेता है।

* 1557 A.D. धरमाड़ा का युद्ध :

• अजमेर के सुबेदार हाजी खाँ पठान v. उदयसिंह के बीच।

मालदेव ~~के सुबेदार~~ ने समर्थन किया (जोधपुर का शासक था)

• उदयसिंह इस युद्ध में हार जाता है।

1559 A.D. में उदयसिंह 'उदयपुर' की स्थापना करता है। इसी समय उदयसागर झील का निर्माण करता है।

(नीमराणे 1302-1303, 1534, 1567-68)

1567-68 A.D. में अकबर का चित्तौड़ पर आक्रमण

• उदयसिंह चित्तौड़ के किले की चाबी 'जयमल' को सौंपकर स्वंय 'गिरवा की पहाड़ियों' में चला गया। मेड़ता का राजा

- अबुल फजल इसे – 'खमनौर का युद्ध कहता' है।
- कर्नल जेम्स टॉड – 'राजस्थान की थर्मोपिल्ली'
- आदर्शीलाल श्री वास्तव – 'बादशाह बाघ का युद्ध'
(हरावल)
- हाकिम खाँ सूर व पूँगा भीम भी महाराणा प्रताप की तरफ से लड़े थे।
- हल्दीघाटी के युद्ध के बाद जब महाराणा प्रताप की आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है तब भामाशाह व उसका भाई ताराचंद अपनी सारी सम्पत्ति महाराणा प्रताप को दे देता है।
- मिहत्तर खाँ नामक सैनिक ने उखड़ती मुगल सेना को पुनः प्रोत्साहित किया।
- शक्तिसिंह अकबर की तरफ से लड़ता है, लेकिन बाद में भावुकता से राणा प्रताप के साथ मिला जाता है।

कन्हैया लाल सेठ ने 'पायल व पीयल' नामक रचना लिखी है।
↓ प्रताप ↓ पृथ्वी राज राठौड़

- पृथ्वीराज राठौड़ की शादी – महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह की बेटी किरण कंवर से हुयी थी।
- हल्दीघाटी के युद्ध के बाद मुगल सेनापति शाहबाज खाँ कुम्भलगढ़ के किले को जीतने के चार असफल प्रयास करता है।
- 1580 A.D. में शेरपुर नामक स्थान पर अमरसिंह मुगल हरम की स्त्रियों को गिरफ्तार कर लेता है।

* 1582 A.D. दिवेर का युद्ध

- इसे 'मेवाड़ का मैराथन' कहते हैं। (कर्नल जेम्स टॉड)
- इस युद्ध में मुगल सेनापति 'सुरताण खान' मारा जाता है।
- महाराणा प्रताप के विरुद्ध अंतिम मुगल अभियान जगन्नाथ कच्छवाह ने किया था। (1585 A.D. में)
- जगन्नाथ कच्छवाह की '32 खम्भों की छतरी मांडलगढ़' में बनी हुयी है।
- महाराणा प्रताप ने चित्तौड़ व मांडलगढ़ को छोड़कर लगभग पूरे मेवाड़ को पुनः जीत लिया।
- अंतिम समय में प्रताप ने अपनी राजधानी चावण्ड (डूंगरपुर) बनायी।

  यहां से चित्रकला की मेवाड़ शैली प्रारम्भ होती है।

  यहां पर मंदिर बनवाया - चामुण्डा माता
- 19 JAN. 1597 A.D. चावण्ड में धनुष खींचते समय राणा प्रताप की मृत्यु हो गयी।
- राणा प्रताप की छतरी बाडोली में मिली है।

(i) "बिंधियो जा मिज भाण बस, गज माथै बण मोड़।
सुरग दुरग प्रवेस सत्य, निज तक फालक तोड़॥"

- * हल्दीघाटी के युद्ध के बाद अकबर खुद उदयपुर पर आक्रमण करता है। व इसका नाम 'मोहम्मदाबाद' कर देता है।

(ii) हल्दी घाट साख दे, चेतक झाला मान,
इण घाटी किसे सदा, माटी - माटी राण॥

[ऊंटाला का युद्ध:] यह हरावल का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए जैत्रसिंह चूण्डावत V. बल्लू शक्तावत

• 'दलबल धावो बोलियो, अब लग फाटक सेस।
सिर फेंक्यो भड़ काट निज, पहला दुरग प्रवेश॥'
(योद्धा)

अमरसिंह [1597 - 1620 A.D.]

• 5 FEB. 1615 A.D. मुगल V. मेवाड़ संधि [जहांगीर के काल में]

• मेवाड़ की तरफ से संधि का प्रस्ताव लेकर गए। –
  • हरिदास झाला
  • शुभकरण

• शर्तें – ✓ मुगल दरबार में युवराज कर्णसिंह जायेगा।
  ✓ कर्णसिंह को पांच हजार का मनसबदार बनाया गया।

• महाराणा अमरसिंह ने इस बात से दुःखी होकर शासन प्रबन्ध कर्ण सिंह को सौंप दिया। वह स्वंय 'नौ चौकी' नामक राजस्थान पर जाकर रहने लगा।

• अमरसिंह के समय में मेवाड़ चित्रकला शैली का विकास होता है।

• अमरसिंह की छतरी – आहड़ में

• अमरसिंह के बाद सभी मेवाड़ महाराणों की छतरियां आहड़ में बनायी जाने लगी।

कर्णसिंह [1620 - 1628 A.D.]

- उदयपुर में जगमंदिर महलों का निर्माण शुरु करवाया।
- शाहजहां विद्रोह के दौरान जगमंदिर में शरण लेता है।
- उदयपुर में महल बनाए : दिलखुश महल, कर्ण विलास महल

जगतसिंह प्रथम [1628 - 1652 A.D.]

1. जगमंदिर महलों का निर्माण पूरा करवाया।
2. उदयपुर में जगदीश (जगन्नाथ मंदिर) का निर्माण करवाया।
3. इस मंदिर पर जगन्नाथ राय प्रशस्ति लिखी हुयी है।
   ↓
   'कृष्णा भट्ट' ने की
4. 1631 A.D. में शाहजहां ने सुजानसिंह को मेवाड़ से अलग शाहपुरा (भीलवाड़ा) रियासत दे दी।

* जगदीश मंदिर के पास वाला धाय का मंदिर महाराणा की धाय नौजूबाई द्वारा बनवाया गया।

* महाराणा ने पिछोला में मोहनमंदिर और रूपसागर तालाब का निर्माण करवाया।

राजसिंह [1652 - 1680 A.D.]

- उत्तराधिकार संघर्ष में औरंगजेब का साथ देता है।
- 1679 A.D. में औरंगजेब द्वारा जजिया लगाने पर उसका विरोध करता है।
- जोधपुर का महाराजा, अजीतसिंह को औरंगजेब के खिलाफ समर्थन देता है। इसे राठौड़ - सिसोदिया गठबन्धन (राजसिंह - अजीतसिंह) कहते हैं।

" नजर न पूगी उण जगां, गी को पड़यो न भाव।
पावां सू पहली घणों, सिर पड़ियो गढ़ जाय॥

- क्षतिग्रस्त किले का पुनर्निर्माण करवाते समय अकबर की संग्राम नामक बंदूक की गोली से जयमल जख्मी हो गया।
- किले में अन्न - जल की समस्या उत्पन्न होने पर 'साका' करने का निश्चय किया गया।
- फतेहसिंह चूण्डावत की पत्नी 'फूलकँवर' के नेतृत्व में जौहर किया गया।
- फतेहसिंह एवं जयमल के नेतृत्व में केसरिया किया गया।
- जयमल जख्मी होने के कारण 'कल्ला राठौड़' के कंधे पर बैठकर लड़े थे।
- इसलिए कल्ला राठौड़ को चार हाथों के लोक देवता के रूप में पूजा जाता है।
- (M) फत्ता और चूण्डावत की छतरी 'रामपोल' के पास बनी हुयी है। जयमल और कल्ला की छतरी हनुमानपोल व भैरवपोल के बीच बनी है।
- अकबर इन दोनों की वीरता से प्रभावित होकर इन दोनों की गजारूढ़ मूर्तियां आगरा के किले पर लगवाता है।
- बीकानेर में जूनागढ़ किले के बाहर भी इनकी मूर्तियां लगी हुई है
- यह चित्तौड़ का **तीसरा साका था।**

" है गढ़ म्हारो हूं धणी, असुर फिरे किम आण।
कूच्यां ज्यूं चित्रकूट री, दीधि मोहि दीवाण॥ "

(लड़का) (लड़की) (माँ) (पत्नी) (अंग)
" नान्हा गीगा गीगली, जामण कामण गेह,
भड़ टाल्या निज हाथ सूं, करतब ऊंचो नेह॥ "
(कर्तव्य) (स्नेह)

- इस युद्ध के बाद उदयसिंह अपनी राजधानी **गोगुन्दा** बनाता है।
- गोगुन्दा में ही उदयपुर सिंह की छतरी बनी हुयी है।

* महाराणा प्रताप (1572 - 1597 A.D.)

- महाराणा प्रताप का राजतिलक गोगुन्दा में किया गया।
- सलूम्बर के रावत 'कृष्णदास चूण्डावत' जगमाल को हटाकर महाराणा प्रताप को राजगद्दी पर बैठा देता है। (राजमहलों की क्रांति)

- जन्म - 9 MAY 1540 A.D.

  माता - जयवंता बाई

  पत्नी - अजबदे कंवर

  बचपन का नाम - कीका (छोटा बच्चा)

  पुनाभिषेक - कुम्भलगढ़ के किले में।

  राजधानी - गोगुन्दा में।

– हल्दीघाटी का युद्ध : 18 JUNE 1576

महाराणा प्रताप V. अकबर

- इस युद्ध में शाही सेना का सेनापति मानसिंह था।
- यह मानसिंह का पहला स्वतंत्र अभियान था।
- हल्दीघाटी के युद्ध से पूर्व राणा प्रताप को समझाने के लिए भेजे गये दूतमंडल -
  - जलाल खां कोरची
  - मानसिंह
  - भगवन्त दास
  - टोडरमल
- युद्ध में राणा प्रताप के घोड़े चेतक के घायल होने पर राणा प्रताप युद्ध क्षेत्र से बाहर निकल जाता है। उसकी जगह झाला मान सिंह (बीदा) युद्ध का नेतृत्व करता है।
- चेतक की समाधि 'बलीचागांव' में बनी है।
- बदायूनी इस युद्ध को 'गोगुन्दा का युद्ध' कहता है।

• रूपनगढ़ (किशनगढ़) की राजकुमारी चारुमती से महाराणा राजसिंह ने औरंगजेब की इच्छा के विरुद्ध विवाह किया।

• इस विवाह से पूर्व हुए युद्ध में सलूम्बर का रावत रतनसिंह चूण्डावत युद्ध में जाने से मना कर देता है।

• अपनी पत्नी हाड़ी रानी सहलकँवर के समझाने पर युद्ध के लिए तैयार होता है। वह उससे कोई निशानी मांगता है।

• हाडी रानी सहलकँवर निशानी के तौर पर अपना सिर काट कर देती है।

" चूंडावत मांगी सैनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी "

" सत री सैनाणी चाही, समर सलूम्बर धीश।
चूड़ामण मैली सियां, उण धण मेल्यो सीस॥
(भेजी) (पत्नी)

• रूपनगर की राजकुमारी रूपमती (चंचल कुमारी) से भी राजसिंह औरंगजेब की इच्छा के विरुद्ध विवाह करता है।

• सिहाड़ (नाथद्वारा) में 'श्रीनाथ जी' की मूर्ति लगवाई।

• कांकरोली (राजसमंद) में द्वारिकाधीश की मूर्ति लगवाई।

• उदयपुर में - अम्बा माता का मंदिर

• राजसिंह ने राजसमंद झील का निर्माण करवाया। जहाँ पर अमरसिंह ने अपना अंतिम समय 'नौ चौकी' पर बिताया।

• इस झील का निर्माण अकाल राहत कार्यों के दौरान किया।

• इस झील के किनारे 25 बडे-2 शिलालेखों में राजप्रशस्ति लिखी है।
रचना - रणछोड़ भट्ट ने।

• राजसिंह की रानी *रामरस दे ने *त्रिमुखी बावड़ी का निर्माण करवाया।

• माता जानादे ने जानासागर तालाब का निर्माण करवाया। (उदयपुर में)

- उपाधि - 'विजयकट कातु' (सेना को जीतने वाला)
- राजसिंह को 'हाइड्रोलिक रूलर' कहते हैं।
- महाराणा कुम्भा के बाद मेवाड़ में सर्वाधिक सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने वाला राजा।

जयसिंह (1680 - 1698 A.D.)

जयसिंह ने जयसमंद झील का निर्माण करवाया। (गोमती, झावरी, रूपारेल के पानी को रोककर) (इसे ढेबर झील भी कहते हैं।), इस झील मे दो टापू हैं-
- (1) बाबा का भागड़ा
- (2) प्यारी

अमरसिंह II (1698 - 1710 A.D.)

- 1710 A.D. में देबारी समझौता।
  - मेवाड़ राणा अमरसिंह II
  - आमेर के राजा सवाई जयसिंह
  - मारवाड़ राजा अजीतसिंह
- अजीतसिंह को मारवाड़ दिलाने में सहायता
- अमर सिंह की बेटी चन्द्रकुंवर की शादी सवाई जयसिंह के साथ इस शर्त पर की गयी कि चन्द्रकुंवर का बेटा ही आमेर (जयपुर) का अगला राजा बनेगा।

संग्रामसिंह - II (1710- 1734 A.D.)

- ① सबसे पहले मराठों का हस्तक्षेप इन्हीं के समय हुआ।
- ② मराठों ने यहां से कर वसूला था।
- ③ इसने उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी का निर्माण करवाया।
- ④ हुरड़ा सम्मेलन की रुपरेखा तैयार की।

जगतसिंह II (1734-51 A.D.) → [जगत विलास महल]

- 17 July 1734 A.D. में हुरड़ा सम्मेलन बुलाया गया।
- उद्देश्य - मराठों के खिलाफ सभी राजपूत रियासतों को एक करना।
- वर्षा ऋतु समाप्त होते ही 'रामपुरा' में मराठों के खिलाफ युद्ध किया जाएगा।
- जयपुर - सवाई जयसिंह

  जोधपुर - अभयसिंह

  कोटा - दुर्जनसाल

  बीकानेर - जोरावर सिंह

  करौली - गोपालसिंह

  किशनगढ़ - राजसिंह

  बूंदी - दलेल सिंह

  नागौर - बख्त सिंह

→ अध्यक्षता - जगतसिंह II ने की।

- सवाई जयसिंह को अध्यक्ष नहीं बनाया गया, इसी वजह से उनके नाराज होने पर हुरड़ा सम्मेलन असफल रहा।
- उदयपुर में जगतविलास महल बनाया।

- दरबारी नंदराज ने 'जगतविलास' नामक पुस्तक लिखी।
- मराठों ने इन्हीं के शासन में मेवाड़ में पहली बार प्रवेश कर इनसे 'कर' वसूल किया।

भीमसिंह [1778-1828 A.D.]

कृष्णा कुमारी विवाद :

- मेवाड़ महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णा कुमारी की सगाई मारवाड़ के राजा भीमसिंह के साथ हुई।
- संयोगवश शादी से पहले ही मारवाड़ राजा भीमसिंह की मृत्यु हो गयी। अतः कृष्णा कुमारी की सगाई जयपुर नरेश जगतसिंह के साथ कर दी गयी।
- मारवाड़ महाराजा मानसिंह ने इस बात पर आपत्ति जताई।
- 1807 A.D. गिंगोली का युद्ध (नागौर में पर्वतसर के पास)
  [जयपुर V. जोधपुर]
- बीकानेर महाराजा सूरतसिंह एवं टोंक नवाब अमीर खां पिंडारी जयपुर की तरफ थे।
- इस विवाद को समाप्त करने के लिए आसिन्द ठाकुर अजीत सिंह चूण्डावत व अमीर खां पिंडारी के कहने पर कृष्णा कुमारी को जहर देकर मार दिया गया।

- 1818 A.D. में भीमसिंह ने अंग्रेजो के साथ सहायक संधि कर ली।
  संधि में मेवाड़ की तरफ से अजीतसिंह चूडावत तथा अंग्रेजो की तरफ से मैटकॉफ था।
- मेवाड़ के पालिटिकल एजेंट - कर्नल जेम्स टॉड थे।

महाराणा स्वरूप सिंह (1842-1861 A.D.)

- इन्होंने मेवाड़ में स्वरूपशाही सिक्के चलाए।

* मेवाड़ में किसी को ईनाम देते समय '<u>चाँदोड़ी सिक्का</u>' दिया जाता था।

- ~~मेवाड़~~ 1857 A.D. में क्रांति के समय शासक रहे।
- इन्होंने '[illegible]' (18[illegible]) [illegible]।

सज्जन सिंह (1874-84 A.D.)

- <u>सज्जनगढ़</u> किले का निर्माण करवाया।
- इसे *<u>मेवाड़ का मुकुटमणि</u>* कहते हैं।
- वीर विनोद के लेखक श्यामलदास को '<u>कविराज</u>' की उपाधि दी।
- 2 जुलाई 1870 A.D. को *'<u>देशहितैषिणी सभा</u>' की स्थापना की।
  - यह एक समाज सुधार संस्था थी।
  - राजपूतों में विवाह में होने वाले खर्चे को सीमित करना।
  - बहुविवाह पर रोक लगाना
- कविराज श्यामलदास भी इसके सदस्य थे।
- 1880 A.D. में *<u>महाइन्द्रसा सभा</u> की स्थापना की।
  (यह एक <u>न्यायिक संस्था</u> थी।)

फतेह सिंह (1884 - 1921 A.D.)

- प्रसिद्ध **बिजौलिया आंदोलन** इन्हीं के समय शुरू हुआ।
- 1903 A.D. में जब ये <u>लॉर्ड कर्जन के दिल्ली दरबार</u> में भाग लेने जा रहे थे तब <u>केसरी सिंह बारहठ</u> ने इन्हें 13 <u>सोरठे</u> लिखकर

जिन्हें 'चेतावनी रा चूँगटिया' नाम से जानते हैं।

" घण घलिया घमसाण, राणा सदा रहियौ निडर।
देखतां फरमाण, हलचल किम फतमल हुवै॥"

' आजादी के समय यहाँ का महाराणा 'भूपालसिंह' था।
जिसे राजस्थान का 'महला महाराज प्रमुख' बन

"मगरो छोड़ हूं नहीं, भूँडण मत बिलमाय।
सैला टक्करा सेलसु, भाज्या वंस लजाय॥"

मारवाड़ के राठौडों का इतिहास

- राजस्थान में आने वाली अंतिम राजपूत जाति।
- राष्ट्रकूटों की एक शाखा कन्नौज आती है। कन्नौज पर गहडवालों का आधिकार होने से बदायूं चले गये।

  यहां से राव सीहा राजस्थान आता है।

* कई ऐतिहासिक स्रोतों में गहड़वाल एवं राठौड़ों दोनों को एक ही बताया गया है।

- कुल देवी – नागणेची
- ये चील पक्षी को पवित्र मानते हैं।
- राठौडों के विरूद्ध (उपाधि)
  1. रणबंका – (युद्ध क्षेत्र में बहादुरी प्रदर्शित करने वाला।)
  2. कमधज

राव सीहा :

- पालीवाल ब्राह्मणों की सहायता के लिए राव सीहा बदायूं से 1240 A.D. में खेड़ (बालोतरा) आता है। और इसे अपनी राजधानी बनाता है।
- राव सीहा को 'राजस्थान के राठौडों का आदिपुरुष' कहा जाता है।
- 1273 A.D में गायों की रक्षा करते हुये राव सीहा पाली के बीठू गांव में मारा जाता है।
- बीठू गांव में राव सीहा का स्मारक बना हुआ है।

  जिसमें उसकी रानी पार्वती सोलंकी के सती होने का उल्लेख है।

2. राव आस्थान :

- जलालुदीन खिलजी के खिलाफ युद्ध करते हुए मारा जाता है।

राव धूहड़ :

- यह कर्नाटक से कुल देवी 'नागणेची' की मूर्ति लेकर आता है। इसे बाड़मेर गांव के नागाणा गांव में स्थापित किया गया है।
- इनके छोटे भाई का नाम 'धांधल' था।
  ↓
  ये लोकदेवता* पाबू जी के पिता थे।

रावल मल्लीनाथ :

- राज. के प्रसिद्ध लोकदेवता
- इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी।
- मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं।
- पत्नी - 'रूपा दे'
- बेटा - 'जगमाल' (जो गुजरात के शासक महमूद बेगड़ा की बेटी गींदोली को उठा लाता है। यह गणगौर विसर्जन का दिन था। इसीलिए आज भी राज. में गणगौर पर गींदोली गायी जाती है।
- भाई - 'वीरम' (मल्लीनाथ ने जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

चूण्डा :

- 'इन्दा' (प्रतिहार शासक) ने चूण्डा को दहेज के रूप में मण्डोर दिया।
- चूण्डा ने अपनी बेटी हसांबाई की शादी मेवाड़ के राजा लाखा के साथ की।
- अपनी मोहिल रानी के प्रभाव में आकर अपने बड़े बेटे रणमल को राजा न बनाकर कान्हा को राजा बना देता है।
- रानी – चांद कंवर सोनगरा
  ↓
  इसने 'चांद बावड़ी' का निर्माण करवाया।

रणमल :

- हसांबाई का भाई जो मेवाड़ चला जाता है।
- मोकल व कुम्भा का संरक्षक बनता है।
- इसकी प्रेमिका 'भारमली' की सहायता से जहर देकर मेवाड़ में हत्या कर दी गयी।

जोधा (1438-1489 A.D.) :

- जोधा और कुंभा के बीच आवल- बावल की संधि हुई।
- जोधा ने अपनी बेटी श्रृंगार कंवर की शादी कुम्भा के बेटे रायमल से कर दी।
- 1459 A.D. - जोधपुर शहर की स्थापना करता है।
- चिड़िया टूंक पहाड़ी पर मेहरानगढ किला बनवाता है।

• मेहरानगढ़ किले की नींव 'करणीमाता' ने रखी थी।

• करणीमाता जोधा की धर्म बहिन थी।

• जोधा ने मेहरानगढ़ किले में 'चामुण्डा माता' और 'नागणेची' के मंदिर बनवाए।

• जोधा के 5वें पुत्र बीका ने बीकानेर की स्थापना की।

राव सूजा (1492 - 1512 A.D.):

• बीकानेर के राव बीका ने जोधपुर पर आक्रमण कर दिया।

• राजमाता 'जसमादे हाड़ी' की मध्यस्थता से संधि हुयी व बीका को कुछ राज चिन्ह दिए गए।

राव गांगा:

• 'खानवा के युद्ध' में अपने बेटे मालदेव के साथ 4000 सैनिक भेजकर राणा सांगा की मदद करता है।

• अफीम के नशे में मालदेव ने राव गांगा की हत्या कर दी। इसीलिए मालदेव को 'मारवाड़ का पितृ हंता शासक' कहते हैं।

मालदेव (1532- 1564 A.D.)

- मारवाड़ का सबसे शक्तिशाली राजा।
- फारसी इतिहासकारों ने इसे 'हशमत वाला बादशाह' कहा है।
- जिस समय मालदेव का राजतिलक हुआ तब उसके पास जोधपुर व पाली (सोजत) दो ही परगने थे।

* कालांतर में मालदेव ने अपनी साम्राज्यवादी नीति के तहत 52 युद्धों के द्वारा 58 परगने जीते थे।

* पाहेबा का युद्ध (1541)

- जोधपुर राजा मालदेव V. बीकानेर राजा जैतसी
- मालदेव इस युद्ध को जीतता है व जैतसी लड़ते हुए मारा जाता है।
- मालदेव बीकानेर का शासन प्रबन्ध 'कूंपा' को सम्भला देता है। व कूंपा को डीडवाना की जागीर देता है।
- जैतसी का बेटा कल्याणमल शेरशाह सूरी के पास चला जाता है। मालदेव ने वीरमदेव से मेड़ता छीन लिया।
- वीरमदेव भी रणथम्भौर के सूबेदार की सहायता से शेरशाह सूरी से जाकर मिल जाता है।
- वीरा सिंधल को हराकर भाद्रा जूण छिन लेता है।
- नागौर के दौलत खां को हराता है।

* गिरी सुमेल का युद्ध (1544)

- इसे जैतारण का युद्ध भी कहते हैं।
- मालदेव V. शेरशाह सूरी
- अविश्वास की वजह से मालदेव पीछे हट जाता है।

- मालदेव की सेना के दो सेनानायक जैता व कूंपा शेरशाह के खिलाफ लड़ाई करते हैं।
- शेरशाह मुश्किल से इस युद्ध को जीत पाता है।

अतः शेरशाह के मुंह से बरबस ही निकल गया —

"बोल्यो सूरी राज यूँ, गिरि घाट घमसाण।
मुट्ठी खातर बाजरी, खो देतो हिन्दवाण॥"

- शेरशाह आगे बढ़कर जोधपुर पर अधिकार कर लेता है।
- मालदेव सिवाड़ा (बाड़मेर) में भाग जाता है।
- सिवाड़ा को 'राठौड़ों की शरणस्थली' कहते हैं।
- कल्याणमल व वीरमदेव को बीकानेर व मेड़ता के राज्य पुनः मिल जाते हैं।

[ ] सामेल युद्ध से पूर्व एक टुकड़ी बीकानेर भेजी जाती है। जिसका नेतृत्व किशन सिंह कान्हड़ कर रहा था। कूंपा इसके सामने आत्मसमर्पण कर जोधपुर आ जाता है।

- 1557 A.D में मालदेव 'हरमाड़ा के युद्ध' में उदयसिंह के खिलाफ हाजी खां पठान की सहायता देता है।
- शेरशाह से हारने के बाद हुमायूं जब फलौदी (जोधपुर) में था, तब उसने मालदेव के पास अपने दूत भेजे —

  - रायमल सोनी
  - अतका खा
  - मीर समेद

- मालदेव ने भी सकारात्मक उत्तर दिया व हुमायुं को बीकानेर परगना

देने का वादा किया।

- हुमायुं अविश्वास की वजह से जोधपुर न आकर सिंध की तरफ चला गया।
- इनकी रानी का नाम - 'उमा दे'
- ये जैसलमेर के लूणकरण की बेटी थी। ये इतिहास में 'रूठी रानी' के नाम से जानी जाती है।
- इन्होंनें अपना कुछ समय तारागढ़ किला (अजमेर) व अंतिम समय मेवाड़ के केलवा गांव में बिताया।

"मान रखे तो पीव तज, पीव रखे तज मान।
दो - दो गयंद (हाथी) न बंधहूं, एकै खम्भ ठाण (स्थान)।।"

[बाघा भारमली की प्रेम कहानी]

- 'अबुल फजल' अकबरनामा में मालदेव की तारीफ करता है।
- **बदायूंनी** - 'भारत का महान पुरूषार्थी राजकुमार' बताता है।

चन्द्रसेन :

- मालदेव ने अपने बडे बेटे को राजा न बनाकर अपने छोटे बडे चन्द्रसेन को राजा बनाया।

राम	उदयसिंह	चन्द्रसेन	रायमल
↓	↓	↓	↓
गुंदोज	फलौदी	राजा बनाया	सिवाणा

• 1570 का अकबर का नागौर दरबार

1) जैसलमेर - हरराज
2) बीकानेर - कल्याणमल
3) चन्द्रसेन - का बड़ा भाई उदयसिंह
(जोधपुर)

• चन्द्रसेन भी इस नागौर दरबार में गया था।

• चन्द्रसेन स्थिति को अनुकूल न देखकर यहां से भाद्राजूण चला जाता है।

• अकबर भाद्राजूण पर आक्रमण कर देता है। चन्द्रसेन सिवाणा (बाड़मेर) चला जाता है।

भाद्राजूण ⟶ सिवाणा ⟶ पीपलूंद ⟶ कणूजा

• भटकते हुए राव चन्द्रसेन की पाली (सोजत) के पास सारण की पहाड़ियों में मृत्यु हो गयी। गांव - सिंचियाई

• यहीं पर चन्द्रसेन व उसके साथ सती हुयी पांच रानियों के स्मारक है।

• चन्द्रसेन को 'मारवाड़ का भूला-बीसरा शासक' कहते हैं।
चन्द्रसेन को 'मारवाड़ का प्रताप' कहते हैं।
इसे 'प्रताप का अग्रगामी' कहते हैं।

• महाराणा प्रताप की राजतिलक में चन्द्रसेन भी उपस्थित था।

• अकबर ने 1572 A.D. में बीकानेर के रायसिंह को जोधपुर का प्रशासक नियुक्त कर दिया।

मोटा राजा उदयसिंह :

- अपनी बेटी 'मानी बाई' की शादी जहांगीर के साथ कर दी गयी।
- इसे इतिहास में 'जोधाबाई' कहा जाता है।
- इसे 'जगत गोसाई' भी कहते है।
- मानी बाई का बेटा 'खुर्रम' (शाहजहां) था।
- इस प्रकार मोटा राजा उदयसिंह जोधपुर का पहला राजा, जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार कर ली। और उनसे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किए।

कल्ला रायमलोत :

- यह मोटा राजा उदयसिंह के छोटे भाई रायमल का बेटा था।
- इन्होंने सिवाणा का दूसरा साका किया।
- कल्ला रायमलोत ने अपनी मृत्यु से पहले ही 'पृथ्वीराज राठौड़' (बीकानेर) से अपने 'मरासिये' लिखवा लिए।
- * मरासिये : किसी वीर के युद्ध में वीरता पूर्वक लड़ते हुए मारे जाने पर कवि द्वारा उसकी वीरता पर लिखे जाने वाले दोहे।

"काटियाँ पहला कोड सूं, गाथ सुणी निज आय।
जिण बिधि कवि जतावियो, उण ~~विधि~~ बिच कटियो जाय॥"

गजसिंह (1615- 1638 A.D.) :

- मानारा बेगम के कहने पर गजसिंह ने अपने छोटे पुत्र जसवंत सिंह को राजा बना दिया।

- अमरसिंह को नागौर का परगना दे दिया।
- अमरसिंह शाहजहां के दरबार में उसके मीर बख्शी (सेनापति) सलावत खां की हत्या कर देता है।

'अमर की कमर में कहां की थी करारी।
पाव सेर लोहे से हिलायी सारी पातशाही,
होती शमसैरी तो थिनाथ लेतो आगरी।।'

- अमरसिंह राठौड़ को 'कटार का धणी' कहते हैं।
- अमरसिंह का साला 'अर्जुनसिंह गौड़' धोखे से इसकी हत्या कर देता है।
- 'बल्लू चम्पावत' आगरा के किले से अमरसिंह की लाश लाता है।
- अमरसिंह राठौड़ के घोड़े का नाम बादल था।
- अमरसिंह की 16 खम्भों की छतरी 'नागौर' के किले में बनी है।
- आज भी राज. के 'ख्याल व रम्मतों' में अमरसिंह को याद किया जाता है।

* मतीरे की राड़ (लड़ाई):

बीकानेर राजा कर्णसिंह v. नागौर का अमरसिंह

* जसवंत सिंह (1638-1678 A.D.)

- शाहजहाँ के पुत्रों के उत्तराधिकार संघर्ष में इन्होने दारा का पक्ष लिया।
- शाहजहाँ ने जसवंत सिंह को 'महाराजा' की उपाधि दी।
- धरमत का युद्ध : दारा V. औरंगजेब
  - इस युद्ध में दारा की सेना का सेनापति जसवंत सिंह था।
  - दूसरे सेनापति कासिम खाँ से अनबन होने पर जसवंत युद्ध के बीच में जोधपुर वापस आ जाता है।
  - धरमत के युद्ध मे हारकर वापस आने पर जसवंत सिंह की रानी जसवंत दे हाड़ी ने किले के दरवाजे बंद कर दिये।
  - बची हुयी राजपूत सेना का नेतृत्व रतलाम का राजा रत्नसिंह राठौड़ करता है, और युद्ध में लड़ता हुआ मारा जाता है।

*• रत्नसिंह राठौड़ की वीरता पर 'जग्गा खिड़िया' ने एक पुस्तक लिखी - 'वचनिका राठौड़ रत्नसिंह महेसदासोत री'।

- 'खजुआ का युद्ध' इसमें जसवंतसिंह, औरंगजेब की तरफ से लड़ता है।
- औरंगजेब ने जसवंत सिंह राठौड़ को अफगानिस्तान भेज दिया।
  (काबुल का गर्वनर बनाकर)
- वहीं पर 'जमरूद्र' का थाना नामक स्थान पर 1678 A.D. में जसवंत सिंह की मृत्यु हो जाती है।
- औरंगजेब ने इसकी मृत्यु पर कहा -
  'आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया।'
  (धर्म का विरोध करने वाला).

- जसवंत सिंह की मृत्यु के 1 साल बाद ही औरंगजेब 165 A.D. में 'जजिया कर' लगाता है।
- जसवंत सिंह के बेटे पृथ्वीसिंह ने शेर के साथ लड़ाई की।
औरंगजेब ने इसे विषैली पोशाक देकर मरवा दिया।
- पुस्तकें –
  1) अपरोक्ष सिद्धान्त सार
  2) प्रबोध चन्द्रोदय
  3) आनन्द विलास
  4) भाषा भूषण
- इन्होंने औरंगाबाद के पास 'जसवंतपुरा' नामक कस्बा बसाया।
- इसकी रानी जसवंत दे हाड़ी ने जोधपुर में राई का बाग लगवाया।
- जसवंत दे ने कल्याणसागर (रातानाड़ा) तालाब बनवाया।
- जसवंतसिंह ने जोधपुर में 'कागा उद्यान' बनाया।
- इसके दरबार में दरबारी था – 'दलपत मिश्र'
  जिन्होंने पुस्तक लिखी – 'जसवंत विलास'
- मुहणौत नैणसी – 1) 'नैणसी री ख्यात' (पुस्तक)
  - इसमें जोधपुर के राजाओं की वंशावली लिखी गयी है।
  - राज. में पहली बार जनगणना का उल्लेख।
  - पहली बार क्रमबद्ध इतिहास लेखन।

  2) 'मारवाड़ रा परगना री ख्यात'
  - इसे 'मारवाड़ का गजेटियर' कहते हैं।

- जब जसवंतसिंह की मृत्यु हुयी तब उनकी दोनों रानियाँ गर्भवती थी।
- औरंगजेब ने आगरा में इन्हें रूपसिंह राठौड़ की हवेली में नजर बंद कर दिया।
- कालान्तर में इनसे अजीतसिंह व दलथम्बन नामक पुत्र होते हैं।

अजीत सिंह (1679-1724 A.D.)

- औरंगजेब ने 36 लाख रुपये के बदले अमरसिंह के पोते इन्द्रसिंह को राजा बना दिया।
- दुर्गादास राठौड़ दोनों रानियों व राजकुमारों को लेकर वहां से निकल जाता है।
- अजीतसिंह को बचाने के लिए एक गौरा नाम महिला ने अपने पुत्र की बलि दे दी।

'गौरा' को 'मारवाड़ की पन्नाधाय' कहते हैं।

- मारवाड़ के इतिहास 'धूंसों' में गौरा का नाम लिया जाता है।
- गौरा की छतरी जोधपुर में बनी है।
- सिरोही जिले के कालिन्द्री गांव में जयदेव पुरोहित के घर में मुकुन्ददास खिंची की देखरेख में रखा जाता है।
- मेवाड़ महाराणा राजसिंह, अजीतसिंह व दुर्गादास को समर्थन देता है।

- अजीतसिंह को मेवाड़ में 'केलवा गांव' की जागीर दी गई।
- दुर्गादास औरंगजेब के बेटे अकबर से विद्रोह करवा देता है।
- औरंगजेब ने दुर्गादास व अकबर में फूट डलवा दी।

- अकबर के बेटा - बुलन्द अख्तर
  बेटी - सफीयतुन्निसा, दोनों दुर्गादास के

पास रह जाते हैं, दुर्गादास इन्हें 'जूना बाड़मेर' नामक गांव में 'जगन्नाथ रामचंद्रोत' के पास रखता है।

- दुर्गादास इनकी धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध करता है। तथा कालान्तर में औरंगजेब को सौंप देता है।

- 1707 A.D. में औरंगजेब की मृत्यु तक अजीतसिंह को जोधपुर नहीं दिया जाता है।
- ~~अजीतसिंह~~ औरंगजेब की मृत्यु के बाद 'बहादुरशाह' अजीतसिंह को जोधपुर का बादशाह बना देता है।
- अजीतसिंह मुगल बादशाह फर्रुखसियर से अपनी बेटी इन्द्रकंवर की शादी करता है।

यह अंतिम राजकुमारी (राजपूत) थी, जिसकी किसी मुगल बादशाह से शादी हुई।

- 23 June 1724 को अजीतसिंह के बेटे 'बख्तसिंह' ने अजीतसिंह की हत्या कर दी।

- अजीतसिंह की मृत्यु पर उनकी चिता में जानवरों ने स्वेच्छा से अपनी जान दे दी।

- अजीतसिंह द्वारा लिखी पुस्तकें –
  - *1) गुणसागर
  - *2) दुर्गापाठ भाषा
  - 3) निर्वाण रा दूहा

देबारी समझौता – राजकुमार अजीतसिंह, कच्छवाहा राजा सवाई जयसिंह व मेवाड़ महाराणा अमरसिंह II के मध्य, देबारी नामक स्थान पर हुआ, जिसके अनुसार अजीतसिंह को मारवाड़ में, सवाई जयसिंह को आमेर में पदस्थापित करने तथा अमरसिंह II की पुत्री का विवाह सवाई जयसिंह से करने व इस विवाह से उत्पन्न पुत्र को सवाई जयसिंह का उत्तराधिकार घोषित करने पर सहमति हुई।

दुर्गादास राठौड़ :

- पिता का नाम – आसकरण
  जन्म स्थान – सालवा
  जागीर दी गई – लुणेवा गांव की।
- अजीतसिंह ने शासक बनने के बाद दुर्गादास को देश निकाला दे दिया था।
- दुर्गादास यहाँ से मेवाड़ महाराणा 'अमरसिंह–II' के यहाँ चला गया
- अमरसिंह ने इसे 'रामपुरा' व 'विजयपुर' की जागीरें दी।
- यहाँ से दुर्गादास उज्जैन चला जाता है।
- उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे दुर्गादास की छतरी बनी हुयी है।
- दुर्गादास को 'मारवाड़ का अणबिंधिया मोती' कहते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड इसे 'राठौड़ों का यूलीसेज (उद्धारक)' कहते हैं।

" मायड़ ऐसो पूत जण, जैहड़ो दुर्गादास,
बांध मडांसो थामियो, बिन थम्बा आकास ॥ "

* अभयसिंह (1724- 1749 A.D.) :

- खेजड़ली की घटना : विक्रमी संवत 1787 (1730 A.D.) को भाद्रपद शुक्ल दशमी को खेजड़ली नामक गांव में अमृता देवी नामक विश्नोई महिला अपने पति रामोजी व अपनी तीन बेटियों के साथ वृक्षों को बचाने के लिए शहीद हो गयी।
- इसमें कुल 363 लोगों ने अपना बलिदान दिया था। इसलिए आज भी भाद्रपद शुक्ल दशमी को हम शहीद दिवस के रूप में मानते हैं।

✓ इसी दिन विश्व का एकमात्र वृक्ष मेला लगता है।

- अमृता देवी के नाम पर सामाजिक वानिकी के क्षेत्र के लिए पुरस्कार दिया जाता है। (वन्य व वन्य जीव)
- 2012 A.D. का अमृता देवी पुरस्कार :
  - * जालौर की हातिमताई संस्था
  - * रेखाराम चौधरी व प्रभुदयाल गुर्जर को दिया गया।
- वृक्ष काटने का आदेश 'गिरधारीदास कामदार' ने दिया।
- इसके दरबार में दो कवि थे –

  (1) करणीदान – सूरज प्रकाश

  (2) वीरभाण – राजरूपक

- इन दोनों पुस्तकों में अभयसिंह व अहमदाबाद के सूबेदार 'सर बुलंद खान' के बीच युद्ध का वर्णन है।

मानसिंह (1803 - 1843 A.D.)

- जालौर घेरे के समय 'देवनाथ' द्वारा मानसिंह के राजा बनने की भविष्यवाणी की।
- मानसिंह ने राजा बनते ही देवनाथ को अपना गुरु बनाया।
- नाथों के सबसे बड़े मंदिर 'महामंदिर' का निर्माण करवाया।
- 'नाथचरित्र' नामक पुस्तक लिखी।
- 1805 A.D. में जोधपुर के किले में एक पुस्तकालय बनवाते हैं, जिसे 'मानपुस्तक प्रकाश' कहते हैं।
- 1807 A.D. में 'गिंगोली का युद्ध' होता है।
- 1818 A.D. में अंग्रेजों से संधि कर लेता है।
- इसके दरबार में कवि बांकीदास था।
- मानसिंह ने इन्हें 'कविराज' की उपाधि दी।

पुस्तक ; *1) बांकीदास री ख्यात

*2) कुकवि बत्तीसी

*3) दातार बावनी

*4) मान जसो मंडन

- बांकीदास ने अंग्रेजों का साथ देने वाले राजाओं की निन्दा की।

* विजयनगर सिंह की प्रेमिका गुलाबराय को 'जोधपुर की नूरजहां' कहते हैं।

बीकानेर के राठौडों का इतिहास :

- जोधपुर के राजा राव जोधा के ताने पर जोधा का बेटा बीका अपने काका कांदल व अपने छोटे भाई बीदा के साथ जोधपुर से निकल गया।

- बीकानेर में गोदारा (पांडू)
  सारण (पूला), की आपसी लड़ाई का बीका ने फायदा उठाया व पांडू गोदारा का पक्ष लेकर बीकानेर क्षेत्र को जीत लिया।

- इसके बाद से बीकानेर के राजा का राजतिलक गोदारा जाट करते थे।

- बीका ने पहले अपनी राजधानी 'कोड़म देसर' को बनाना चाहा, पर पूगल के भाटियों के विरोध करने पर बीका ने बीकानेर को अपनी राजधानी बनाई।

- करणी माता के आशीर्वाद से बीका ने एक स्वतंत्र राठौड़ राज्य की स्थापना की।

- विक्रमी संवत् 1545 (1488 A.D. में) को बैशाख शुक्ल पक्ष की द्वितीया को बीकानेर की स्थापना की गयी।

- इसीलिए बीकानेर में आखातीज का त्यौहार बडी धूम-धाम से बनाया जाता है।

"पन्द्रह सौ पैंतालीस, सुद बैशाख सुमेर,
थावर बीज थरपियो, बीको बीकानेर।"
(शनिवार) (प्र)

- बीका ने कोड़म देसर में एक भैरु जी का मंदिर बनवाया।
- बीकानेर से पहले इस स्थान को 'रातीघाटी' कहते थे।
- बीका का निवास स्थान 'बीकाजी की टेकरी' कहा जाता है।
- बीकाजी की माता - नौरंगं दे सांखला
  " पत्नी - रंग दे भाटी
  ↓
  (पूगल के राव शेखा भाटी की पुत्री थी।)
- बीका का काका हिसार के सारंग खां के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।
- साहवा (चुरु) में कांधल का स्मारक बना हुआ है।

(साहबा सिखों का भी पवित्र स्थल है)
(चुरु)

1 July.

* लूणकरण (1505-26) A.D.
- जैसलमेर के रावल जैतसी को हराया।
- इसे 'कलयुग का कर्ण' कहते हैं।

जैतसी (1526-41) A.D.
- 1527 A.D. में खानवा के युद्ध में अपने बेटे 'कल्याणमल' को भेजकर सांगा की सहायता करता है।
- 1534 A.D. में हुमायुं का भाई कामरान भटनेर (वर्तमान हनुमानगढ़) पर अधिकार कर लेता है। कामरान बीकानेर पर भी आक्रमण करता है, पर रावल जैतसी उसे हरा देता है। इस युद्ध की जानकारी हमें 'बीठू सुजा' की पुस्तक 'राव जैतसी री छन्द' से मिलती है।

* कामरान के भटनेर पर आक्रमण के समय वहां का किलेदार ~~खींव~~ खेत सिंह कांधल था।

- 1541 - पाहेबा का युद्ध
  राव जैतसी और मालदेव।
  राव जैतसी लड़ता हुआ मारा जाता है।

[* रातीघाटी का युद्ध ; कामरान v. जैतसी (बीकानेर में)]

कल्याणमल (1541 - 1574 A.D.)
- 1544 A.D. में गिरी - सामेल का युद्ध
- कल्याणमल का छोटा भाई भीम की शेरशाह सूरी को आक्रमण के लिए प्रोत्साहित करने में मुख्य भूमिका थी।
- भीम को 'गई भोम री बाहड़' कहते हैं। (चली गयी धरती को वापस लाना)
- कल्याणमल बीकानेर का पहला राजा था, जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की। यह 1570 A.D. के अकबर के नागौर दरबार में

भाग लेता है एवं मुगलों से वैवाहिक सम्बन्ध कायम करता है।

(रायसिंह ने कठौली की लड़ाई (गुजरात में मिर्जाओं के विरुद्ध), देवड़ा सूरताण का दमन तथा जोधपुर के राव चन्द्रसेन पर आक्रमण कर सिवाणा गढ़ जीत लिया)

रायसिंह (1574 - 1612 A.D.) - (अकबर के चार हजारी मनसबदार)
(जहांगीर के समय 5000)

- 1570 A.D. के अकबर के नागौर दरबार में अपने पिता कल्याणमल के साथ जाता है। अकबर यहीं से इसे अपने साथ आगरा ले जाता है।
- 1572 A.D. में अकबर इसे जोधपुर का प्रशासक नियुक्त करता है। और 'महाराजा' की उपाधि देता है।
- मुगलों की तरफ से गुजरात काबुल व कंधार के अभियान करता है
- 1577 A.D. में अकबर ने इकावन (51) परगने रायसिंह को दिये।
- खुसरो के विद्रोह के समय ~~रायसि~~ जहांगीर रायसिंह को राजधानी आगरा की जिम्मेदारी सौंप के जाता है।
- 1589 - 1594 A.D. के बीच बीकानेर में जूनागढ़ किले का निर्माण करवाया। बीकानेर के जूनागढ़ में सूरजपोल के पास रायसिंह प्रशस्ति लिखी हुयी है, जिसकी रचना 'जइता' नामक जैन मुनि ने लिखी थी।
- जूनागढ़ का निर्माण कर्मचन्द की देखरेख में हुआ।
- मुंशी देवी प्रसाद ने रायसिंह को ~~कर्ण~~ 'राजपूताने का कर्ण' कहा।
- 1583 A.D. में सिरोही के राजा सुरताण देवड़ा को दत्ताणी के युद्ध में हराया। दत्ताणी के युद्ध में महाराणा प्रताप का भाई जगमाल भी मुगल सेना की तरफ से लड़ रहा था।
- रायसिंह ने 'रायसिंह महोत्सव' नामक पुस्तक लिखी।
- 'श्रीपति' की 'ज्योतिष रत्नमाला' पर 'बाल बोधिनी' नाम से रायसिंह

ने टीका लिखी।

• 'जयसोम' रायसिंह के दरबार में था जिसने - कर्मचन्द वंशोत्कीर्णकंकाव्यम् नामक पुस्तक लिखी।

• रायसिंह के छोटे भाई का नाम पृथ्वी राज राठौड़ था, जो अकबर के नवरत्नों में से एक है। अकबर ने इसे गागरोन (झालावाड़) का किला दिया था।

राठौड़ की प्रमुख रचनाएं -

~~बेलिकृष्ण रु~~ (1) बेलि क्रिसण रुक्मणि री : दुरसा अढ़ा ने इसे 5 वां वेद और 19 वां पुराण कहा है।

कर्नल जेम्स टॉड ने इस रचना को 'दस सहस्त्र घोड़ों का बल' बताया है।

(2) दशम भागवत रा दूहा

(3) गंगा लहरी

• L.P. टेस्सीटोरी ने पृथ्वी राज राठौड़ को 'डिंगल का हौरेस' कहा है।

कर्णसिंह (1631 - 69 A.D.)

• अटक अभियान के दौरान इन्हें 'जयजांगलधर बादशाह' की उपाधि प्रदान की गयी।

• इन्हीं के समय नागौर के अमर सिंह राठौड़ से 'मतीरे की राड़' नामक युद्ध हुआ।

• कर्णसिंह ने अन्य कुछ साहित्यकारों के साथ मिलकर 'साहित्य कल्पद्रुम' की रचना की।

• 'गंगाधर मैथिल' कर्णसिंह का एक दरबारी था, उसने निम्न पुस्तक लिखी – (1) कर्णभूषण
(2) काव्य डाकिनी

अनूपसिंह (1669- 1698 A.D.)

• औरंगजेब ने इनके दक्षिण अभियानों से खुश होकर 'माही मरातिब' की उपाधि दी।

• संस्कृत के दुर्लभ ग्रन्थों का 'अनूप पुस्तकालय' (बीकानेर) में संकलन किया।

• कुम्भा के संगीत ग्रन्थों का संकलन किया।

• हिन्दू देवी-देवताओं की विभिन्न मूर्तियों को एकत्रित कर उन्हें जूनागढ़ के 33 करोड़ देवी-देवताओं के मंदिर में रखवाया।

• विभिन्न साहित्यिक ग्रन्थों का राजस्थानी में अनुवाद करवाया।
↓
1. सुककारिका,
2. बेताल पचीसी

('सुककारिका' फारसी में अनुवादित संस्कृत की पहली पुस्तक थी)

3. गीता का राजस्थानी में अनुवाद आनन्दराम ने किया।

• अनूप सिंह की पुस्तकें –
1. अनूप विवेक
2. काम प्रबोध
3. श्राद्ध प्रयोग चिन्तामणि
4. अनूपोदय - गीत गोविन्द पर लिखी टीका

• 'भाव भट्ट' अनूप सिंह के दरबार में था, उसके द्वारा रचित

पुस्तक –

1. संगीत अनूप अंकुश
2. अनूप संगीत रत्नाकर
3. अनूप संगीत विलास

सूरत सिंह

- 1805 A.D. में भटनेर पर आक्रमण कर उस पर अधिकार कर लिया। चूंकि उस दिन मंगलवार था, इसीलिये भटनेर का नाम हनुमानगढ कर दिया।
- 1814 A.D. में चुरु पर आक्रमण करता है। तथा चुरु को अपने अधिकार में ले लाता है। इस समय चुरु का शासक ठाकुर स्योजी (शिव जी) सिंह था। इसी युद्ध के समय चुरु के किले से चांदी के गोले चलाये गये।
- 1818 A.D. में सूरतसिंह ने अंग्रेजो से सन्धि कर ली।

रतन सिंह

- 1836 A.D. में गया (बिहार) मे अपने सभी सरदारों से कन्यावध नहीं करने की शपथ दिलायी।
- बीकानेर में रत्नबिहारी मंदिर का निर्माण करवाया।
- दयाल दास सिंढायच (चारणों की गौत्र)
  (चारण कवि)

जिन्होनें एक ग्रन्थ लिखा है –

बीकानेर रा राठौडा री ख्यात — इसमें राव बीका से
(वंशावली)

लेकर महाराजा सरदार सिंह का वर्णन है।

सरदार सिंह

- राजस्थान का एकमात्र शासक जो अपनी रियासत से बाहर जाकर 1857 की क्रान्ति में, अंग्रेजों की सहायता की। सरदार सिंह हिसार के पास जाकर 'बाड्लू' नामक स्थान पर जाकर युद्ध किया।
- अंग्रेजों ने खुश होकर रिण्बी परगने के 41 गांव दिए।

महाराजा गंगा सिंह [1887 - 1943 A.D.]

- 1899 A.D. में चीन के बॉक्सर विद्रोह में अंग्रेजो की मदद की। इसलिए अंग्रेजो ने 'केसर ए हिन्द' पदक दिया।
- पेरिस शांति सम्मेलन (I world war के बाद) में महाराजा गंगा सिंह ने भाग लिया (एकमात्र राजा जो रियासतों की तरफ से गया था)
- तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लेने वाला राज० का एकमात्र राजा।
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण में सर्वाधिक आर्थिक सहायता महाराजा गंगा सिंह ने दी थी। इसलिए B.H.U. के आजीवन कुलपति रहे।
- 1927 A.D. में अपनी रियासत में गंग नहर का निर्माण करवाया। गंग नहर का ~~निर्माण~~ उद्घाटन लॉर्ड इरविन ने ~~किसान~~ किया।
- पंजाब में गंग नहर को बीकानेर नहर के नाम से जानते हैं। इसीलिए गंगा सिंह को 'राज० का भागीरथ' कहते हैं।

- महाराजा गंगा सिंह लॉर्ड माउण्टबेटन के सहपाठी थे।
- महाराजा गंगा सिंह की ऊंटों की सेना को 'गंगा रिसाला' कहते थे। 13 ग्रेनेडियर
- बीकानेर रियासत के रामदेवरा, गोगामेड़ी तथा देशनोक के मंदिरों को वर्तमान स्वरूप दिया।
- बीकानेर में जेल सुधार व न्याय सुधार किए।
- रेल व्यवस्था प्रारम्भ की।
- आजाद 1913 A.D. में 'प्रजा प्रतिनिधि सभा' की स्थापना की।
- 1921 A.D. में स्थापित नरेन्द्र मंडल के पहले अध्यक्ष थे।
- अपने पिता लाल सिंह के नाम पर बीकानेर में लालगढ़ पैलेस का निर्माण करवाया।

आजादी के समय बीकानेर का शासक सार्दुल सिंह था।
भारत में विलय की घोषणा करने वाला पहला रियासती शासक (सार्दूल सिंह) था।

किशनगढ़ के राठौड़

→ 1609 A.D. में जोधपुर के शासक महाराजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह ने किशनगढ़ की स्थापना की।

→ जहाँगीर ने यहाँ के शासक को महाराजा की उपाधि दी।

सावंतसिंह

- यहाँ के प्रसिद्ध राजा जो कृष्णभक्ति में राज-पाट छोड़कर वृंदावन चले गये।
- यह नागरीदास नाम से प्रसिद्ध हुए।

→ मराठों ने Tax नहीं लिया - Jaisalmer
Bikaner
Kishangarh

Extra page

Extra page

चौहानों का इतिहास

· चौहानों की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न मत :

[1]
- चन्द्रबरदाई
- सूर्य मल्ल मिश्रण
- मुहणोत

} के अनुसार चौहानों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ के अग्नि कुंड से हुयी।

* चौहान, चालुक्य (सोलंकी), प्रतिहार, और परमार, इन चारों जातियों की उत्पत्ति अग्नि कुंड से मानी जाती है।

[2]
- जेम्स टॉड
- विलियम क्रुक

} के अनुसार चौहान विदेशी हैं।

[3] <u>1170</u> A.D. के बिजौलिया (भीलवाड़ा) (शिलालेख) के अनुसार चौहानों की उत्पत्ति वत्स गौत्रीय ब्राह्मणों से हुयी।

* बिजौलिया शिलालेख, बिजौलिया के पार्श्वनाथ मंदिर में लगा हुआ है। यह किसी <u>गोविन्द</u> नामक व्यक्ति ने लगवाया था। इस पर अंकित बिजौलिया प्रशस्ति की रचना <u>गुणभद्र</u> ने की थी।
इस शिलालेख में बिजौलिया का नाम <u>उत्तमाद्रि</u> मिलता है।
राज० के अन्य विभिन्न नगरों के प्राचीन नाम भी इससे प्राप्त होते हैं।

चौहानों का मूल निवास स्थान :

- जांगल देश का सपादलक्ष क्षेत्र (सांभर के आस-पास का क्षेत्र)
  ↓
  (जोधपुर + बीकानेर + नागौर)
- इनकी राजधानी अहिच्छत्रपुर (नागौर) थी।

चौहानों की कुल देवी - 'आशापुरा माता'

अजमेर के चौहानों का इतिहास : / सपादलक्ष के चौहान

(1) वासुदेव :

- 551 A.D. में चौहान राज्य की स्थापना की।
- वासुदेव को चौहानों का आदिपुरुष कहते हैं।
- बिजौलिया शिलालेख के अनुसार इसने सांभर झील का निर्माण करवाया।

(2) गूवक :

- चौहान प्रारम्भ में प्रतिहारों के सामन्त थे, गूवक ने प्रतिहार शासक नागभट्ट II की अधीनता मानने को अस्वीकार कर दिया। तथा इस प्रकार गूवक ने एक पूर्ण स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- गूवक ने हर्षनाथ का मंदिर बनवाया।
  (सीकर जिले के रैवासा गांव में)
- हर्षनाथ चौहानों के कुल देवता माने जाते हैं।

(3) चन्दराज :

- पत्नी का नाम - रूद्राणी
  ↓
  यौगिक क्रिया में निपुण महिला
- रूद्राणी प्रतिदिन पुष्कर झील में 1000 दीप जलाकर भगवान शिव की पूजा करती थी।

(4) विग्रहराज II :

- इसने चालुक्य शासक अन्हिलपाटन के मूलराज I को हराया।

• मंडोर में अपनी कुलदेवी आशापुरा माता का मंदिर बनवाया।

(5) अजयराज

• 1113 A.D. में अजमेर नगर की स्थापना करता है। (पृथ्वीराज विजय के अनुसार)

• अजमेर का किला बनवाया

• 'श्री अजयदेव' नाम से चांदी के सिक्के चलाये।

(6) अर्णोराज

• अर्णोराज ने अजमेर में आनासागर झील का निर्माण करवाया।

• पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण करवाया।

• चालुक्य शासक कुमारपाल ने आबू के निकट युद्ध में इसे हराया। इस युद्ध का वर्णन 'प्रबन्ध चिन्तामणि' एवं 'प्रबन्ध कोष' में मिलता है।

(7) विग्रहराज IV (1153 - 1163 A.D.)

• इसके शासनकाल को सपादलक्ष के चौहानों का स्वर्ण काल कहते हैं।

• इन्होंने तोमरों से ढिल्लिका (दिल्ली) छीन ली।

• इसने अजमेर में 'सरस्वती कंठाभरण नामक' संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया। अपने नाटक हरिकेली की पंक्तियां इस पाठशाला की दीवारों पर खुदवायी। कालान्तर में कुतुबद्दीन ऐबक ने इस पाठशाला को तोड़कर एक मस्जिद बनवा दी, जिसे हम अढाई दिन का झोंपड़ा के नाम से जानते हैं।

• उपाधियां – बीसलदेव
  कवि बान्धव
  कटि बन्धु

• बीसलपुर नगर व बीसलपुर तालाब का निर्माण करवाया। तालाब के किनारे एक भगवान शिव का मंदिर बनवाया।

• दरबारी सोमदेव ने ललित विग्रह राज नामक पुस्तक लिखी।

• दरबारी नरपति नाल्ह ने 'बीसलदेब रासो' नामक पुस्तक लिखी।

पृथ्वीराज III [1177 - 1192 A.D.]

• पिता का नाम - सोमेश्वर
माता का नाम - कर्पूरी देवी (दिल्ली के शासक अनंगपाल तोमर की पुत्री)

• प्रारम्भ में माता कर्पूरी देवी उसकी संरक्षिका बनी, क्यों पृथ्वीराज III बाल्यावस्था में शासक बने थे।

• अपने चचेरे भाई नागार्जुन के विद्रोह का दमन करता है।

• मंडालको को हराता है।

* मंडालक सतलज प्रदेश की एक जाति थी, जो कालान्तर में हिसार व गुड़गांव क्षेत्र में आ गयी थी।

• 1182 A.D. में तुमुल के युद्ध में महोबा (M.P.) के चन्देल शासक परमारर्दिदेव को हराता है।

इस युद्ध में परमारर्दिदेव चन्देल के दो सेनानायक आल्हा व ऊदल लड़ते हुए मारे गये थे, जो आज भी वहां के लोकगीतों में गाये जाते हैं।

• 1187 A.D. में चालुक्य शासक भीम II पर आक्रमण करता है। पर दोनों के बीच संधि हो जाती है।

* चौहान - गहड़वाल वैमनस्य :

• कन्नौज का शासक जयचन्द गहड़वाल व पृथ्वीराज चौहान मौसेरे भाई थे। दिल्ली के उत्तराधिकार के प्रश्न तथा संयोगिता के अपहरण के कारण दोनों में मनमुटाव था।

I BATTLE OF TARAIN : (1191 A.D.)

पृथ्वीराज चौहान V. मोहम्मद गौरी

- तात्कालिक कारण : मोहम्मद गौरी द्वारा तबरहिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार
- इसमें पृथ्वीराज का सेनापति चामुण्डराय था।
- इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान जीतता है।
- दिल्ली के गर्वनर 'गोविन्द राज तोमर' के एक वार से मोहम्मद गौरी घायल हो जाता है।

II BATTLE OF TARAIN : (1192 A.D.)

↓

- इस युद्ध में सेनापति चामुण्डराय भाग नहीं लेता है।
- पृथ्वीराज इस युद्ध में हार जाता है। सिरसा (हरियाणा) के पास बंदी बनाकर मार दिया जाता है।

- पृथ्वीराज चौहान ने दिल्ली के पास पिथौरागढ़ का निर्माण करवाया।
- उपाधि पृथ्वीराज की –① 'राय पिथौरा'
  –② दल पुंगल (विश्व विजेता)

- दरबारी (पृथ्वीराज के दरबार में) –
  - (i) चन्द्रबरदायी (वास्तविक नाम - पृथ्वी भट्ट)
    ↓
    'पृथ्वीराज रासो'
  - (ii) जयानक → 'पृथ्वीराज विजय'
  - (iii) विद्यापति गौड़
  - (iv) जनार्दन
  - (v) वागीश्वर

- पृथ्वीराज चौहान ने एक कला व संस्कृति मंत्रालय की स्थापना की।

तथा इसका मंत्री पद्मनाभ को बनाया।

- कैमास व भुवनमल्ल, इसके प्रमुख मंत्री थें।
- मोइनुद्दीन चिश्ती इसी के समय भारत आये थे।

* तराइन के दोनों युद्धों का विस्तृत विवरण कवि चन्द्र बरदाई के पृथ्वीराज रासो, हसन निजामी के ताजुल मासिर एवं सिराज के 'तबकात-ए-नासिरी' में मिलता है।

रणथम्भौर के चौहानों का इतिहास :

- पृथ्वीराज चौहान के बेटे गोविन्दराज ने रणथम्भौर में चौहान राज्य की स्थापना की।

वीर नारायण :

- इसने दिल्ली के सुल्तान इल्तुतमिश से युद्ध किया था।

वाग्भट्ट :

- इसके समय में बलबन ने रणथम्भौर पर 3 आक्रमण किए थे।

हम्मीर [1282 - 1301]

- इतिहास में हठी हम्मीर के नाम से प्रसिद्ध राजा
- रणथम्भौर का सबसे शक्तिशाली शासक
- हम्मीर ने भीमरस (U.P.) के राजा अर्जुन को हराया।
- धार के राजा भोज परमार को हराया।
- चित्तौड़ के समर सिंह को हराता है।
- हम्मीर ने कोटि यज्ञ का आयोजन करवाया। इस यज्ञ का पुरोहित विश्वरूपम् थे।
- जलालुद्दीन खिलजी के रणथम्भौर आक्रमण को हम्मीर विफल कर देता है। इस विफलता के बाद जलालुद्दीन खिलजी ने कहा था कि —
  - ऐसे 10 किलों को मुसलमानों के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता है।

- गुजरात आक्रमण के दौरान अलाउद्दीन की सेना में विद्रोह हो जाता है। विद्रोही मंगोल नेता मुहम्मद शाह हम्मीर के पास चला जाता है।
- (उलुग) उलुग खान व नुसरत खान (अलाउद्दीन के सेनापति) ने रणथम्भौर पर

आक्रमण कर दिया। नुसरत खान मारा गया। तब अलाउद्दीन एक बड़ी सेना लेकर खुद रणथम्भौर पर घेरा डालता है। 'रणमल' व 'रतिपाल' नामक दो विश्वासघातियों की वजह से हमीर को किले के फाटक खोलने पड़े, रणथम्भौर के किले में पहला साका हुआ।

- हम्मीर की पत्नी रंगदेवी के नेतृत्व में जौहर किया गया।
- हम्मीर के नेतृत्व में सभी सैनिकों ने केसरिया किया व लड़ते हुए मारे गये।
- 'अमीर खुसरो' ने अपनी पुस्तक 'खजाइन-उल-फुतूह' में इस घटना का जिक्र गया। जो फारसी भाषा में मिलने वाला जौहर का पहला वर्णन है।
- हम्मीर की पुत्री 'देवल दे' ने इस जौहर से एक दिन पूर्व रणथम्भौर किले के पद्म तालाब में कूदकर आत्महत्या कर ली थी। (जल जौहर)
- रणथम्भौर का साका 1301 A.D. में हुआ था।
  (पर उससे पहले जैसलमेर का साका 1299 A.D. में हो गया था)
- हम्मीर ने अपने जीवनकाल में 17 युद्ध लड़े थे जिनमें से 16 में वो विजयी रहा।
- अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्षीय शासनकाल की याद में रणथम्भौर के किले में '32 खम्भों की छतरी' बनवायी।
- 'बीजादित्य' नामक विद्वान हम्मीर के दरबार में रहता था।
- हम्मीर को उसके हठ व शरण देने वालों के रुप में याद किया जाता है।

"सिंह गमन, सत्पुरूष वचन, कदली फलै इक बार।
तिरिया तेल, हम्मीर हठ, चढ़ै न दूजी बार॥"

- हम्मीर की जानकारी प्राप्ति के स्त्रोत :

  (1) नयनचन्द्र सूरी - हम्मीर महाकाव्य

  (2) जोधराज]
  (3) सारंगधर] - हम्मीर रासो

(3) चन्द्रशेखर - हम्मीर हठ

(5) जयसिंह सूरि - हम्मीर मद मर्दन

* जालौर के चौहानों का इतिहास : (स्वतंत्रता से पहले जालौर, जोधपुर (मारवाड़) का पार्ट था)

- ऋषि जाबालि की तपोभूमि होने के कारण इसे जाबालिपुर कहते थे, जो कालान्तर में जालौर हो गया।
- जाल वृक्षों की अधिकता होने के कारण इसे जालौर कहा गया।
- जालौर का किला सोनगिरि (सुवर्णगिरी) नामक पहाड़ियों पर स्थित होने के कारण यहाँ के शासक सोनगरा चौहान कहलाए।

[Note - स्वर्णगिरी का किला / सोनार का किला - जैसलमेर]

- 1182 A.D. में कीर्तिपाल ने जालौर में चौहानों की सोनगरा शाखा की स्थापना की।
- 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' में कीर्तिपाल को 'कीतू एक महान राजा' बताया गया है।
- इसने चित्तौड़ के सामंत सिंह को हराकर चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।

कान्हड़ देव सोनगरा :

- गुजरात आक्रमण के समय अलाउदीन ने सोमनाथ मंदिर के शिवलिंग को तोड़ दिया था अतः वापस लौटती अलाउदीन के सेना पर कान्हड़ देव के सेनापति 'जैता देवड़ा' ने आक्रमण किया। और शिवलिंग के टुकड़ों को पांच अलग-अलग गांवो में स्थापित करवाया।
- अलाउदीन का सेनापति 'आइन-उल-मुलतानी' जालौर पर आक्रमण कर देता है, कान्हडदेव ने अलाउदीन की अधीनता स्वीकार करली।
- कान्हड देव किसी बात से नाराज होकर दिल्ली से वापस जालौर आ जाता है।
- 1308 A.D. में अलाउदीन 'जालोर की कुंजी' सिवाणा पर आक्रमण करता है।
- 'सातल व सोम' (कान्हडदेव के भतीजे) के नेतृत्व में सिवाणा में साका किया गया। यह सिवाणा का पहला साका था।
- 'भावला' नामक व्यक्ति ने विश्वासघात किया था।
- अलाउदीन सिवाणा का नाम 'खैराबाद' कर देता है।

- अलाउद्दीन जालौर की तरफ आगे बढ़ता है, तब 'मालकाना के युद्ध' में अलाउद्दीन की सेना हारती है व सेनापति शम्स खाँ को बंदी बना लिया जाता है।
- 1311 A.D. में अलाउद्दीन जालौर पर आक्रमण कर देता है। अलाउद्दीन का सेनापति कमालुद्दीन गुर्ग होता है।
- 'बीका दहिया' नामक आदमी ने किले का रास्ता बताकर विश्वासघात किया। जब इस विश्वासघात की सूचना बीका दहिया की पत्नी को मिली, तब उसने अपने विश्वासघाती पति को मार दिया।
- कान्हड़देव व वीरमदेव के नेतृत्व में साका किया गया।
- अलाउद्दीन ने जालौर पर अधिकार कर लिया और जालौर का नाम जलालाबाद कर दिया।
- जालौर में अलाउद्दीन ने 'अलाई मस्जिद' का निर्माण करवाया।
- अलाउद्दीन की पुत्री 'फिरोजा' वीरमदेव (कान्हड़देव का पुत्र) से प्यार करती थी।
- फिरोजा की धाय माँ 'गुल विहिश्त' थी।

Z. 1311 A.D. के युद्ध की जानकारी पद्मनाभ द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कान्हड़दे प्रबन्ध' तथा 'वीरमदेव सोनगरा री बात' में मिलती है।

सिरोही के देवड़ा चौहानों का इतिहास :

- लुम्बा ने 1311 A.D. में आबू व चन्द्रावती को जीतकर चौहानों के देवड़ा शाखा की स्थापना की।
- चन्द्रावती को अपनी राजधानी बनायी।
- शिवभाण ने 1405 A.D. में शिवपुरी को अपनी राजधानी बनाया।
- (Son) सहसमल ने 1425 A.D. में सिरोही की स्थापना कर सिरोही को अपनी राजधानी बना ली।

(महाराणा कुम्भा ने सहसमल पर आक्रमण किया था।)

जगमाल

(मेवाड़ के 7वें महाराणा रायमल की पुत्री)

- उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज की बहन के आनन्दा बाई के साथ शादी जगमाल के साथ हुयी।
- जगमाल ने पृथ्वीराज को जहर देकर मरवा दिया।

अखैराज देवड़ा

- खानवा के युद्ध में राणा सांगा की तरफ से भाग लेता है।
- इसे उड़ना अखैराज के नाम से जानते हैं।

सुरताण देवड़ा

- अकबर के खिलाफ दत्ताणी का युद्ध किया।
- दुरसा आढ़ा सुरताण के दरबार में थे, उन्होंने 'राव सुरताण रा कवित्त' नामक पुस्तक लिखी।

बैरिसाल

- अजीत सिंह को कालिन्द्री गांव में शरण देता है।

मानसिंह

- इसने मानशाही तलवार बनायी थी।

** सिरोही तलवारों के लिए प्रसिद्ध है।

शिवसिंह

- 1823 A.D. में अंग्रेजों के साथ संधि कर लेता है।
- अंग्रेजो के साथ संधि करने वाली सिरोही अंतिम रियासत थी।

बूंदी के हाड़ा चौहानों का इतिहास :

- बूंदी में पहले मीणा शासकों का अधिकार था। बून्दा मीणा के नाम पर ही इसका नाम बूंदी पड़ता है।
- कुम्भा के 'रणकपुर अभिलेख' में बूंदी का नाम बून्दावती भी मिलता है।

1241 A.D. में 'देवा हाड़ा' ने जैता मीणा को हराकर बूंदी पर अधिकार कर लिया।

1274 A.D. में जैत्रसिंह ने कोटा को जीत लेता है

1354 A.D. में बरसिंह ने बूंदी के तारागढ़ किले का निर्माण करवाया।

तारागढ़ का किला भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

राव सुरजन

1569 A.D. में अकबर की अधीनता स्वीकार कर लेता है।

द्वारिका में 'रणछोड़ जी का' मंदिर बनवाता है।

'हम्मीर हठ' का लेखक चन्द्रशेखर इसके दरबार में था।

सुरजन चरित्र'

छत्रसाल

सामूगढ़ (उत्तराधिकार युद्ध औरंगजेब के पुत्रों में) में लड़ता हुआ मारा गया।

बूंदी में इसकी '84 खम्भों की छतरी' बनी हुयी है, जिसका निर्माण राव अनिरूद्ध के भाई देवा ने करवाया।

राव अनिरूद्ध की नाथावत रानी ने बूंदी में 'रानी जी की बावड़ी' बनवायी थी।

बुद्धसिंह :

इसके शासन काल में सबसे पहले मराठों का हस्तक्षेप होता है।

- मुगल बादशाह फर्रुखसियर के कहने पर कोटा के राजा भीमसिंह ने बूंदी पर अधिकार कर लिया व बूंदी का नाम फर्रुखाबाद कर दिया।
- जयपुर के राजा सवाई जयसिंह की ~~पुत्री~~ बहन अमर कंवर की ~~उपाधि~~ शादी बुद्धसिंह के साथ हुयी।

विष्णु सिंह

- इसने अंग्रेजों से संधि कर ली। (मराठों से सुरक्षा हेतु)

राम सिंह

- प्रसिद्ध कवि सूर्यमल्ल मिश्रण इसके दरबार में थे।

पुस्तक – वीर सतसई, वंश भास्कर

कोटा के हाड़ा चौहानों का इतिहास :

- 1631 A.D. में बुंदी के राजा राव रत्न सिंह के पुत्र माधो सिंह ने कोटा राज्य की स्थापना की। (1631 A.D. में मुगल बादशाह शाहजहां ने कोटा को बूंदी से स्वतंत्र कर बूंदी के शासक के पुत्र को कोटा का शासक बनाया)

मुकुन्द सिंह

- धरमत के युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया।
- इसने कोटा में 'अबली मीणी का महल' बनाया।

भीम सिंह

- इसने फर्रुखसियर के कहने पर बूंदी पर अधिकार कर लिया।
- खींचियों (चौहानों की एक शाखा) से गागरोन छीन लिया
- भगवान श्रीकृष्ण के भक्त होने के कारण कोटा का नाम नन्दग्राम कर दिया।
- बारां में 'सांवरिया जी का मंदिर' बनवाया।

शत्रुसाल

- 1761 A.D. के 'भटवाड़ा के युद्ध' में जयपुर के 'राजा माधोसिंह' को हराया।
- इसके शासनकाल में कोटा के प्रधानमंत्री 'जालिम सिंह झाला' का प्रभाव बढ़ने लगता है।

उम्मेद सिंह

- इसने अंग्रेजों से संधि कर ली।
- संधि की मुख्य शर्तें :

1) उम्मेद सिंह व उसके वंशजों का कोटा पर अधिकार बना रहेगा।

2) जालिम सिंह व उसके वंशज पूर्ण अधिकार सम्पन्न दीवान बने रहेंगे।

झालावाड़ राज्य का इतिहास :

1837 A.D. में 'जालिम सिंह झाला' के पोते मदन सिंह ने झालावाड़ में एक झाला राज्य की स्थापना की। 1838 A.D. में अंग्रेजो ने इसे मान्यता प्रदान कर दी। इस प्रकार झालावाड़ राज की सबसे अंतिम रियासत थी। इसकी राजधानी 'झालरापाटन' थी।

आमेर के कछवाहों का इतिहास :

- भगवान राम के छोटे बेटे कुश के वंशज कुशवाहा कहलाए, जो कालान्तर में कछवाहा हो गया।
- कछवाहों की कुल देवी जमवाय माता।

* आमेर के कछवाहा शासक स्वंय को गोविन्द देव जी के दीवान मानते हैं।

1137 ई. (M.P.) नरवर से 'दुल्हराय' दौसा आता है, व दौसा में बड़गुर्जरों को हराकर कछवाहा शासन की स्थापना करता है। ये घटना 1137 A.D. की है। और लालसोट की राजकुमारी से शादी करता है।

- कालान्तर में रामगढ़ में मीणाओं को हराकर इसे अपनी राजधानी बनाता है, यहां अपनी कुल देवी जमवाय माता का मंदिर बनवाता है और इसका नाम जमवारामगढ़ रख दिया।
- दुल्हराय का वास्तविक नाम 'तेजकरण' था।

क

कोकिला देव :

- 1207 A.D. में मीणा शासकों को आमेर में हराकर वहां आमेर पर अधिकार कर लिया और राजधानी जमवारामगढ़ से आमेर ले आता है।

पृथ्वीराज :

- खानवा के युद्ध में राणा सांगा की सहायता करता है।
- पृथ्वीराज के पुत्र का नाम सांगा था, जिसने सांगानेर बसाया था।
- रानी का नाम - बाला बाई, जो बीकानेर के राव लूणकरण की पुत्री थी।
- इसने अपनी रियासत में 12 कोटड़ी व्यवस्था (सामन्ती व्यवस्था) लागू की।

भारमल : [1547-1573]

- नारनौल के मुगल फौजदार मजनूँ खाँ की सहायता से अकबर से मिलता है।
- कालान्तर में अजमेर दरगाह में जियारत करने जा रहे अकबर से सांगानेर के चगताई खाँ की मदद से मिलता है।
- जियारत से वापस लौटते समय साम्भर में अपनी बेटी हरखा बाई की शादी अकबर से कर देता है। अकबर इसे 'मरियम उज्जमानी' की उपाधि देता है।
- इस प्रकार मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाला तथा वैवाहिक सम्बन्ध बनाने वाला ये आमेर के पहले राजा थे।
- इसी हरखा बाई से कालान्तर में जहाँगीर (सलीम) का जन्म हुआ।
- अमीर उल उमरा की उपाधि दी गयी।

भगवन्त दास :

- अकबर ने इसे 'अमीर उल उमरा' की उपाधि दी तथा 5000 का मनसबदार बनाया।
- अकबर ने इन्हें राणा प्रताप को समझाने के लिए भेजा था।
- बूंदी के राजा सुरजन राय हाड़ा को अधीनता स्वीकार करवाने में भगवन्त दास की मुख्य भूमिका थी।
- अकबर से दादूदयाल को भगवन्तदास ने मिलाया था।
  (फतेहपुर सीकरी में)

• 'सरनाल का युद्ध' (मिर्जा विद्रोह- गुजरात में) - इसमें वीरता दिखाने पर भगवन्तदास को नगाड़ा व परचम देकर सम्मानित किया।

• भगवन्तदास ने अपनी बेटी मानबाई की शादी सलीम के साथ की। सलीम इसे 'शाहे- बेगम' कहता था। इसी से खुसरो का जन्म हुआ। इसने जहाँगीर की शराब की आदतों से तंग आकर आत्महत्या करली। (मानबाई)

मानसिंह

• सरनाल के युद्ध में मानसिंह भी अकबर के साथ था।
• रणथम्भौर अभियान के समय मानसिंह पहली बार सेना के साथ गया।
• अकबर ने राणा प्रताप को समझाने के लिए भेजा।
• हल्दीघाटी के युद्ध में शाही सेना का सेनापति होता है, यह मानसिंह का पहला स्वतंत्र अभियान था।
• 14 Feb. 1590 को मानसिंह का राज्याभिषेक किया गया। मानसिंह को 5000 का मनसबदार बनाया गया। जो बाद में बढ़कर 7000 का हो गया।
• अकबर ने इसे बंगाल, बिहार व काबुल का सूबेदार बनाया।

काबुल : (हिन्दू- मुसलमानों के लिए यवन का प्रयोग)
काबुल में मानसिंह ने 5 यवन कबीलों को जीता था। इसलिए आमेर के झंडे का रंग पंचरंगा था।

* जयपुर के सिक्के झाड़शाही सिक्के कहलाते है।
(कछवाह वंश — राम — अयोध्या — सफेद तिरंगा — झाड़ी)
(फिर मानसिंह के 5 यवन कबीले जीतने पर पचरंगा हो गया।)

• मानसिंह को अकबर ने 'फर्जन्द' की उपाधि दी।

"मात सुणावै बालगाँ, खौफनाक रण गाथ,
काबुल भूली नहीं अजे जो खाँडो वे हाथ।।"

• वृंदावन में राधा गोविन्द का निर्माण करवाया।
मोर — मानसिंह

विहार -

विहार में सूबेदारी के दौरान मानपुर नगर बसाता है।

बंगाल -

- बंगाल में अकबरनगर नामक शहर बसाता है, जिसे वर्तमान में हम राजमहल कहते हैं।
- बंगाल की सूबेदारी के दौरान ही इसके तीनों बेटों की मृत्यु हो गयी थी। (हिम्मत सिंह, जगतसिंह, सुरजन सिंह)
- पूर्वी बंगाल के राजा केदार को हराकर ~~शिला~~ माता की मूर्ति लेकर आता है तथा इन्होंने आमेर में शिला माता का मंदिर बनवाया।

- मानसिंह के दरबार में एक दरबारी था - 'पुण्डरीक विट्ठल', जिनकी पुस्तकें हैं -
  1) रागमाला
  2) राग मंजरी
  3) राग चन्द्रोदय
  4) नर्तन निर्णय
- एक और दरबारी थे, जिनका नाम था - मुरारि दास
  पुस्तक - 'मान प्रकाश'

- दरबारी पंडित जगन्नाथ ने पुस्तक लिखी - 'मानसिंह कीर्ति मुक्तावली'
- दादूदयाल ने इनके समय (मानसिंह) में 'वाणी' की रचना की।
- मानसिंह ने आमेर के महलों का निर्माण शुरू करवाया।
- आमेर में जगत शिरोमणि मंदिर बनवाया, इस मंदिर का निर्माण मानसिंह की रानी कनकावती ने अपने बेटे जगतसिंह की याद में बनवाया। इस मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण की वही मूर्ति लगी हुयी है, जिसकी मीरा चित्तौड़ में पूजा किया करती थी।

मिर्जा राजा जयसिंह : [1621-1667]

- सबसे अधिक समय तक शासन करने वाला जयपुर का राजा (46 वर्ष)।
- जयसिंह, जहाँगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब तीनों का समकालीन था,
- जहाँगीर ने इसे दक्षिण में मलिक अम्बर के खिलाफ भेजा था।
- शाहजहाँ ने इसे मिर्जा राजा की उपाधि दी व काबुल अभियान पर भेजा।
- उत्तराधिकार संघर्ष में, बहादुरपुर के युद्ध में दारा शिकोह की तरफ से लड़ा।
- 'दौराई के युद्ध' में औरंगजेब की तरफ से लड़ा।
- जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह को भी औरंगजेब की तरफ यही लेकर आता है।
- औरंगजेब ने इसे दक्षिण में शिवाजी को नियंत्रित करने के लिए भेजा।
- 11 June 1665 - पुरन्दर की संधि

  [शिवाजी V. जयसिंह]

  इस संधि के तहत शिवाजी मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लेता है।
- संधि के बाद जब शिवाजी औरंगजेब से मिलने आगरा आता है, तब मिर्जा राजा जयसिंह के बेटे रामसिंह के पास रुकता है।
- मिर्जा राजा जयसिंह के दरबार में हिन्दी के प्रख्यात कवि 'बिहारी जी' थे।

  पुस्तक - बिहारी सतसई
- दरबारी - 'रायसिंह' ने 'जयसिंह चरित्र' लिखी थी।
- 'कुलपति मिश्र' (बिहारी जी के भान्जे) - इन्होंने लगभग 52 ग्रन्थों की रचना की थी, जिनसे हमे जयसिंह के दक्षिण अभियानों की जानकारी मिलती है।
- जयसिंह ने औरंगाबाद के पास जयसिंहपुरा ~~गांव~~ कस्बा बसाया था।
- जयपुर में जयगढ़ किले का निर्माण करवाया। पुनः

सवाई जयसिंह (1700-1743)

- सर्वाधिक मुगल बादशाहों के साथ रहने वाला।

7 मुगल बादशाहों के साथ — औरंगजेब
बहादुरशाह I
जहांदर शाह
फर्रुखसियर

रंगीला (मोहम्मद शाह)

- औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों में हुये उत्तराधिकार संघर्ष में इन्होंने शाहजादे आजम का पक्ष लिया था चूंकि जीत मुअज्जम की हुयी। जो 'बहादुरशाह I' के नाम से बादशाह बना।
- बादशाह बनते ही उसने सवाई जयसिंह आमेर के राजा पद से हटा दिया। व इनके छोटे भाई विजयसिंह को राजा बना दिया।
- आमेर का नाम बदलकर इस्लामाबाद या मोमिनाबाद रख दिया।
- 1704 A.D के '<u>देबारी समझौते</u>' के तहत मेवाड़, मारवाड व आमेर की संयुक्त सेना के सहारे विजयसिंह को हटाकर जयसिंह वापस राजा बन गया।

जयपुर - बूंदी विवाद

- सवाई जयसिंह की ~~बेटी~~ बहन अमर कंवर की शादी बूंदी के राजा ~~सवाई जयसिंह~~ बुद्धसिंह के साथ हुई थी। अमर कंवर के संतान नहीं होने पर बुद्धसिंह ने दलेल सिंह को गोद ले लिया और बूंदी का राजा घोषित कर दिया। सवाई जयसिंह ने अपनी बेटी कृष्णा कंवर की शादी, दलेल सिंह के साथ कर दी।

कालान्तर में बुद्धसिंह की अन्य रानी से उम्मेद सिंह नामक पुत्र हुआ। अमर कंवर ने उम्मेद सिंह का पक्ष लिया। इससे उम्मेद सिंह व दलेल सिंह के बीच उत्तराधिकार संघर्ष उत्पन्न हो गया।

अमर कंवर ने उम्मेद सिंह के पक्ष में मराठों को बुला लिया। मराठा सरदार मल्हार राव होल्कर अपना राखीबंध भाई बनाया। व मराठों की सहायता से उम्मेद सिंह को राजा बना दिया।

यह मराठों का राज्य की राजनीति में पहला आंतरिक हस्तक्षेप था।

* सवाई जयसिंह के मराठों के साथ सम्बन्ध :
- मुगल मनसबदार के रूप में सवाई जयसिंह ने मराठों से 3 युद्ध किए —
  1) 1715 A.D. — पीलसूद का युद्ध
  2) 1733 A.D. — मन्दसौर का युद्ध
  3) 1735 A.D. — रामपुरा का युद्ध
- मराठा समस्या के समाधान के लिए 1734 A.D. में हुरड़ा सम्मेलन बुलवाता है। इसका आयोजक सवाई जयसिंह था।
- 1741 A.D. में पेशवा बालाजी बाजीराव के साथ धौलपुर समझौता करता है
- जयसिंह मालवा का 3 बार सूबेदार हुआ।
- 'गंगवाना के युद्ध' में बीकानेर के राजा जोरावर सिंह की मदद करता है। बीकानेर व जोधपु जयपुर की संयुक्त सेना जोधपुर के अभयसिंह को हराती है।
- भरतपुर के उत्तराधिकार संघर्ष में बदनसिंह का साथ देता है, उसे राजा बनाता है, बृजराज की उपाधि देता है, डीग की जागीर देता है।
- जयसिंह ने अश्वमेध यज्ञ करवाया, इसका पुरोहित 'पुण्डरीक रत्नाकर' था। अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को दीपसिंह कुम्भाणी ने पकड़ लिया व अपने 25 आदमियों के साथ लड़ता हुआ मारा गया।
- जयसिंह ने एक ज्योतिष ग्रन्थ लिखा था — 'जयसिंह कारिका'
- 1725 A.D. में नक्षत्रों की शुद्ध सारणी हुयी। इसे 'जिज मुहम्मदशाही' नाम दिया गया।
- इनके एक दरबारी 'जगन्नाथ' ने युक्लिड की रेखागणित से सम्बन्धित पुस्तक का संस्कृत में अनुवाद किया।

  अन्य पुस्तक — सिद्धान्त सम्राट
  सिद्धान्त कौस्तुभ

- फ्रेंच पुस्तक: लागोरिथम का 'केवलराम' नाम के विद्वान ने विभाग सारिणी

नाम से अनुवाद किया।

- पुण्डरीक रत्नाकर ने 'जयसिंह कल्पद्रुम' नामक ग्रन्थ लिखा।
- नयनचन्द्र मुखर्जी ने एक अरबी ग्रन्थ 'ऊकर' का संस्कृत अनुवाद किया।
- जयसिंह ने 'मुहम्मद मेहरी' व 'मुहम्मद शरीफ' को विदेशों में पाण्डुलिपियों के संकलन के लिए भेजा।
- 18 नवम्बर 1727 को जयपुर शहर की स्थापना की, इसका वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य नामक एक बंगाली ब्राह्मण था। जयपुर का निर्माण वास्तुशास्त्र के आधार पर बनाने के लिए एक पुर्तगाली ज्योतिषी 'जेवियर डि सिल्वा' को बुलाया.
- 1729 A.D. को जयपुर को अपनी राजधानी बना लिया।
- नाहरगढ़ का किला बनवाया, इसे सुदर्शनगढ़ भी कहते हैं।
- गोविन्द देव जी का मंदिर बनवाया। यह गौड़ीय सम्प्रदाय की राज. में प्रमुख पीठ है।
- सिटी पैलेस / चन्द्रमहल का निर्माण करवाया।
- जयगढ़ किले में जयबाण तोप रखवायी।
- पांच विभिन्न स्थानों पर पांच वेधशालाएँ बनवायीं।
    - जयपुर – सबसे बड़ी
    - दिल्ली – सबसे पहले निर्मित
    - मथुरा
    - बनारस
    - उज्जैन
- जयपुर के जंतर मंतर में एक 'सम्राट यंत्र' लगवाया, जो विश्व की सबसे बड़ी सूर्य घड़ी है।
    - एक राम यंत्र लगवाया, जो ~~ऊंचाई नापने का यंत्र~~ चंद्र घड़ी थी।

{ जयप्रकाश यंत्र - मौसम की जानकारी हेतु
{ नाभिवलय- यंत्र - गुरूत्वाकर्षण हेतु

- सवाई जयसिंह ने जलमहल का निर्माण करवाया।
- 'अमानीशाह' - सवाई जयसिंह के आध्यात्मिक गुरू थे।
- सवाई जयसिंह को मोहम्मद शाह ने राज राजेश्वर, श्री राजाधिराज, सवाई आदि उपाधियों से विभूषित किया (जाटों का विद्रोह समाप्त करने पर)

ईश्वरी सिंह [1743- 1750 A.D.] :

- जयसिंह की एक खिंची रानी से ईश्वरी सिंह का जन्म हुआ, जो जयसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था तथा जयपुर का अगला राजा बना।
- जयसिंह की सिसोदिया रानी चन्द्र कंवर से माधो सिंह पुत्र का जन्म हुआ जो देबारी समझौते (1707 A.D.) के तहत राजा बनाया जाना था।

⊙ मेवाड़ का महाराणा संग्राम सिंह II, माधोसिंह को रामपुरा का परगना देता है।

- जयसिंह की मृत्यु के बाद ईश्वरी सिंह व माधो सिंह में उत्तराधिकार संघर्ष होता है।

(बनास नदी के पास)
⇒ राजमहल का युद्ध (टोंक) - पहला उत्तराधिकार-युद्ध

ईश्वरी सिंह V. माधो सिंह
(सूरजमल - भरतपुर महाराजा) (जगत सिंह II - मेवाड़)
(बुंदी नरेश - उम्मेद सिंह)
(कोटा राजा - दुरजन साल)
(मराठे)

इस युद्ध में ईश्वरी सिंह जीतता है। इस जीत के उपलक्ष्य में ईसरलाट (सरगासूली) का निर्माण करवाता है।

⇒ बगरू का युद्ध : (उत्तराधिकार का द्वितीय युद्ध)

- इस युद्ध में ईश्वरी सिंह हार जाता है, उसे मराठों को युद्ध हर्जाना व माधो सिंह को पांच परगने देने पड़े।
- मराठों द्वारा युद्ध हर्जाने के लिए तंग करने पर ईश्वरी सिंह ने आत्महत्या कर ली।

* मानपुरा का युद्ध :
  इसमें ईश्वरी सिंह अहमद शाह अब्दाली को हराता है।

माधोसिंह (1750- 1768 A.D.)

- 1751 A.D. में मराठों (5000) का कत्ले आम करवाया, जयपुर में।

⇒ काकोड़ का युद्ध (टोंक)
- माधोसिंह ने इस युद्ध में मराठों को हराया।

⇒ भटवाड़ा का युद्ध (कोटा) (Ranthambore)
- माधोसिंह V. शत्रुसाल (कोटा)
- रणथम्भौर पर अधिकार के लिए प्रश्न पर।
- इस युद्ध में माधोसिंह की हार होती है।

⇒ कामा का युद्ध (भरतपुर)

माधोसिंह V. जवाहर सिंह (भरतपुर)

इस युद्ध में दोनो पक्ष अपनी-2 जीत का दावा करते रहे।

• 1762 A.D. में माधोसिंह ने सवाई माधोपुर की स्थापना की।

• मोतीडूंगरी के महल बनवाए। → माधोसिंह

• चाकसू में शीतला माता का मंदिर बनवाया।

प्रतापसिंह (1778 - 1803 A.D.)

* तुंगा का युद्ध (~~1785~~) :(1787)

जयपुर के प्रतापसिंह व जोधपुर का विजयसिंह, दोनों मिलकर मराठों के महादजी सिन्धिया को हराते हैं।

* पाटन का युद्ध (1790) :

इस युद्ध में मराठों ने प्रतापसिंह को पराजित किया। इस युद्ध में मराठा सेनापति, एक फ्रांसीसी 'डी - बोय' था।

* मालपुरा का युद्ध (टोंक) :

इस युद्ध में मराठों ने जयपुर के प्रतापसिंह व जोधपुर के भीमसिंह की संयुक्त सेना को हराया।

• प्रतापसिंह एक अच्छा लेखक था, 'बृजनिधि' नाम से कविताएं लिखा करता था।

• प्रतापसिंह ने एक संगीत सम्मेलन बुलवाया, जिसकी अध्यक्षता देवर्षि बृजपाल भट्ट ने की थी, जिसमें 'राधा गोविन्द संगीत सार' ग्रंथ लिखा गया।

• प्रतापसिंह के संगीत गुरु का नाम चाँद खाँ था, प्रतापसिंह ने इसे

'बुद्ध प्रकाश' नामक उपाधि थी।

- चाँद खाँ ने 'स्वरों सागर' ग्रन्थ की रचना की।
- प्रताप सिंह के दरबार में 22 विद्वान रहते थे, जिन्हें गन्धर्व बायसी या प्रताप बायसी कहते हैं। प्रतापसिंह ने विद्वानों के लिए 'गुणीजन खाना' की स्थापना की।
- प्रताप सिंह 'तमाशा' नाट्य शैली को महाराष्ट्र से जयपुर लेकर आए थे। तमाशा के प्रमुख 'बंशीधर भट्ट' थे।
- प्रतापसिंह ने 'हवामहल' का निर्माण करवाया, यह एक पांच मंजिला इमारत है, जो भगवान श्रीकृष्ण के मुकुट के समान है।

पांच मंजिले —
- शरद मंदिर
- रत्न मंदिर
- विचित्र मंदिर
- प्रकाश मंदिर
- हवा मंदिर

- हवा महल का वास्तुकार - 'लाल चन्द' *

जगतसिंह (1803 - 1818)

- 1807 A.D. में गिंगोली का युद्ध - अंग्रेजो से सन्धि कर ली थी
- जगतसिंह की प्रेमिका का नाम 'रस कपूर' था।

रामसिंह (1833 - 1880 A.D.)

- रूपा बडारण मामले की जांच करने आए A.G.G. आल्विस के सहायक 'ब्लैक' की पीट-2 कर हत्या कर दी गयी।

- 'जॉन लुडलो' को रामसिंह का संरक्षक व जयपुर का प्रशासक बनाया गया।

जॉन लुडलो ने 1844 A.D. में समाधि प्रथा व कन्या वध पर रोक लगायी

~~1875~~ 1845 A.D. - सती प्रथा पर रोक लगायी

1847 A.D. - मानव व्यापार पर रोक लगायी

1857 A.D. की क्रांति में रामसिंह ने अंग्रेजों का साथ दिया अतः इसे अंग्रेजों ने 'सितार-ए-हिन्द' की उपाधि व कोटपूतली परगना दिया।

- ~~१८७८~~ एडवर्ड VII के जयपुर आगमन पर जयपुर को गुलाबी रंग से रंगा गया

- स्टेनले रीड नामक पत्रकार ने एक पुस्तक 'ROYAL TOWNS OF INDIA' में पहली बार जयपुर के लिए 'PINK CITY' नाम दिया।

- 'प्रिंस अल्बर्ट' के जयपुर आगमन पर 1876 A.D. में अल्बर्ट हॉल की नींव रखी गयी, इसका वास्तुकार 'स्टीवन जैकब' था। इसी समय रामनिवास बाग बनवाया गया

- कला के विकास के लिए 1857 A.D. में 'मदरसा-ए-हुनरी' की स्थापना की। 1866 में इसका नाम बदलकर 'RAJASTHAN SCHOOL OF ARTS AND CRAFTS' कर दिया गया।

- जयपुर में ब्लू पॉटरी की ~~स्थाप~~ शुरुआत की।

- चूडामण व कालू कुम्हार नामक दो व्यक्तियों को भोला नामक व्यक्ति से ब्लू पॉटरी के प्रशिक्षण के लिए दिल्ली भेजा।

- 1866 A.D. में 'कालिचन्द मुखर्जी' ने एक महिला विद्यालय खोला, यह किसी भी रियासत में महिला-शिक्षा का पहला कदम था। यहां बालिकाओं को सिलाई सिखायी जाती थी।

• महाराजा कॉलेज व संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।
• 1870 A.D. में लार्ड मेयो ने जयपुर व अजमेर की यात्रा की।
• 1875 A.D. में गवर्नर जनरल नार्थब्रुक ने जयपुर की यात्रा की।

माधोसिंह II :
• इसे बब्बर शेर कहते हैं।
• मदन मोहन मालवीया को B.H.U. के लिए 5 लाख रुपये दिये थे।
• नाहरगढ़ में अपनी नौ दासियों के लिए एक जैसे 9 महल बनवाये
• 1904 A.D. में सबसे पहले 'डाक टिकट व पोस्ट कार्ड व्यवस्था' लागू की जो रियासतों में किया गया पहला प्रयास था।
• सिटी पैलेस में मुबारक महल बनवाए।

मानसिंह II :
• आजादी के समय जयपुर का शासक।
• राज्य. का पहला राजप्रमुख। (30 March 1949)
• मानसिंह II ने राजप्रमुख के पद पर 1 नव. 1956 तक कार्य किया।

'अलवर राज्य का इतिहास'

- यहाँ कछवाहों वंश की 'नरूका शाखा' का शासन था।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने कल्याण सिंह को 'माचेड़ी' की जागीर दी।
- 1774 A.D. में बादशाह शाह आलम ने प्रतापसिंह को स्वतंत्र रियासत दे दी।
- 1775 A.D. में प्रताप सिंह ने भरतपुर से अलवर को छीनकर इसे अपनी राजधानी बनाया।

बख्तावर सिंह :

- 'लसवाड़ी के युद्ध' में मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों का साथ देते हैं। थोड़े दिनों बाद अंग्रेजों से सहायक संधि कर लेते हैं।
- 'बख्तेश' और 'चन्द्रमुखी' नाम से कविताएं लिखा करते थे।

विनयसिंह :

- विनयसिंह ने अपनी माता 'मूसी महारानी' की याद में अलवर में 80 खम्भों की छतरी बनवायी। यह 2 मंजिला छतरी है, जिसकी दूसरी मंजिल पर रामायण व महाभारत के चित्र बनाए गए हैं।
- विनय सिंह की रानी का नाम 'शीला' था। इसने अपनी रानी के नामपर सिलीसेढ़ झील बनवायी।

सिलीसेढ़ झील को 'राज. का नन्दनकानन' कहते हैं।

जयसिंह :

- नरेन्द्र मंडल का नामकरण 'जयसिंह' ने किया था।
- प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया।
- अलवर में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया।
- 'ड्यूक ऑफ. एडिनबर्ग' के अलवर आगमन पर सरिस्का पैलेस का निर्माण करवाया।
- तिजारा दंगो के बाद जयसिंह को हटा दिया गया. जयसिंह पेरिस चला गया व वहीं उसकी मृत्यु हो गयी।

तेजसिंह :

- आजादी के समय अलवर का शासक
- महात्मा गांधी की हत्या मे इनकी संदिग्ध भूमिका थी. पर बाद में न्यायपालिका ने इन्हें क्लीन चिट दे दी।

जैसलमेर के भाटियों का इतिहास

अनिरुद्ध → प्रद्युम्न → 7वीं पीढ़ी महा

- भाटी भगवान श्रीकृष्ण के वंशज है।
- भाटी यदुवंशी होते हैं, इसलिए जैसलमेर के राजचिन्ह में 'छत्राला यादवपति' लिखा हुआ है।
- भाटियों की कुल देवी – 'स्वांगिया माता'

"काशी मथुरा प्राग्वाट (प्रयाग), गजनी अर भटनेर।
दुर्गम देरावर लुद्रवी, नवमो गढ़ जैसलमेर॥"
(तन्नौट) (सियालकोट) (लोदरवार) - जैसलमेर

- 285 A.D. में भट्टी ने भटनेर का किला बनाकर इसे अपनी राजधानी बनाया। भट्टी को 'भाटियों का आदिपुरुष' या भाटी राज्य का संस्थापक कहा जाता है।
- भटनेर के कारण ही भाटियों को 'उत्तर भड़ किंवाड'/उत्तरी सीमा का प्रहरी कहा गया है।

मंगलराव :

- गजनी के राजा ढून्डी (मुस्लिम) ने मंगलराव को पराजित करके भटनेर छीन लिया। मंगलराव ने तन्नौट को अपनी नयी राजधानी बनाया।

देवराज :

- देवराज ने पंवारी से लोद्रवा छीनकर, लोद्रवा को अपनी राजधानी बनाया

(लोद्रवा की राजकुमारी)
* मूमल महेन्द्र की प्रेम कहानी में महेन्द्र अमरकोट का राजकुमार था।

जैसल :

- 12 July 1155 A.D. को जैसलमेर की स्थापना करता है व इसे अपनी राजधानी बनाता है।

मूलराज :

- अलाउद्दीन के गुजरात आक्रमण के समय भाटियों ने अलाउद्दीन के घोड़े चुरा लिए। अलाउद्दीन ने जैसलमेर पर आक्रमण किया, यह जैसलमेर का पहला साका था।

दुर्जनसाल :

- 1352 A.D. में फिरोज तुगलक के सिंध आक्रमण के समय, फिरोज ने जैसलमेर का घेरा डाला, इस समय जैसलमेर का 'दूसरा साका' हुआ।

लूणकरण :

- रूठी रानी 'उमा दे', लूणकरण की पुत्री थी।
- कंधार का गवर्नर 'अमीर अली' लूणकरण के पास शरण लेता है। एक दिन उसने अपनी बेगमों से रानियों को मिलवाने की इच्छा जाहिर की, ~~किले के~~ उसने बेगमों की जगह पालकियों में हथियार बंद योद्धा बिठा दिये, किले के पहले दरवाजे पर ही इस धोखे का पर्दाफाश हो गया। चूंकि अब महिलाओं की जौहर करवाने का समय नहीं था, अत: किले की सभी महिलाओं को तलवारों से काट दिया गया। (धारा स्नान)

* जौहर (अग्नि स्नान)

चूंकि इस समय केवल केसरिया ही हुआ था, जौहर नहीं हुआ. इसलिए इसे जैसलमेर का 'अर्द्ध - साका' ही हुआ।
यह घटना 1550 A.D. की है।

हरराज :

- 1570 A.D. में अकबर के नागौर दरबार में भाग लेता है। इस प्रकार मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाला यह जैसलमेर का पहला राजा था।
- इसने अपने राज्य में सामन्तों में श्रेणी व्यवस्था लागू की। (डांवडी और जीवणी)

अमरसिंह :

- ये 'अमरकास' नहर बनवाकर सिंधु नदी का पानी जैसलमेर लेकर आए।

अखैसिंह :

- इसने जैसलमेर में अखैशाही मुद्रा का प्रचलन किया।

मूलराज II :

- इसने अंग्रेजो के साथ संधि कर ली थी।

जवाहरसिंह :

- आधुनिक जैसलमेर का निर्माता।
- जैसलमेर में डाक-तार व रेल व्यवस्था लागू की।
- जैसलमेर में 'विक्रम पुस्तकालय' बनवाया।
- इन्हीं के समय स्वतंत्रता सेनानी सागरमल गोपा की जेल में

जिंदा जलाकर मार दिया गया। सागर मल गोपा की हत्या के बाद गोपान स्वरूप पाठक आयोग स्थापित किया गया।

सागरमल गोपा की पुस्तकें :-

1) आजादी के दीवाने
2) जैसलमेर का गुंडाराज
3) रघुनाथ सिंह का मुकदमा

- इनके काल में राज्य का ही नहीं, अपितु भारत का अंतिम दुर्ग श्री मोहनगढ़ बनवाया गया।

गिरधर सिंह :

- आजादी के समय यहाँ का शासक गिरधर सिंह था।

⇒ जैसलमेर में 2½ साके हुये हैं -

1) 1292 A.D में अलाउदीन खिलजी व भाटी शासक मूलराज I के मध्य युद्ध।
2) दिल्ली के सुल्तान फिरोजशाह तुगलक व रावल दुर्जनसाल के मध्य युद्ध।
3) तीसरा अर्द्ध साका 1550 A.D में जैसलमेर के राव लूणकरण व कंधार के अमीर अली के मध्य, इसमें वीरो ने केसरिया तो किया, परन्तु जौहर नहीं हुआ।

करौली का इतिहास (यादव वंश)

- करौली में यादवों की 'जादौन' शाखा थी।
- कुल देवी - कैला माता

विजयपाल :
- 1040 A.D. में बयाना को जीतकर इसे अपनी राजधानी बनाता है और यादवों की जादौन शाखा का शासन प्रारम्भ करता है।

तिमनपाल :
- यह तिमनगढ़ का किला बनाता है। और इसे अपनी राजधानी बनाता है।

कुंवरपाल :
- मुहम्मद गौरी के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।

अर्जुनपाल :
- कल्याणपुर नामक नगर की स्थापना करता है।

धर्मपाल :
- कल्याणपुर का नाम करौली रखकर इसे अपनी राजधानी बनाता है।

गोपालपाल :
- करौली में 'मदन मोहन जी का मंदिर' बनवाता है। यह गौड़ीय सम्प्रदाय की राजस्थान की दूसरी प्रमुख पीठ है। (चैतन्य महाप्रभु ने)

हरबक्शपाल :

- इसने अंग्रेजो के साथ संधि कर ली।

मदनपाल :

- 1857 A.D. की क्रांति में कोटा महाराव की मदद की थी।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती सबसे पहले (राजस्थान में) करौली मदनपाल जी के निमंत्रण पर आए थे।

भरतपुर के जाट वंश का इतिहास

- 1669 A.D. में मथुरा क्षेत्र के आस-पास के जाट किसानों ने औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। इस विद्रोह का नेतृत्व 'गोकुला' नामक जाट किसान ने किया था। गोकुला को (1670 A.D.) पकड़कर उसकी हत्या कर दी गयी।
- 1687 A.D. में सिनसिनी का जमींदार राजाराम विद्रोह कर देता है। सिकन्दरा में अकबर के मकबरे को लूट लेता है, और अकबर की अस्थियों को निकालकर जला देता है। राजाराम के विद्रोह को भी दबा दिया गया।

चूड़ामण :

- थूण के किले का निर्माण करवाता है, और जाट राज्य की स्थापना करता है, चूंकि ये सिनसिनी गांव के थे, इसलिए ये सिनसिनवार जाट कहलाए।

बदन सिंह :

- चूडामण की मृत्यु के बाद हुए उत्तराधिकार संघर्ष में बदनसिंह, मोहकमसिंह के विरुद्ध जयपुर के सवाई जयसिंह का समर्थन प्राप्त करता है। सवाई जयसिंह ने इसे डीग की जागीर दी, बृजराज की उपाधि दी। और पचरंगी ध्वजा दी (क्यों कि जयपुर का झंडा पचरंगा है।)
सवाई जयसिंह ने 'राजा' की उपाधि भी दी। (मुहम्मद शाह/ सवाई जयसिंह)
- बदनसिंह इनमें से किसी भी उपाधि का प्रयोग नहीं करके अपने नाम के आगे ठाकुर लगाता था।
- बदनसिंह कभी भी दिल्ली दरबार में नहीं गया।
- सवाई जयसिंह के साथ बदनसिंह के रिश्ते बेहद अच्छे थे। वह सवाई जयसिंह के पास जयपुर दरबार आता है, इसीलिए

आज भी जयपुर में बदनसिंह के नाम से 'बास बदनपुरा' जगह है।

- बदनसिंह ने {डीग और कुम्हेर के किले} बनवाए।

सूरजमल : (1753-63)

- सूरजमल को 'जाटों का प्लेटो' और 'जाटों का अफलातून' कहते हैं।
- भरतपुर के किले का निर्माण करवाया व अपनी राजधानी बनाया।

* पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठा सेनापति सदाशिव राव भाऊ से अनबन होने पर युद्ध में भाग नहीं लेता है, पर भागते हुये मराठा सैनिकों को भरतपुर में शरण देता है।

- 'राजमहल व बगरू' के युद्ध में ईश्वरी सिंह की सहायता करता है। (इन दोनों में हरावल (अग्रिम पंक्ति) स्थान पर रहकर लड़ता है।) (इस समय बदनसिंह, सूरजमल को सेनापति बनाता है)
- 1754 A.D. में दिल्ली पर आक्रमण करता है, वहां से नूरजहां का झूला उठाकर लाता है। और इन झूलों को डीग के महलों में स्थापित करवाया।
- डीग में जलमहलों का निर्माण करवाया।
- नजीब खां के खिलाफ लड़ते हुये मारा गया।
- सूरजमल एक आर्थिक विशेषज्ञ था, उसने भरतपुर की आर्थिक स्थिति सुधारने का अधिक प्रयास किया।
- उसकी मृत्यु के समय 1763 A.D. में भरतपुर राज्य की आय 175 रु. लाख रुपये सालाना थी।
- सूरजमल ने भरतपुर में एक नवीन प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना की, जिसमें पद का आधार योग्यता को बनाया गया।
- भरतपुर में दीवान को 'मुखत्यार' कहते थे।

• सूरजमल के दरबारी 'मंगल सिंह पुरोहित' रहे, जिन्होनें – 'सुजान संवत विलास' नामक पुस्तक लिखी।

• सूरजमल की पत्नी का नाम 'किशोरी देवी' था।

जवाहर सिंह :

1774 A.D. में दिल्ली पर आक्रमण करता है, व दिल्ली के किले से अष्ट धातुओं के बने दरवाजे लेकर आता है, इन्हें भरतपुर के किले में लगवाता है।

ये दरवाजे मूल रूप से चितौड़ के किले में लगे हुये थे, जिन्हें अकबर चित्तौड़ अभियान के दौरान आगरा ले गया था, फिर औरंगजेब इन्हें आगरा से दिल्ली ले आता है।

• जवाहर सिंह इस जीत के उपलक्ष्य में भरतपुर के किले में जवाहर बुर्ज का निर्माण करवाता है, जवाहर बुर्ज में भरतपुर के राजाओं का राज-तिलक किया जाता है।

• 'कामा का युद्ध' – जवाहर सिंह, जयपुर के माधो सिंह के खिलाफ लड़ता है।

रणजीत सिंह :

• 1803 A.D में दूसरे अंग्रेज – मराठा युद्ध के दौरान 'जसवंत राव होल्कर' को भरतपुर में शरण देता है।

- कई प्रयासों के बावजूद अंग्रेज, भरतपुर के किले को जीत नहीं सके, इसलिए भरतपुर के किले को लोहागढ़ कहा जाता है।

"डिगियो नी गढ़ डीग री, तोपां नाव पड़न्त।
कोराँ खांडी नी हुई, गौरा डींग गलन्त।।"
(घमंड जरूर गल गया)

• रणजीत सिंह अंग्रेजों से मैत्री सन्धि कर लेता है।

जसवंत सिंह :
• 1857 की क्रांति के समय यहां का शासक 'जसवंत सिंह II' था

बृजेन्द्र सिंह :
आजादी के समय यहां का शासक 'बृजेन्द्र सिंह' था।

1857 A.D. की क्रान्ति में राजस्थान

- 1832 A.D. में A.G.G. (Agent to Governer General) मुख्यालय 'अजमेर' में स्थापित किया गया।
- राजस्थान के पहले A.G.G. 'मि. लॉकेट' थे।
- 1845 A.D. में इस मुख्यालय को 'आबू' स्थानान्तरित कर दिया गया।
- 1857 A.D. की क्रांति के समय यहां A.G.G. 'George Patrick lawrence' था।

* lawrence इससे पहले मेवाड़ का 'Political Agent' रह चुका था।

Place	Political Agent	King
(1) Kota	Berten	Ram singh
(2) Jaipur	Eden	Ramsingh II
(3) Jodhpur	Mackmeson	Takhtsingh
(4) Udaipur	Shawers	Swaroop Singh
(5) Bharatpur	Morrison	Jaswantsingh II

- राजस्थान में अंग्रेजों की सैनिक छावनियां –

नसीराबाद (अजमेर)
नीमच (M.P.)
एरिनपुरा (सिरोही) पाली – उस समय जोधपुर रियासत में आता था।
देवली (टोंक)
खैरवाड़ा (उदयपुर)
ब्यावर (अजमेर)

(खैरवाड़ा व ब्यावर) – इन दोनों छावनियों ने 1857 की क्रांति में भाग नहीं लिया था।

नसीराबाद :

- 28 May 1857 :- राज॰ में सबसे पहले नसीराबाद की छावनी में विद्रोह हुआ।
- 28 May 1857 को 15वीं Native Infantry के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- दो दिन बाद 30वी Native Infantry भी इनके साथ मिल गयी व सभी सैनिक दिल्ली की ओर कूच कर गए।

नीमच :

- मोहम्मद अली बेग नामक एक सैनिक ने कर्नल एबॉट के सामने अंग्रेजी राज के प्रति वफादार नहीं रहने की कसम नहीं खायी। (अवध के प्रश्न को लेकर - विलय)
- 3 June 1857 को हीरासिंह नामके एक सैनिक के नेतृत्व में छावनी में विद्रोह हो गया। एक अंग्रेज सार्जेण्ट व उसकी पत्नी की हत्या कर दी गयी।
- नीमच छावनी से भागे 40 अंग्रेजों को डूँगला गांव में एक रूघाराम, नामक किसान ने शरण दी।
- कैप्टन शावर्स इन्हें मुक्त करवाता है व उदयपुर महाराणा के पास भेज देता है।
- उदयपुर महाराणा ने इन्हें जगमंदिर महलों में रखा।
- यहां से विद्रोही सैनिक शाहपुरा आते हैं, शाहपुरा का राजा इन्हें रसद आपूर्ति करता है।

• शाहपुरा के राजा ने कैप्टन शावर्स का विरोध किया। यह

• यहां से सैनिक निम्बाहेडा आए। (उस समय टोंक के अधीन था)

निम्बाहेड़ा में इन्हें व्यापक जनसमर्थन मिलता है। निम्बाहेडा में देवली छावनी के सैनिक भी इनसे आकर जुड गये। यहां से सैनिक दिल्ली की ओर चले गये।

एरिनपुरा :

• 1835 A.D. में जोधपुर लीजियन का गठन किया गया। इसका सदर मुकाम (प्रमुख मुख्यालय) एरिनपुरा को बनाया गया।

• एरिनपुरा छावनी की पूर्बिया सैनिकों की टुकडी को आबू भेजा हुआ था वहीं पर उन्होंने विद्रोह कर दिया और एरिनपुरा में आकर अपने बाकी साथियों के साथ मिल गए।

• खैरवा (पाली) नामक स्थान पर इन्हें आउवा का ठाकुर खुशालसिंह चाम्पावत मिलता है, व विद्रोही सैनिकों को अपना नेतृत्व प्रदान करता है।

• खुशाल सिंह चम्पावत :

बिठौडा गांव के उत्तराधिकार प्रश्न को लेकर खुशालसिंह ने बिठौडा के ठाकुर कानजी की हत्या कर दी थी, हत्या करने से यह जोधपुर राज का विद्रोही हो गया।

एरिनपुरा छावनी के सैनिकों के साथ जुडने से इसका यह विद्रोह अंग्रेजों के विरुद्ध हो गया।

(1) बिठौडा का युद्ध – 8 Sep. 1857

(2) चेलावास का युद्ध – 18 Sep. 1857

आउवा का युद्ध : २० Jan 1858

(1) बिठौड़ा का युद्ध :

(किलेदार)

इस युद्ध में जोधपुर की सेना ने कैप्टन हीथकोट, ओनाड़ सिंह पंवार और कुशाल राज सिंघवी (जोधपुर की पलटन का सेनापति) के नेतृत्व में खुशाल सिंह से युद्ध किया।

इस युद्ध में कुशाल सिंह चम्पावत जीत गया और किलेदार ओनाड़ सिंह मारा गया।

(2) चेलावास का युद्ध :

- इसे काले - गोरे का युद्ध भी कहते हैं।
- A.G.G. George Patrick lawrence व जोधपुर का Political agent मैकमेसन अंग्रेजी सेना का नेतृत्व करते हैं।
- मैकमेसन के सिर को काटकर आउवा के किले पर लटका दिया गया।

(3) आउवा का युद्ध :

- अंग्रेजी सेना का नेतृत्व होम्स व हसराज जोशी कर रहे थे, जीत की आशा न देखकर खुशाल सिंह आउवा का भार अपने छोटे भाई पृथ्वी सिंह (लाम्बिया का ठाकुर) को सौंपकर मेवाड़ चला गया।
- मेवाड़ में कोठरिया (नाथद्वारा) के रावत जोधसिंह के पास शरण लेता है और यहाँ से सलूम्बर के केसरी सिंह चूंडावत के पास चला जाता है।
- आउवा में विद्रोही सैनिक हार जाते हैं, अंग्रेज आउवा के किले में घुसकर अत्याचार करते हैं। और आउवा की इष्ट देवी

माता
सुगाली ~~देवी~~ की मूर्ति उठाकर ले जाते है, जो वर्तमान में पाली के बागड़ म्यूजियम में रखी हुयी है।

- खुशाल सिंह का साथ देने वाले अन्य सामन्त :-

आलणियावास	-	अजीत सिंह
गूलर	-	बिशन सिंह
आसोप	-	शिवनाथ सिंह

- आउवा में घेरने के बाद विद्रोही सैनिक शिवनाथ सिंह के नेतृत्व में दिल्ली की ओर बढ़ते हैं। (आसोप का ठाकुर)
- 1860 A.D. में खुशाल सिंह नीमच में अंग्रेजो के सामने आत्मसमर्पण कर देता है।
- 'टेलर कमीशन' की जांच के आधार पर खुशाल सिंह को बरी कर दिया गया।
- आउवा की क्रांति व खुशाल सिंह आज भी लोकगीतों में गाए जाते हैं।

कोटा में विद्रोह :

- कोटा में वकील 'जयदयाल' व 'रिसालदार मेहराब खाँ' के नेतृत्व में कोस क्रांति की गयी। (15 Oct. 1857)
- कोटा के पॉलिटिकल एजेन्ट बर्टन व उसके दो पुत्र (फ्रैंक व आर्थर) की हत्या कर दी गयी।
- बर्टन के शव को पूरे कोटा में घुमाया गया।
- कोटा महाराव रामसिंह को नजरबंद कर लिया गया।
- मथुराधीश मंदिर के महन्त कन्हैयालाल गोस्वामी व कोटा महाराव

के बीच एक समझौता हुआ, मेजर बर्टन की हत्या के लिए स्वंय को जिम्मेदार ठहराने वाले परवाने पर कोटा महाराव ने हस्ताक्षर किए, जयदयाल को कोटा का प्रशासक नियुक्त कर दिया गया।

- करौली का शासक मदनपाल सेना भेजकर कोटा महाराव को मुक्त करवाता है।
- इसके भी काफी दिनों बाद 'जनरल राबर्टस' कोटा को क्रांतिकारियों से मुक्त करवाता है।
- अंग्रेजो ने मेजर बर्टन की हत्या के लिए, कोटा महाराव को निरपराध किन्तु उत्तरदायी घोषित किया।
- कोटा महाराव की तोपों की सलामी 15 से घटाकर 11 कर दी गयी।
- करौली के मदनपाल को सम्मानित किया गया व 17 तोपों की सलामी दी गयी।
- कोटा का विद्रोह एक जन विद्रोह था।

टोंक में विद्रोह :

- टोंक का नवाब वजीरूदद्दौला अंग्रेजी का समर्थक था। परन्तु नवाब के मामा मीर आलम ने विद्रोहियों का साथ दिया।
- नीमच छावनी के सैनिकों का निम्बाहेडा में स्वागत किया गया विद्रोहियों का पीछा करती कर्नल जैक्सन की सेना का ताराचन्द पटेल ने सामना किया।

- टोंक में महिलाओं ने भी क्रांति में भाग लिया था। इस तथ्य की पुष्टि मोहम्मद मुजीब के नाटक आजमाईश से होती है।

तात्यां टोपे और राजस्थान :

- तात्या टोपे सबसे पहले मांडलगढ़ (भीलवाडा) आया था। टोंक के नवाब के खिलाफ, नासीर मोहम्मद खाँ ने तात्यां टोपे का समर्थन किया।
- बनास नदी के निकट हुये एक युद्ध में तात्यां टोपे हार जाता है व हाडौती की तरफ चला जाता है। यहां पर झालावाड़ का राजा पृथ्वीसिंह तात्या टोपे के विरुद्ध सेना भेजता है। 'गोपाल पलटन' को छोड़कर बाकी सेना ने युद्ध करने से मना कर दिया।
- पलायता नामक स्थान पर हुये युद्ध में तात्यां टोपे जीत जाता है व पृथ्वीसिंह को भागना पड़ता है।
- थोड़े दिनों बाद अंग्रेजों की मदद से ही पृथ्वीसिंह झालावाड़ पर पुनः अधिकार कर पाता है।
- पृथ्वीसिंह ने तात्यां टोपे को 5 लाख रुपये भी दिए।
- सित॰ 1857 A.D. में तात्यां टोपे एक बार फिर बांसवाडा में आता है, सलूम्बर का रावत केसरी सिंह चूंडावत तात्या टोपे की मदद करता है।
- बीकानेर के राजा सरदार सिंह ने भी तात्यां टोपे की 10 घुड़सवारों की सहायता दी।
- तात्यां टोपे को नरवर के जंगलो मे 'मानसिंह नरूका' ने गिरफ्तार करवा दिया। अंग्रेजो ने तात्यां टोपे को फांसी दे दी।

• सीकर के एक सामन्त को तात्यां टोपे की शरण देने के आरोप में फांसी दी गयी।

✓ तात्यां टोपे जैसलमेर को छोड़कर राज. की बाकी सब रियासतों में गया था।

टूटती कड़ियां, जुड़ते तथ्य :

→ बीकानेर का महाराजा सरदार सिंह एकमात्र शासक था, जो अपनी रियासत से बाहर जाकर लड़ा था।
(हिसार के 'बाडलू' नामक स्थान पर)
अंग्रेजो ने सरदार सिंह को टिब्बी परगने के (41) गांव दिए थे।
(हनुमानगढ़)

→ जयपुर के सवाई रामसिंह ने भी अंग्रेजो का साथ दिया था।

→ अंग्रेजो के विरूद्ध षड्यंत्र करने वालों को गिरफ्तार कर लिया था
- सादुल्ला खां
- विलायत खां
- उस्मान खां

→ अंग्रेजो ने रामसिंह को 'सितार ए हिन्द' की उपाधि दी व कोटपूतली परगना दिया।

→ अलवर के राजा बनेसिंह के खिलाफ वहां के दीवान फैजल खान ने विद्रोहियों का साथ दिया।

→ धौलपुर के राजा भगवन्त सिंह को विद्रोहियों से मुक्त करवाने के लिए पटियाला से सेना आयी थी।

→ भरतपुर के राजा ने Political Agent मॉरीसन को भरतपुर छोड़ने का सुझाव दिया था। यहां की गुर्जर व मेव जनता

विद्रोहियों के साथ हो गयी थी।

→ बीकानेर के *अमरचन्द बांठिया* 1857 की क्रान्ति में राजस्थान के पहले ऐसे शहीद थे, जिन्हें फांसी दी गयी। ये ग्वालियर के नगरसेठ थे, इन्होनें खजानें का सारे धन क्रांतिकारियो में वितरित कर दिया।

→ सूर्यमल्ल मिश्रण वं बांकीदास ने अंग्रेजो का साथ देने वाले राजाओ की निन्दा की।

राजस्थान में किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन :

- बिजौलिया वर्तमान भीलवाड़ा जिले में स्थित है, तत्कालीन मेवाड़ रियासत का 'अ' श्रेणी का ठिकाणा था।
- राणा सांगा ने अशोक पवांर को ऊपरमाल की जागीर था, और इसका सदर मुकाम बिजौलिया था।
  (खानवा के युद्ध में राणा सांगा की तरफ से अशोक पवांर लड़ता है)
- बिजौलिया में 1897 A.D. से किसान आंदोलन शुरू होता है। यह आंदोलन 'धाकड़' जाति के किसानों द्वारा किया गया।
- इस आंदोलन के मुख्य कारण :
  (i) 84 प्रकार की लाग - बाग (कर)
  (ii) लाटा - कूंता व्यवस्था (खेत में खड़ी फसलों के अनुमान पर)
  (iii) चंवरी कर, तलवार बंधाई कर
  (किसान की बेटी की शादी पर) (नये जागीरदार बनने पर)
- यह आंदोलन मुख्यत: 3 चरणों में विभक्त था

I चरण	→	1897 - 1914	(स्वत: स्फूर्त)
II चरण	→	1914 - 1923	(विजयसिंह पथिक)
III चरण	→	1923 - 1941	(जमनालाल बजाज)

प्रथम चरण (1897 - 1914 A.D.) - नेता : फतेहकरण चारण, ब्रह्मदेव, प्रेमचन्द भील

- बिजौलिया का ठाकुर किशनसिंह था, जिसने प्रजा पर कई तरह के कर लगा रखे थे।
- गिरधारी पुरा नामक एक गांव में एक मृत्युभोज के अवसर पर

किसानों की सभा हुई, साधु सीताराम दास के कहने पर नानजी व ठाकरी पटेल को मेवाड़ महाराणा से मिलने भेजा गया। ये मेवाड़ महाराणा से मिलने में असफल रहे।

- रियासत की तरफ से हामिद खां को ठिकाने की जांच करने के लिए भेजा गया।
- नानजी व ठाकरी पटेल को बिजौलिया ठाकुर ने बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

पहले चरण में इस आंदोलन में अधिक सफलता नहीं मिल पायी थी, अतः यह आंदोलन स्वतः स्फूर्त चलता था।

द्वितीय चरण (1914- 1923 A.D)

- 1906 A.D. में पृथ्वीसिंह बिजौलिया का नया जागीरदार बनता है। व प्रजा पर तलवार बंधाई नामक एक नया कर लगा देता है।

* तलवार बंधाई : किसी जागीरदार की गद्दीनशीनी के समय रियासत द्वारा उससे लिया जाने वाला कर।

- विजय सिंह पथिक, इस चरण में आंदोलन से जुड़ता है।
- 1917 A.D. में 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' की स्थापना की जाती है। मुन्ना पटेल को इसका अध्यक्ष बनाया जाता है।
- मेवाड़ रियासत में 'बिन्दुलाल भट्टाचार्य' की अध्यक्षता में आयोग गठित किया गया।
- A.G.G. हॉलैण्ड के प्रयासों से किसानों व रियासत के बीच समझौता हो जाता है, पर ठिकाने ने इस समझौते को लागू नहीं किया।

विजयसिंह पथिक :

- वास्तविक नाम - भूपसिंह
- बुलन्दशहर का रहने वाला था।
- क्रांतिकारी गतिविधियों में संदिग्ध पाए जाने पर इसे अजमेर के टॉडगढ़ जेल में नजरबंद कर दिया गया।
- यहां से छूटने के बाद चित्तौड़ के ओछड़ी गांव में 'विद्या प्रचारिणी सभा' की स्थापना की।
- 1919 में वर्धा में 'राजस्थान सेवा संघ' की स्थापना की। इसे 1920 A.D. में अजमेर स्थानान्तरित कर दिया गया।
- अजमेर से विजयसिंह पथिक एक 'नवीन राजस्थान' नामक समाचार-पत्र निकालते थे, जिसका नाम बदलकर बाद में तरुण राजस्थान कर दिया गया।
- पुस्तक (विजयसिंह पथिक) —

  'WHAT ARE THE INDIAN STATES'
- विजय सिंह पथिक ने बिजौलिया किसान आंदोलन को कांग्रेस के अधिवेशन में उठाया।

तृतीय चरण (1923 - 1941 A.D.)

- तीसरे चरण में विजयसिंह पथिक इस आंदोलन से अलग हो जाते हैं। 'जमनालाल बजाज' को नेतृत्व सौंपा जाता है।
- जमनालाल बजाज ने हरिभाऊ उपाध्याय को नियुक्त कर दिया।
- माणिक्य लाल वर्मा भी इस आंदोलन से जुड़े हुये थे, अपने 'पंछीड़ा' गीत से किसानों में जोश भरते थे।
- मेवाड़ के प्रधानमंत्री राघवाचारी व राजस्व मंत्री मोहनसिंह मेहता के

प्रयासों से किसानो के साथ समझौता हो गया और उनकी (किसानों) अधिकांश मांगें मान ली गयी।

इस प्रकार 1941 A.D. में यह आंदोलन समाप्त हो गया। इस प्रकार यह सर्वाधिक समय (44 yrs) तक चलने वाला यह अहिंसक आंदोलन था।

(कानपुर)

- <u>गणेश शंकर विद्यार्थी</u> अपने समाचार पत्र '<u>प्रताप</u>' में बिजौलिया किसान आंदोलन को प्रमुखता से महत्त्व देते है।
- बिजौलिया किसान आंदोलन में महिला नेत्रियों की प्रमुख भागीदारी रही।

महिला नेत्रियां –
- अंजना देवी चौधरी
- नारायण देवी वर्मा
- रमा देवी

* 'त्याग भूमि' समाचार पत्र का सम्पादन 'हरिभाऊ उपाध्याय' ने किया इसमें गांधी जी के रचनात्मक कार्यों पर बल दिया गया।

बेगूं किसान आंदोलन

- बेगूं वर्तमान चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है, यह भी मेवाड़ रियासत का 'अ' श्रेणी का ठिकाना था।
- यहाँ का ठाकुर 'अनूप सिंह चूंडावत' था। यहाँ के किसान भी विभिन्न लाग-बागों से परेशान थे। किसानों ने इन करों को कम करने की मांग की। तो ठिकानों व किसानों के बीच समझौता हो गया। पर रियासत ने इस समझौते को अस्वीकार कर दिया व इसे 'बोल्शेविक समझौता' कहा गया।
- रियासत ने 'ट्रेन्च' को मामले की जांच करने के लिए भेजा।
- किसानों ने ट्रेन्च का बहिष्कार किया।
- गोविन्दपुरा गांव में सभा कर रहे किसानों पर ट्रेन्च ने (13) July 1923 को गोली चला दी, रूपा जी व कृपा जी धाकड़ नामक दो किसान शहीद हो गए।
- 1925 A.D. में किसानों की शर्तें मान ली जाती हैं।
- मुख्य नेता - रामनारायण चौधरी

  (उस समय राजस्थान सेवा संघ के सचिव थे)

- विजयसिंह पथिक भी इस आंदोलन से जुड़ा हुआ था।

बूंदी किसान आंदोलन :

- 1920 A.D. में साधु सीताराम दास ने डाबी किसान पंचायत की स्थापना की, जिसका अध्यक्ष 'हरला भड़क' को बनाया गया।
- 2 April 1923 A.D. को सभा कर रहे किसानों पर पुलिस अधिकारी 'इकराम हुसैन' ने गोली चला दी।
- 'नानक जी भील' झंडा गीत गाते हुए शहीद हो गए।

नीमूचणा किसान आंदोलन (अलवर)

- 14 MAY 1925 A.D को नीमूचणा में आंदोलन कर रहे किसानों पर कमाण्डर 'छाजू सिंह' ने गोली चला दी, कई किसान मारे गये।
- 'तरुण राज' समाचार पत्र ने इस खबर को सचित्र प्रकाशित किया।
- महात्मा गांधी ने इसे 'दोहरी डायरशाही' की संज्ञा दी।

भगत आंदोलन :

- यह आंदोलन मुख्यतः भील जनजाति के किसानों द्वारा किया गया था।
- सुरजी भगत व गोविन्द गिरी ने इसे शुरु किया था।
- गोविन्द गिरी ने 1883 A.D. में 'सम्प सभा' की स्थापना की। (आपसी सौहार्द)
- 1903 A.D. में मानगढ़ की पहाड़ी पर सम्प सभा का पहला अधिवेशन हुआ।
- 1913 A.D. में आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को मानगढ़ की पहाड़ी पर जब भीलों की सभा हो रही थी, तब मेवाड़ भील कोर ने पहाड़ी को घेर लिया व गोली चला दी।
- 1500 से अधिक भील मारे गये।
- आज भी उनकी याद में आश्विन शुक्ल पूर्णिमा को मेला लगता है।

* मेवाड़ भील कोर का गठन 1841 A.D. में किया गया था। जिसका सदर मुकाम *खैरवाड़ा* को बनाया गया।

एकी आंदोलन :

- ये भोमट क्षेत्र के भील जनजाति लोगों द्वारा किया गया था, इसलिए भोमट-भील आंदोलन भी कहते हैं।
- चित्तौड़गढ़ के मातृकुण्डिया नामक स्थान से वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को यह आंदोलन शुरू हुआ था।
- मातृकुण्डिया को 'राजस्थान का हरिद्वार' कहते हैं।
- इस आंदोलन के मुख्य नेता मोती लाल तेजावत थे।
- मोती लाल तेजावत मेवाड़ रियासत के 'झाडोल ठिकाणे' के कामदार थे।
- प्रारम्भ में यह आंदोलन झाडोल, कोटडा व गोगुन्दा तहसीलों में शुरू हुआ था। जो बाद में डूंगरपुर, बांसवाड़ा, ईडर, विजयनगर (गुजरात की एक रियासत) आदि रियासतों में फैल गया।
- मोती लाल तेजावत ने मेवाड़ महाराणा के समक्ष 21 सूत्री मांग-पत्र प्रस्तुत किया था, जिसे 'मेवाड़ की पुकार' कहते हैं।
- 1922 A.D. में नीमड़ा (विजयनगर) गाँव में हो रही एक सभा पर पुलिस फायरिंग कर दी गयी थी, इसे 'दूसरा जलियां वाला बाग हत्याकाण्ड' कहते हैं।

मोती लाल तेजावत इस आंदोलन के बाद भूमिगत हो गए, पर 1928 में गांधीजी के कहने पर ईडर (   ) पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

ईडर रियासत ने उन्हें मेवाड़ को सौंप दिया, मेवाड़ की सर्वोच्च न्यायिक संस्था 'महाइन्द्राज सभा' ने ____________ मोती लाल तेजावत से रियासत के विरुद्ध कोई गतिविधि नहीं करने का लिखित आश्वासन मांगा।

• गांधी जी के सहायक माणिलाल कोठारी के हस्तक्षेप से समझौता हुआ।

• 1936 में मोती लाल तेजावत को रिहा कर दिया गया।

मीणा जाति का आंदोलन :

• 1925 में 'आपराधिक जाति अधिनियम' बनाकर मीणा जाति को उसके अन्तर्गत रख दिया गया। 1930 में 'जरायम पेशा' कानून के तहत 25 वर्ष से अधिक उम्र के प्रत्येक मीणा स्त्री -पुरुष की थाने में हाजिरी लगवाना अनिवार्य कर दिया गया।

• 1933 में मीणा क्षेत्रीय महासभा की स्थापना की गयी। व महासभा ने इस कानून को निरस्त करने की मांग की।

• 1944 A.D. में 'मुनि मगन सागर' के नेतृत्व में सीकर के नीमकाथाना में एक मीणा सम्मेलन बुलाया गया और मीणा समाज को उनके गौरवशाली अतीत से अवगत करवाया गया।

• मुनि मगन सागर ने 'मीन पुराण' नामक ग्रन्थ लिखा।

• 1944 A.D. में 'जयपुर मीणा सुधार' समिति की स्थापना बंशीधर शर्मा ने की।

• आजादी के बाद 1952 में जरायम पेशा कानून को रद्द कर दिया गया

• *1946 में जयपुर क्षेत्र के सभी मीणाओं ने स्वेच्छा से चौकीदार पदों से इस्तीफा दे दिया।

दयानन्द सरस्वती और राजस्थान

- 1865 A.D. में दयानन्द सरस्वती सबसे पहले करौली रियासत में राजकीय अतिथि के रूप में रहे।

- 1881 A.D. में दोबारा राजस्थान आए तब कवि राजा श्यामलदास के बुलाने पर उदयपुर गए, तब 'सत्यार्थ प्रकाश' (हिन्दी) का दूसरा भाग उदयपुर के गुलाब बाग में लिखा।
  (सज्जन सिंह ने बनवाया था)

- 1883 A.D. में उदयपुर में *परोपकारिणी* सभा की स्थापना की। महाराणा सज्जन सिंह को इसका अध्यक्ष बनाया गया, कालान्तर में इसे अजमेर स्थानान्तरित कर दिया गया।

- * मेवाड़ में विष्णु लाल पंड्या ने आर्य समाज की स्थापना की।
- राजस्थान में सबसे पहले आर्य समाज की स्थापना अजमेर में हुयी थी।
- 13 Feb. 1881 को अजमेर में वैदिक यन्त्रालय (Printing Press) की स्थापना की गयी, जिसका कार्य वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार करना था।
- भरतपुर में भी आर्य समाज का प्रचार-प्रसार हुआ।

भरतपुर में आर्य समाज के मुख्य कार्यकर्ता -
- मास्टर आदित्येन्द्र
- जुगल किशोर चतुर्वेदी

* जुगल किशोर चतुर्वेदी - मत्स्य संघ के उपप्रधानमंत्री रहे थे, इन्हें 'राज. का नेहरू' भी कहते हैं।

- अजमेर में आर्य समाज के कार्यकर्ता :
  - चांदकरण शारदा
  - हरविलास शारदा

- जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह II, व सरप्रताप भी दयानन्द सरस्वती के करीबी थे।

ऐसा कहा जाता है जसवंतसिंह II की प्रेमिका नन्ही जान ने दयानन्द सरस्वती को जहर दे दिया था, जिससे दयानन्द सरस्वती की अजमेर में मृत्यु हो गयी थी।

प्रजामण्डल आंदोलन

- 1927 A.D. में 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद' की स्थापना की गयी (बम्बई में)
- विजय सिंह पथिक को इसका उपाध्यक्ष बनाया गया।
- 1928 A.D. में 'राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद' का गठन किया गया।
- 1931 A.D. में अजमेर में इसका पहला अधिवेशन हुआ, अध्यक्ष थे - रामनारायण चौधरी

(सुभाष चन्द्र बोस - अध्यक्ष)

- 1938 A.D. के कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में रियासतों (देशी) में चल रहे आंदोलनों को कांग्रेस ने समर्थन दिया।

जोधपुर में प्रजामंडल आंदोलन :

- 1917 A.D. में चांदमल सुराणा ने 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' की स्थापना की।
- 1920 A.D. में जयनारायण व्यास ने 'मारवाड़ सेवा संघ' की स्थापना की। 1920-1921 A.D. में मारवाड़ सेवा संघ ने तौल आंदोलन चलाया था।

(1 तौल - 100 सेर ↓
1 तौल - 80 सेर) कर दिया था

- 1929 A.D. में जयनारायण व्यास ने 'मारवाड़ राज्य लोक परिषद' की स्थापना की। 1931 A.D. में इसका अधिवेशन पुष्कर में हुआ. इसकी अध्यक्षता 'चांदकरण शारदा' ने की। इस अधिवेशन में काका कालेलकर व कस्तूरबा गांधी आए थे।

- 1931 में जयनारायण व्यास ने 'Marwar Youth league' की स्थापना की।
- 1932 A.D. में जोधपुर में स्वाधीनता दिवस मनाया गया। छगन राज चौपासनी वाला ने तिरंगा झंडा फहराया।
- 1934 A.D. में 'भंवरलाल सर्राफ' ने जोधपुर प्रजामंडल की स्थापना की।
- जोधपुर रियासत ने जयनारायण व्यास के जोधपुर में घुसने पर पाबंदी लगा दी।
- 1937 A.D. में बीकानेर महाराजा गंगा सिंह ने जोधपुर के प्रधानमंत्री 'डोनाल्ड फील्ड' को पत्र लिखकर जयनारायण व्यास के प्रवेश सम्बन्धी लगी पाबन्दी को हटाने की मांग की।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान 19 ~~July~~ June 1942 को जेल में भूख हड़ताल कर रहे बालमुकुन्द बिस्सा की मृत्यु हो गयी, बालमुकुन्द बिस्सा ने जोधपुर में *'जवाहर खादी भण्डार'* की स्थापना की।

* बालकृष्ण कौल ने अजमेर में जेलों में कुव्यवस्था के विरुद्ध हड़ताल की थी।

- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जयनारायण व्यास सिवाणा किले में नजरबंद किया गया।
- जयनारायण व्यास की पुस्तकें :
  - (1) मारवाड़ की अवस्था
  - (2) पीपा बाई की पील

समाचार-पत्र
- (1) अखण्ड भारत (Hindi) → Published from bombay.
- (2) आगीबाण (Rajasthani) — I Political Newspaper
- (3) पीप (English)

डाबड़ा कांड : (13 March 1947)

डीड़वाना परगने के डाबड़ा गांव में एक किसान मोतीलाल के घर पर सभा हो रही थी, पुलिस ने फायरिंग कर दी। 12 लोग मारे गये।

- मथुरा दास माथुर घायल हो गये।

बीकानेर में प्रजामंडल आंदोलन :

- कन्हैयालाल ढूंढ व स्वामी गोपालदास ने 1913 में चुरू में 'सर्वहितकारिणी सभा' की स्थापना करी।
- कन्हैयालाल ढूंढ ने 'कन्या विद्यालय' व 'कबीर पाठशाला' (दलित शिक्षा) खोलीं।
- 1930 A.D. में चुरू के धर्मस्तूप पर तिरंगा फहरा दिया।

महाराजा (बीकानेर) गंगासिंह जब गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लन्दन गए थे तब 'चन्दनमल बहड़ व स्वामी गोपालदास' ने 'बीकानेर एक दिग्-दर्शन' नामक पत्रिकाएं बंटवायी। इन पर 1932 A.D. में बीकानेर षड्यंत्र केस चलाया गया।

- 1935 A.D. में वैद्य मघाराम ने कलकत्ता में बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना की।

1942 A.D में 'रघुवर दयाल गोयल' ने 'बीकानेर राज्य लोक परिषद्' की स्थापना की।

• 26 Oct. 1944 को बीकानेर दमन विरोधी दिवस बनाया गया।

• 1 July 1946 को रायसिंह नगर में जुलूस निकाल रहे प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं पर फायरिंग कर दी गयी। बीरबल सिंह नामक एक युवक मारा गया।

इसी बीरबल सिंह के नाम पर इन्दिरा गांधी नहर की जैसलमेर शाखा को 'बीरबल शाखा' नाम दिया गया।

• बीकानेर प्रजामंडल के तहत ही दुधवा-खारा (चूरू) आंदोलन चलाया गया।

मेवाड़ प्रजामंडल :

• 1938 A.D. में स्थापना। (24 April)
• बलवंत सिंह मेहता अध्यक्ष
• भूरेलाल बया (उपाध्यक्ष) – सराडा किले में नजरबन्द किया गया।
• माणिक्य लाल वर्मा (महामन्त्री)
• ~~माणिक्य लाल वर्मा~~ मेवाड़ प्रजामंडल की गतिविधियों पर रियासत ने पाबन्दी लगा दी। अतः माणिक्य लाल वर्मा ने अजमेर से इसका संचालन किया।
• 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तक माणिक्य लाल वर्मा ने लिखी।
• 1941 A.D. में मेवाड़ प्रजामंडल का पहला अधिवेशन 'उदयपुर' में हुआ।
• माणिक्यलाल वर्मा इसके अध्यक्ष थे।
• जे.बी. कृपलानी व विजयलक्ष्मी पंडित इसमें भाग लेने के लिए उदयपुर आए। (U.N.O. की महासभा की पहली महिला अध्यक्ष)

- 1946 A.D. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् का अधिवेशन उदयपुर में हुआ। 'जवाहर लाल नेहरू' व 'शेख अब्दुल्ला' इसमें भाग लेने के लिए उदयपुर आए।

- भारत छोड़ो आंदोलन में माणिक्य लाल वर्मा की पत्नी नारायणी देवी वर्मा अपने 6 महीने के पुत्र दीनबन्धु को साथ लेकर जेल गयी।
- प्यारे लाल बिश्नोई की पत्नी भगवती बिश्नोई भी जेल गयी थी।
- भीलवाड़ा भी मेवाड़ प्रजामंडल की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र था।
- भीलवाड़ा के रमेश चन्द्र व्यास मेवाड़ प्रजामंडल के पहले सत्याग्रही थे
- नाथद्वारा भी मेवाड़ प्रजामंडल का अन्य केन्द्र था।

जयपुर प्रजामंडल

- 1931 — कर्पूर चन्द पाटनी ने इसकी स्थापना की
- 1938 A.D. — जमना लाल बजाज ने इसका पुनर्गठन किया।
  और चिरंजी लाल शर्मा को इसका अध्यक्ष बनाया।
  (राजा - मानसिंह)
- 1942 A.D. में जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल व जयपुर प्रजा मंडल के नेता हीरालाल शास्त्री के बीच एक समझौता हुआ, जिसे 'जेन्टलमैन एग्रीमेन्ट' कहा गया।
  इसके तहत जयपुर प्रजामंडल ने यह कहा कि वह भारत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लेगा।

(मिर्जा इस्माइल - आधुनिक जयपुर का निर्माता)

• जयपुर प्रजामंडल के असंतुष्ट कार्यकर्ताओ ने बाबा हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में एक आजाद मोर्चा का गठन किया। व इस आजाद मोर्चा ने भारत छोडो आंदोलन में भाग लिया।

आजाद मोर्चा के नेता – { रामकरण जोशी
दौलतमल भंडारी
गुलाबचन्द कासलीवाल

गुलाबचन्द कासलीवाल के घर को कार्यालय बनाया गया।

कोटा प्रजामंडल : (1939)

• नयनूराम शर्मा और पंडित अभिन्न हरि ने 1939 A.D. में कोटा प्रजामंडल की स्थापना की थी।

* ~~नयनूराम शर्मा ने 1934 में हाडौती प्रजामंडल की स्थापना की।~~

• कोटा प्रजामंडल का पहला अधिवेशन मांगरोल (बारां) में हुआ था।

• 1941 में नाथूलाल जैन के नेतृत्व में प्रजामंडल के सदस्यों ने कोटा के प्रशासन पर कब्जा कर लिया था।

• नयनूराम शर्मा ने कोटा राज्य में बेगार विरोधी आंदोलन चलाया।

बूंदी प्रजामंडल : (1931)

• ऋषिदत्त मेहता व कांतिलाल ने बूंदी प्रजामंडल की स्थापना की थी। ऋषिदत्त मेहता ने 'बूंदी राज्य लोक परिषद' की स्थापना भी की थी।

* ऋषिदत्त मेहता ने 1923 में ब्यावर से 'राजस्थान' नामक साप्ताहिक समाचार पत्र निकाला।

जैसलमेर प्रजामंडल : (15 Dec. 1945)

- जैसलमेर प्रजामंडल की स्थापना मीठालाल व्यास ने जोधपुर में की।
- प्रजामंडल के सदस्य सागरमल गोपा को जेल में जलाकर हत्या कर दी गयी।

अलवर प्रजामंडल : (1938)

- इसकी स्थापना हरिनारायण शर्मा ने की, इसके पहले अधिवेशन के अध्यक्ष भवानी शंकर शर्मा थे।
- अलवर प्रजामंडल ने भी भारत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लिया था।

* हरिनारायण शर्मा ने वाल्मिकी संघ, आदिवासी संघ व अस्पृश्यता निवारण संघ स्थापित किए।

धौलपुर प्रजामंडल : (1936)

- स्थापना - कृष्णदत्त पालीवाल ने की।
- धौलपुर प्रजामंडल में - अप्रैल 1947 में प्रजामंडल के सदस्यों पर फायरिंग की गयी। छत्रसिंह व पंचम सिंह शहीद हो गए।

(तसीमो गांव में अपना अधिवेशन मनाते समय)

डूंगरपुर प्रजामंडल : (26 जनवरी, 1944)

- स्थापना : भोगीलाल पांड्या व हरिदेव जोशी ने की।
- रास्तापाल कांड – 19 June 1947

सेवा संघ द्वारा स्थापित स्कूल को बंद करवाने गये रियासत के सैनिकों ने एक शिक्षक नानाभाई की हत्या कर दी व दूसरे शिक्षक सेंगाभाई को गाड़ी के पीछे बांधकर घसीट रहे थे, तब एक कालीबाई नामक एक वीर बालिका ने अपनी हंसिया से उन रस्सियों को काट दिया, पर खुद पुलिस की गोलियों की शिकार हो गयी।

- डूंगरपुर में गैप सागर (तालाब) के पास कालीबाई की प्रतिमा लगी हुयी है।
- राज० सरकार बालिका शिक्षा के क्षेत्र में कालीबाई के नाम से पुरस्कार देती है।

- पूनावाड़ा कांड –
- ~~शिवराम भील शहीद हुए थे।~~

* भोगीलाल पांड्या – हरिजन सेवा समिति (1938)

- इस प्रजामंडल में रियासती अन्यायपूर्ण नीतियों के विरूद्ध जनजागृति हेतु 'प्रयाग सभाओं' का आयोजन किया गया।
- April, 1946 – पहला अधिवेशन डूंगरपुर में – इसमें बाहर के राज्यों से हीरालाल शास्त्री, मोहनलाल सुखाड़िया, युगलकिशोर चतुर्वेदी आदि नेताओं ने भाग लिया।

बांसवाडा प्रजामंडल : (दिस. 1945)

- भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी ने स्थापना की थी।
- भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी बम्बई से 'संग्राम' नामक समाचार पत्र निकालते थे।
- इस प्रजामंडल में एक महिला मंडल का गठन "विजया बहिन भावसार' ने किया था।

शाहपुरा प्रजामंडल : (18 April, 1938)

- स्थापना - लादूराम व्यास व रमेश चन्द्र ओझा
- शाहपुरा पहली रियासत थी, जिसमें पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना की गयी (गोकुल चंद असावा के नेतृत्व में)
- शाहपुरा के राजा 'सुदर्शन देव' ने प्रजामंडल को अपना समर्थन दिया।

झालावाड़ प्रजामंडल : (25 नवम्बर, 1946)

- स्थापना - मांगीलाल भव्य ने की
- झालावाड़ में स्वंय राजराणा हरिश्चन्द्र (राजा) के नेतृत्व में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना की गयी।

* झालावाड़ के राजराणा राजेन्द्र सिंह ने दलित उद्धार के कार्य किए थे।

भरतपुर प्रजामंडल : (March, 1938)

- स्थापना – जुगल किशोर चतुर्वेदी (उपाध्यक्ष) ने रेवाड़ी में इसकी स्थापना की।
- अध्यक्ष – गोपी लाल यादव
- जुगल किशोर चतुर्वेदी के घर पर भरतपुर राज्य प्रजामंडल की स्थापना हुयी।

सिरोही प्रजामंडल : (22 Jan. 1939)

- स्थापना - गोकुल भाई भट्ट ने की थी।

प्रतापगढ़ प्रजामंडल : (1945)

- स्थापना – ठक्कर बापा व अमृतलाल पायक ने की।

करौली प्रजामंडल : (1938)

- स्थापना - त्रिलोक चन्द माथुर ने की। (राज्य सेवक संघ के अध्यक्ष)

किशनगढ़ प्रजामंडल : (1939)

- स्थापना - कांतिलाल चौथानी व जमाल शाह ने की। (की अध्यक्षता)

राजस्थान का एकीकरण

(V.K. Menon - सचिव)

- 5 July 1947 को रियासती सचिवालय की स्थापना की गयी।
- रियासती सचिवालय के अनुसार वे रियासतें जिनकी आय 1 करोड़ से अधिक हो, व जनसंख्या 10 लाख से अधिक हो, अपना स्वतं अस्तित्व रख सकती है।
- उस समय राजस्थान में ऐसी 4 रियासतें थी
  1) जयपुर
  2) जोधपुर
  3) उदयपुर
  4) बीकानेर
- 16 जुलाई 1947 को धारा - 8 के तहत देशी रियासतों पर से ब्रिटिश सर्वोच्चता समाप्त कर दी गयी। (स्वतंत्रता अधिनियम के तहत)
- आजादी / एकीकरण के समय राज॰ में 19 रियासतें, 3 ठिकाने थे।
  1) लावा
  2) नीमराणा
  3) कुशलगढ़
- राजस्थान के एकीकरण के सबसे पहले प्रयास 1939 में लॉर्ड लिनलिथगो ने किए।
- कोटा महाराव न भीमसिंह ने कोटा, बूंदी व झालावाड़ को मिलाकर हाड़ौती संघ बनाने का प्रावधान दिया।
- मेवाड़ महाराणा भूपाल सिंह ने राज॰, गुजरात व मालवा की रियासतों को मिलाकर राजस्थान यूनियन बनाने का प्रस्ताव रखा, इसके लिए 25, 26 June 1947 को अधिवेशन भी बुलाया। इसमें 22 राजाओं ने भाग लिया, पर जयपुर, जोधपुर और बीकानेर के रियासतों के रुचि नहीं लेने के कारण यह निर्णय फलीभूत नहीं हो सका।

- डूंगरपुर महारावल लक्ष्मणसिंह ने डूंगरपुर, बांसवाड़ा व प्रतापगढ़ को मिलाकर वागड़ संघ बनाने का प्रस्ताव रखा।
- जयपुर महाराजा मानसिंह II ने भी ऐसे ही प्रयास किए।

प्रथम चरण ;

मत्स्य संघ का निर्माण ;

- भरतपुर, धौलपुर, अलवर व करौली रियासतों को मिलाकर मत्स्य संघ बनाया गया।
- मत्स्य संघ का नामकरण K.M. मुंशी ने रखा
- मत्स्य संघ में

धौलपुर महाराजा उदयभान सिंह — राजप्रमुख

करौली महाराजा गणेशपाल सिंह — उपराजप्रमुख

अलवर (तेजसिंह - राजा) — राजधानी

भरतपुर (बृजेन्द्रसिंह - राजा) — उद्घाटन

- मत्स्य संघ का उद्घाटन 18 March 1948 को भरतपुर के किले में केन्द्रीय खनिज मंत्री N.V. गाडविल ने किया।
- शोभाराम कुमावत (अलवर के) को मत्स्य संघ का प्रधानमंत्री बनाया गया।
- जुगल किशोर चतुर्वेदी को उपप्रधानमंत्री बनाया गया।
- मत्स्य संघ में नीमराणा ठिकाणे को भी इसमें शामिल किया गया।

द्वितीय चरण :

राजस्थान संघ का निर्माण :

- 9 रियासत + 1 ठिकाणे को मिलाकर राजस्थान संघ को बनाया गया
- कोटा, बूंदी, झालावाड़ + प्रतापगढ़, किश डूंगरपुर, बांसवाडा, किशनगढ़, टोंक, शाहपुरा + कुशलगढ़
- कोटा - राजधानी

  कोटा महाराजा भीमसिंह — राजप्रमुख

  बूंदी महाराजा बहादुरसिंह - उपराजप्रमुख

  डूंगरपुर के लक्ष्मणसिंह - कनिष्ठ उपराज प्रमुख

  शाहपुरा के गोकुल लाल असावा - प्रधानमंत्री

- 25 March 1948 को 'N.V. गाडगिल' ने कोटा में उद्घाटन किया।

NOTE:

* शाहपुरा व किशनगढ़ दो ऐसी रियासतें थी, जिन्हें तोपों की सलामी का अधिकार नहीं था।
* बांसवाडा महारावल चन्द्रवीर सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते हुये कहा था कि मैं अपने DEATH WARRANT पर हस्ताक्षर कर रहा हूं।

पंचम -चरण :

संयुक्त वृहद राजस्थान :

- वृहद राजस्थान + मत्स्य संघ (Shankar deo committee)
- 15 May 1949
- शोभा राम कुमावत को शास्त्री मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया गया।

षष्ठम् -चरण :

- संयुक्त वृहद राज. + सिरोही (आबू व देलवाड़ा को छोड़कर)
- 26 Jan. 1950

हीरालाल शास्त्री - पहले मनोनीत मुख्यमंत्री

Note:

अजमेर मेरवाड़ा एक केन्द्र शासित प्रदेश था, यहाँ 30 सदस्यों की एक 'धारा सभा' थी, जिसके मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय थे।

सप्तम् चरण :

- 'फैजली अली' की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन किया गया था (तीन सदस्यीय)
  - के. एम पणिक्कर (बीकानेर की तरफ से संविधान सभा में जाने वाले सदस्य)
  - हृदयनाथ कुंजरू
- इसकी सिफारिशों के आधार पर 1 नवम्बर 1956 को अजमेर-मेरवाड़ा का राजस्थान में विलय कर दिया गया।
- हरिभाऊ उपाध्याय ने इस विलय का विरोध किया।
- अजमेर को राजस्थान का 26वां जिला बनाया गया।
- कोटा का सिरोंज क्षेत्र मध्यप्रदेश को दे दिया गया और मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले का 'सुनेल टप्पा' झालावाड़ जिले में मिला दिया गया।
- इस समय राज्य के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया थे।
- राजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया।
- सरदार गुरुमुख निहालसिंह को राजस्थान का पहला राज्यपाल बनाया गया।
- आबू व देलवाड़ा को भी राजस्थान में मिला लिया गया।

राजस्थान के लोक-देवता

"पाबू हड़बू रामदे, मांगलिया मेहा।
पांच्यू पीर पधारज्यो, गोगा जी जेहा (जेहा)।।"

- राज. के पांच पीर;
  - पाबू जी
  - हड़बू जी
  - मेहा जी
  - रामदेव जी
  - गोगा जी

(1) पाबू जी :

- पाबू जी का जन्म, जोधपुर के राजा राव चूहड़ के छोटे भाई धांधल के घर हुआ था।
- इनकी माता का नाम कमला दे था।
- पाबू जी को लक्ष्मण का अवतार कहा जाता है।
- इनका जन्म कोलूमण्ड गाँव में हुआ था।
- पाबू की शादी अमरकोट के राजा सूरजमल सोढा की पुत्री फूलम दे/ 'सुप्यार दे' के साथ हुयी थी।
- इस शादी के लिए जाते समय पाबू देवल-चारिणी महिला की केसर कालमी घोडी लेकर जाता है।
- देवल चारिणी की गायें जायल का जींदराव खिंची चुरा कर ले गया था पाबू अपने वचनों के मुताबिक फेरो के बीच से ही उठकर देवल चारणी की गायें बचाने के लिए आए।
- पाबू जींदराव खिंची से लड़ता हुआ मारा गया।
- चैत्र कृष्ण अमावस्या को कोलूमण्ड में पाबू जी का मेला भरता है।
- पाबू जी को ऊंटों के देवता व प्लेग रक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है।

- ऊंट पालने वाली राईका / रैबारी जाति इन्हें अपना आराध्य देव मानती है।
- चाँदा व डामा पाबू जी के दो प्रमुख सहयोगी थे।
- आशिया मोड़जी ने 'पाबू प्रकाश' नामक पुस्तक लिखी है।
- पाबू जी की फड़ भील जाति के भोपे रावणहत्था वाद्ययंत्र के साथ बांचते है।
- पाबू जी की पूजा भालों लिए हुये अश्वारोही के रूप में की जाती है।

(2) रामदेव जी :

- रामदेव जी का जन्म उंडूकाश्मीर गाँव (बाड़मेर) में हुआ था,
- इनके पिता का नाम अजमाल था. अजमाल को मल्लीनाथ जी ने पोकरण की जागीर दी थी।
- रामदेव जी के गुरु का नाम बालिनाथ था।
- हरजी भाटी इनके एक प्रमुख सहयोगी थे।
- डाली बाई नामक एक दलित महिला रामदेव जी की धर्म बहिन थी. इसने रामदेव जी से एक दिन पहले जीवित समाधि ली थी।
- रामदेव जी ने रूणीचा नामक गाँव बसाया, वहाँ एक रामसरोवर बनवाया। इसी तालाब के किनारे रामदेव जी ने जीवित समाधि ली थी।
- रामदेव जी एक समाज सुधारक थे, उन्होंने जात-पात का भेदभाव मिटाने व दलित उद्धार का कार्य किया।

- रामदेव जी एक अच्छे कवि थे और इनका ग्रंथ है –
  चौबीस वाणियाँ।
- रामदेव जी ने कामड़िया पंथ शुरू किया था। कामड़िया पंथ के लोग तेरह – ताली नृत्य करते हैं।
- रामदेव जी के मेघवाल भक्तों को रिखिया कहते है।
- रामदेव जी का मेला भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से एकादशी तक लगता है।
- मुसलमान रामदेव जी को रामसा पीर के रूप में मानते हैं।
- रामदेव जी को पीरों का पीर कहते हैं।
- साम्प्रदायिक सौहार्द के देवता माने जाते हैं।
- रामदेव जी के घोड़े का नाम – ('लीली' / लीला)
- रामदेव जी के पगले पूजे जाते हैं।

(3) <u>गोगाजी</u> : (पत्नी का नाम – केलम दे)

- जन्म – चुरू जिले के ददरेवा गांव में हुआ।
- इन्होंनें महमूद गजनवी के साथ युद्ध किया था, महमूद गजनवी ने इन्हे जाहरपीर (साक्षात पीर) कहा।
- अपने मौसेरे भाईयो अरजन – सरजन के खिलाफ गायों की रक्षा के लिए लड़ते हुए हनुमानगढ़ (गोगामेड़ी) नामक स्थान पर इनकी मृत्यु हुयी। (वर्णन – गोगाजी रा रसावला – मेहा जी बीठू)
- ददरेवा व गोगामेड़ी दोनों ही स्थानों पर भाद्रपद कृष्ण नवमी को इनका मेला भरता है।
- गोगाजी को साँप रक्षक देवता के रूप में पूजा जाता है।
- गोगाजी का मंदिर (थान) खेजड़ी वृक्ष के नीचे बनाया जाता है।

- किसान हल जोतने से पहले नौ गांठो वाली गोगा राखड़ी बांधते है।
- ददरेवा के मंदिर को ~~धुरमेड़ी~~ शीर्षमेड़ी व गोगामेड़ी के मंदिर को ~~शीर्ष~~ धुरमेड़ी मेड़ी कहते है।
- गोगामेड़ी वाला मन्दिर मकबरा शैली में बना हुआ है, इसके शीर्ष पर बिस्मिल्लाह लिखा हुआ है।
- इस मंदिर का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के महाराणा गंगा सिंह ने बनवाया था।
- गोगा जी को मुसलमान 'पीर' के रूप में मानते है।

(4) हड़बू जी :

- ये सांखला राजपूत थे, रामदेव जी के मौसेरे भाई थे।
- जन्म - नागौर (भूंडेल)(गांव) में
- इन्होनें राव जोधा को मंडोर विजय का आशीर्वाद दिया व एक कटार भेंट की, इसलिए राव जोधा ने मंडोर विजय के बाद इन्हें 'बेंगटी' गांव दिए, जहां इनका मुख्य मंदिर बना हुआ है।
- इस मंदिर का निर्माण जोधपुर महाराणा अजीत सिंह ने करवाया।
- हड़बू जी अपनी बैलगाड़ी से गायों के लिए चारा लाते थे।
- इसलिए मंदिर में इनकी बैलगाड़ी की पूजा की जाती ~~थी~~ है।
- 'शगुन विचार ग्रन्थ' - हड़बू जी ने लिखा

(5) मेहा जी :

- जोधपुर जिले में ओसियाँ के निकट बापणी गांव में इनका मुख्य मंदिर है, कृष्ण जन्माष्टमी को इनकी पूजा की जाती है।
- इनके घोड़े का नाम किरड़ काबरा है।
- इनके भोपों की वंशवृद्धि नहीं होती।

(6) तेजाजी :

- इनका जन्म नागौर जिले के खड़नाल गांव में एक जाट परिवार में हुआ था, इनकी पत्नी का नाम 'पेमल' दे था।
- लाछा गुर्जरी की गायों को बचाने के लिए तेजाजी सुरसुरा (अजमेर) गांव में शहीद हो गये।
- इन्हें काटने वाले सांप का नाम 'बासक' था।
- भाद्रपद शुक्ल दशमी को परबतसर (नागौर) में तेजाजी का पशु मेला भरता है।
- तेजाजी को 'काला - बाला' का देवता कहते हैं।
- किसान हल जोतते हुए तेजा गाता है।
- 7 December 2010 को तेजाजी पर डाक टिकट जारी किया गया।
- तेजाजी की घोड़ी का नाम - लीलण
- तेजाजी के भोपों को घोड़ला कहते हैं।
- तेजाजी की बहिन 'बुंगरी माता' की भी खड़नाल में पूजा की जाती है।

(तेजाजी लिख सार)

(पेमल दे , तेजाजी के साथ सती हुई थी।)

(7) देवनारायण जी :

पिता का नाम - सवाई भोज
माता का नाम - साढ़ू
पत्नी का नाम - पीपल दे (धार नरेश जयसिंह की पुत्री)

- देवनारायण बगड़ावत गूर्जर परिवार से सम्बन्धित थे।
- आसींद (भीलवाड़ा), देवमाली (अजमेर) में इनके मुख्य पूज्य स्थल हैं।
- इनके मंदिर में प्रतिमा के स्थान पर ईंटों की पूजा की जाती है।
- नीम के पत्ते चढ़ाये जाते हैं।
- देवनारायण जी की फड़ गूर्जर जाति के भोपे 'जन्तर' वाद्य के साथ पढ़ते (बांचते) हैं।
- देवनारायण जी की फड़ सभी लोकदेवताओं में सबसे लम्बी फड़ है। जो वर्तमान में जर्मनी के म्यूजियम में रखी हुयी है।
- ~~लक्ष्मी~~ कुमारी ~~चूंडावत~~ चूण्डावत ने 'बगड़ावत' नामक कहानी लिखी।
- देवनारायण जी पर डाक-टिकट जारी किया गया है।
- भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को मेला भरता है।

(8) मल्लीनाथ जी :

- मारवाड़ के राजा
- राजधानी - मेवानगर
- पिता का नाम - राव सलखा
- गुरु का नाम - उगम सी भाटी

• बाड़मेर के तिलवाड़ा गांव में होली के दूसरे दिन मल्लीनाथ पशु मेला लगता है। (15 दिन तक मेला भरता है)

• पत्नी का नाम – रूपा दे (ये भी लोकदेवी हैं, इनका मंदिर तिलवाडा के पास मालाजाल गांव में बना हुआ है)

तल्लीनाथ जी :

• वास्तविक नाम – गांगदेव राठौड
• शेरगढ़ (जोधपुर) के राजा
• पांचोटा (जालौर) में इनका मुख्य मंदिर है।
• इन्हें ओरण का देवता माना जाता है।

देव बाबा :

• नंगला जहाज (भरतपुर) में मुख्य मंदिर है।
• भाद्रपद शुक्ल पचंमी और चैत्र शुक्ल पचंमी को इनकी पूजा की जाती है।
• देव बाबा पशु चिकित्सक थे।
• इनको खुश करने के लिए सात ग्वालों को भोजन करवाना होता है।
• पशुपालक समाज इन्हें अपना आराध्य देव मानता है।

बिग्गा जी :

- बीकानेर के रीड़ी गांव में एक जाट परिवार में जन्म हुआ।
- गायों की रक्षा के लिए लड़ते हुए मारे गये।
- जाखड़ समाज इन्हें अपना कुलदेवता मानते हैं।

जुन्झार ~~हरिराम~~ जी :

- सीकर जिले के इमलोहा गांव में जन्म हुआ।
- स्यालोदड़ा गांव में गायों की रक्षा करते हुए मारे गये।
- स्यालोदड़ा गांव में 5 पत्थर की मूर्तियां लगी हुयी हैं।
  ↓
  (3 ~~हरिराम~~ जुन्झार जी के भाई, 1 दुल्हा, 1 दुल्हन)

झरड़ा जी :

- पाबू जी के भतीजे थे
- कोलूमण्ड (जोधपुर) व शिंभूदड़ा (बीकानेर) में इनके मुख्य मंदिर हैं।
- झरड़ा जी का एक अन्य नाम 'रूपनाथ' भी मिलता है।
- हिमाचल प्रदेश में बालकनाथ के रूप में पूजा की जाती है।

खेतला जी :

- मुख्य मंदिर – सोनाणा (पाली) में
- हकलाने वाले बच्चों का इलाज किया जाता है।

मामा देव :

- इन्हें बरसात का देवता कहा जाता है।
- इनके मंदिर नहीं होते है, बल्कि गांव के बाहर इनके तोरण की पूजा की जाती है।
- भैंसे की बलि दी जाती है।

आलम जी :

- धोरीमन्ना (बाड़मेर) में इनका मेला भरता है।
- धोरीमन्ना को 'घोड़ों का तीर्थस्थल' कहते हैं।

वीरफत्ता जी :

- सांथू (जालौर) गांव में इनका मुख्य मंदिर है।
- गायों की रक्षा करते हुए मारे गये।
- मेला – सांथु गांव में भादवा सुदी को (भाद्रपद)

हरिराम
सोरड़ा जी :

- नागौर के सोरड़ा गांव में इनका मंदिर है।
- सांप की बांबी की पूजा की जाती है।

डूंगजी - जवाहरजी ;

- सीकर जिले के बाठोठ -पाटोदा गांव के थे।
- अमीरों को लूटकर गरीबों में उनका धन वितरित कर दिया करते थे।
- अंग्रेजों ने डूंगर सिंह को पकड़कर आगरा जेल में डाल दिया।
- आगरा जेल से डूंगर सिंह को उनके भतीजे जवाहर सिंह और उनके दो सहयोगी करणा मीणा और लोटा जाट छुडाकर लाए।

छूटने के बाद डुंगरसिंह ने अंग्रेजो की नसीराबाद छावनी लूट ली।

- अंग्रेजो ने इन्हें पकड़ने की कोशिश की, उस समय राजस्थान का A.G.G. 'सदरलैंड' था।
- जवाहर सिंह को बीकानेर महाराजा रत्नसिंह और डुंगर सिंह को जोधपुर महाराजा तख्तसिंह ने शरण दी।
- शेखावाटी क्षेत्र में ये लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं।

* बीकानेर क्षेत्र में 'पेमा बावरी' नामक व्यक्ति ने भी अंग्रेजो को तंग किया।

राजस्थान की लोक देवियां

करणी-माता :

- जोधपुर के सुआप गांव में इनका जन्म हुआ।
- इनके पिता का नाम मेहा जी था।
- करणी माता के बचपन का नाम 'रिद्धु बाई' था।
- इन्होंनें देशनोक गांव बसाया, जहाँ इनका मुख्य मंदिर बना हुआ है।
- मंदिर में अत्यधिक संख्या में चूहे होने के कारण इन्हें चूहों वाली देवी कहा जाता है।
- इन चूहों को 'काबा' कहा जाता है। सफेद काबे के चूहे के दर्शन को शुभ माना जाता है।
- 'चील' को करणी माता का प्रतीक माना जाता है।
  ↓ 'संवली' (स्थानीय भाषा में)
- राव बीका ने बीकानेर की स्थापना करणी माता के आशीर्वाद से की थी, इसलिए बीकानेर के राठौड़ों की इष्ट देवी करणी माता को माना जाता है।
- जोधपुर के मेहरानगढ़ किले की नींव करणी माता ने रखी थी।
- मुख्य मंदिर से कुछ दूरी पर एक अन्य मंदिर स्थित है, जिसे 'नेहड़ी जी' कहते हैं।
- करणी माता स्वयं तेमड़ेराय माताजी की पूजा करती थी। तेमडेराय का मंदिर भी देशनोक में बना हुआ है। इस तेमडेराय मंदिर में करणी माता की शादी का तोरण, त्रिशूल और एक संदूक रखा हुआ है। (पति का नाम - देपा जी)
- चैत्र और आश्विन नवरात्रों में करणी माता का मेला लगता है।
- देशनोक स्थित वर्तमान मंदिर का स्वरूप बीकानेर महाराजा गंगासिंह ने बनवाया था।
- करणी माता को दाढ़ी वाली डोकरी कहते हैं। (151 साल)
- चैत्र व आश्विन शुक्ल सप्तमी को इनका प्रमुख दिन माना जाता है।

नागणेची ;

- इनका मुख्य मंदिर नागाणा (बाड़मेर) में बना हुआ है।
- राव चूहड़ कर्नाटक से ये मूर्ति लेकर आया था।
- नागणेची माता राठौड़ों की कुल देवी है।
- बीकानेर में भी नागणेची माता का मंदिर है, जिसमें 18 हाथों वाली नागणेची की प्रतिमा लगी हुयी है, जो राव बीका ने लगवायी था।
- अन्य नाम – { राठेश्वरी, पंखिनी }
- नागणेची के भक्त नाग व नीम को पवित्र मानते हैं।

(3) जीण माता

- सीकर जिले के रैवासा गाँव में इनका मुख्य मंदिर है।
- इनके भाई का नाम हर्ष था, जिनका मंदिर भी पास की पहाड़ियों पर बना हुआ है।
- जीण माता का मंदिर चौहान शासक पृथ्वीराज I के सामन्त 'हट्टड़ मोहिल' ने बनवाया था।
- औरंगजेब ने भी जीण माता के 'छत्र' चढ़ाया था।
- जीण माता को मधुमक्खियों की देवी भी कहते हैं।
- जीण माता के ढाई प्याले शराब चढ़ाये जाते हैं।
- जीण माता के दीपक का घी आज भी केन्द्र सरकार द्वारा भेजा जाता है।

* जीण माता का लोकगीत सबसे लम्बा है।

- प्रतिवर्ष चैत्र व आश्विन मास के नवरात्रों में जीण माता का मेला लगता है।

जमवाय माता

- जयपुर के कछवाहों की कुल देवी है।
- इनका मंदिर दुल्हराय ने जमवा रामगढ़ में बनवाया था।
- जमवाय माता को अन्नपूर्णा माता भी कहते हैं।

आशापुरा माता

- चौहानों एवं बिस्सा ब्राह्मणों की कुलदेवी है।
- नाडोल (पाली) एवं मोदरा (जालौर) में इनके मुख्य मंदिर हैं।
- इनकी पूजा करते समय महिलाएं घूंघट निकालती हैं।

शीतला माता

- चाकसू (जयपुर) में इनका मुख्य मंदिर है।
- इस मंदिर का निर्माण जयपुर के सवाई माधोसिंह I ने करवाया था।
- यह एक मात्र ऐसी देवी है, जिनकी खंडित प्रतिमा की पूजा की जाती है।
- 'चैत्र कृष्ण अष्टमी' को यहाँ गधों का मेला भरता है।
- शीतला माता का वाहन गधा एवं पुजारी कुम्हार होता है।
- चैत्र कृष्ण अष्टमी को इनको बासी भोजन का प्रसाद चढ़ाया जाता है।
- इन्हें चेचक की देवी भी कहते हैं।
- बांझ स्त्रियां संतान प्राप्ति के लिए शीतला माता की पूजा करती हैं।

जोधपुर के ~~पृथ्वीसिंह~~ विजयसिंह के पुत्र ~~विजयसिंह~~ सरदार सिंह की चेचक से मृत्यु हो गयी थी। अतः उसने शीतला माता की मूर्ति पहाड़ों में फिकवा दी थी। तब से इनकी खंडित प्रतिमा की पूजा की जाती है।

त्रिपुर सुन्दरी ;

- इनका मंदिर तलवाड़ा (बांसवाड़ा) में है।
- इन्हें 'तुरताई माता' भी कहते हैं।
- 'लुहार' जाति के लोग इन्हें अपनी ईष्ट देवी मानते हैं।
- त्रिपुर सुन्दरी की 18 हाथों की प्रतिमा है।

रानी सती ;

- इनका वास्तविक नाम 'नारायणी देवी' था।
- इनके पति का नाम तनधनदास अग्रवाल था।
- झुन्झुनु में इनका मुख्य मंदिर बना हुआ है।
- 'भाद्रपद अमावस्या' को इनका मेला भरता है।
- इन्हें दादी सती भी कहते हैं।
- इनके मंदिर में तलवार की पूजा की जाती है।

आवरी माता ;

- निकुम्भ (चित्तौड़गढ़) में इनका मुख्य मंदिर है।
- यहाँ लकवाग्रस्त लोगों का इलाज किया जाता है।

महामाया माता :

- मावली (उदयपुर) में इनका मुख्य मंदिर है।
- शिशु रक्षक लोकदेवी है।

• बड़ली माता ;

• 'आकोला' (चित्तौड़गढ़) में इनका मुख्य मंदिर है।

• यहां दो तिबारियां बनी हुयी है, जिसमें से गुजरने पर बच्चों की बीमारियां दूर हो जाती हैं।

भदाणा माता ;

• मुख्य मंदिर - 'कोटा'

• यहां मूठ लगे व्यक्ति का इलाज किया जाता है।

शिला माता ;

• आमेर के राजा मानसिंह पूर्वी बंगाल के राजा केदार को हराकर शिला माता की मूर्ति लेकर आए एवं आमेर के महलों में स्थापित करवाई।

• यहां शराब एवं जल का चरणामृत दिया जाता है।

तन्नोट माता :

• इनका मुख्य मंदिर तन्नोट (जैसलमेर) में है।

• इन्हें 'थार की वैष्णोदेवी' कहते हैं।

• B.S.F के जवान इनकी पूजा करते हैं।

• इन्हें 'रुमाल की देवी' भी कहते हैं।

ब्रह्माणी माता :

- इनका मुख्य मंदिर सोरसन (बारां) में है।
- यहां देवी की पीठ की पूजा की जाती है।
- 'माघ शुक्ल सप्तमी' को इनका मेला भरता है।

छींक माता :

- इनका मुख्य मंदिर जयपुर में है।
- 'माघ शुक्ल सप्तमी' को इनका मेला भरता है।

छींछ माता ;

- इनका मुख्य मंदिर बांसवाड़ा में है।

ब्रह्माणी माता :

- मुख्य मंदिर पल्लू (हनुमानगढ़) में है।

कैला माता ;

- करौली के यादव राजवंश की कुल देवी
- त्रिकुट पहाड़ी पर इनका मंदिर बना हुआ है।
- चैत्र शुक्ल अष्टमी को लक्खी मेला भरता है।
- इनके भक्त लांगुरिया गीत गाते हैं।
- इन्हें अंजनी (हनुमान जी की मां) माता का अवतार मानते हैं।
- इनके मंदिर के सामने 'बोहरा भक्त' की छतरी बनी हुई है, जहां तांत्रिक विद्या से बच्चों का इलाज किया जाता है।

आई माता ;

- ये सिरवी जाति की कुल देवी।
- इनका मुख्य मंदिर बिलाड़ा (जोधपुर) में है।
- इनके मंदिर की अखण्ड ज्योति से केसर टपकती है।
- इनके मुख्य मंदिर को 'दरगाह' व अन्य मंदिर को 'बडेर' कहते हैं।
- आई माता रामदेव जी की शिष्या थी। अतः इन्होंने भी दलित उद्धार व साम्प्रदायिक सौहार्द का काम किया।

सच्चियाँ माता :

- ओसियाँ (जोधपुर) में इनका मुख्य मंदिर है।
- ये ओसवालों की कुल देवी हैं।
- यह मंदिर गुर्जर-प्रतिहार शासकों के समय बनाया गया था, जो महामारु शैली में निर्मित है।

सकराय माता :

- मुख्य मंदिर – उदयपुरवाटी (झुन्झुनु)
- खण्डेलवालों की कुल देवी।
- एक अकाल के समय शाक - सब्जियाँ उत्पन्न की थी, इसलिए इसे शाकम्भरी माता ~~का नाम~~ भी कहते हैं।
- अन्य मंदिर सांभर व सहारनपुर (U.P.) में भी है।

स्वांगिया माता;

- जैसलमेर के भाटी राजवंश की कुल देवी।
- शगुन चिड़ी के हाथ में मुड़ा हुआ भाला (स्वांग) - जैसलमेर के राज्य चिह्न में है, इसीलिए शगुन चिड़ी को स्वांगिया माता का प्रतीक माना जाता है।
- इनका मुख्य मंदिर जैसलमेर में बना हुआ है।

हिंगलाज माता;

- मुख्य मंदिर - पाकिस्तान के ~~ब्लुचिस्तान~~ सिंध प्रान्त के लासबेला गाँव में बना है।
- अन्य मंदिर - लोद्रवा (जैसलमेर) व नारलाई (जोधपुर)

आवड़ माता;

- ये भी स्वांगिया माता का ही एक अवतार है।
- इनका एक अन्य नाम तेमडे राय भी मिलता है, जिनकी करणी माता भी पूजा करती थी।
- मुख्य मंदिर; जैसलमेर

नारायणी माता;

- मुख्य मंदिर - अलवर
- नाई जाति के लोग इन्हें अपनी कुल देवी मानते हैं।

जिलाड़ी माता ;

- मुख्य मंदिर – बहरोड़ (अलवर) में
- गुर्जर जाति के लोग इनकी पूजा करते हैं।

चामुण्डा माता ;

- मुख्य मंदिर – जोधपुर के मेहरानगढ़ किले में बना हुआ है।
- जोधपुर राज्यपरिवार चामुण्डा माता में विशेष आस्था रखते हैं।
- 30 September 2008 A.D. को पहले नवरात्रा के दिन मची भगदड़ में कई लोग मारे गए, इसे मेहरानगढ़ दुखान्तिका कहते हैं।
- इसकी जांच के लिए जसराज चोपड़ा आयोग की स्थापना की गयी।

आमजा माता ;

- मुख्य मंदिर – रीछड़ा (उदयपुर) में।
- भील जाति के लोग इन्हें अपनी इष्ट देवी मानते हैं।

अम्बिका माता ;

- मुख्य मंदिर – जगत (उदयपुर) में
- इस मंदिर को 'मेवाड़ का खजुराहो' कहते हैं।

सुंधा माता ;

- मुख्य मंदिर – मीनमाल (जालौर)
- राजस्थान का पहला रोप-वे बनाया गया ~~किया~~ है।
- यहां भालू अभ्यारण्य स्थापित किया जा रहा है।

ज्वाला माता ;

- मुख्य मंदिर - जोबनेर (जयपुर)
- खंगारोतो की कुल देवी।

नकटी माता ;

- जयपुर जिले में जयभवानीपुरा में मुख्य मंदिर।

दधीमति माता ;

- मुख्य मंदिर – गोठ मांगलौर (नागौर)
- दाधीच ब्राह्मणों की कुल देवी।

लटियाल माता ;

- कल्ला ब्राह्मणों की कुलदेवी
- फलौदी (जोधपुर) - मुख्य मंदिर
- इन्हें खेजड बेरी राय भवानी भी कहते हैं।

जोगणिया माता ;

- मुख्य मंदिर - भीलवाड़ा

चौथमाता ;

- चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर)

मरूकण्डी माता ;

कठेश्वरी माता - आदिवासी

- नीमाज (पाली)

रानाबाई ;

- हरनावा (नागौर)
- मेला - भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी
- एकमात्र महिला संत, जो कुंआरी सती हुयी।

माता रानी भटियाणी ;

- जसोल (बाड़मेर)
- मेला- भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी

वीरातरा माता ;

- चौहटन (बाड़मेर)

अधर देवी ;

- माउण्ट आबू

अर्बुदा देवी ;

- माउण्ट आबू

राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय

(1) दादूदयाल :

- जन्म - 1544 (44) (अहमदाबाद) में लोधी राम नामक ब्राह्मण के घर हुआ था।
- इनके गुरु का नाम ब्रह्मनन्द था, जो कबीर के शिष्य थे।
- 1585 में आमेर के राजा भगवान दास ने दादूदयाल को फतेहपुर सीकरी में अकबर से मिलाया (था)।
- इनकी मुख्य पीठ नरैना (~~अजमेर~~) में है, जो दादूदयाल ने 1602 में स्थापित की थी।
- 1750 में जैतराम (नरैना पीठ के महन्त) जी के समय दादू पंथ कई शाखाओं में विभक्त हो गया था।

शाखाएं -
- खालसा - (नरैना पीठ के)
- विरक्त
- उतरा दे - (बनवारीदास - हरियाणा में (रतिया) (उत्तर) चला गया था)
- खाकी
- नागा

- दादू जी के 52 शिष्य थे, जिन्हें 52 स्तम्भ (थाम्बे) कहा जाता है।
- दादू दयाल ने अपने उपदेश ढुँढ़ाढी भाषा में दिए।
- दादूदयाल ने 'वाणी' नामक ग्रंथ की रचना की।
- दादूदयाल के प्रमुख शिष्य :

सुन्दरदास →
- 'नागा' शाखा की स्थापना की थी।
- नागा शाखा के साधुओं ने मराठा आक्रमणों के समय जयपुर के शासकों (प्रतापसिंह) की मदद की।
- नागा साधु हथियारबंद रहते थे, इनके रहने के स्थान को छावनी कहते हैं।

• सुन्दरदास की किताबें –

सुन्दरसागर
सुन्दरविलास
सुन्दर ग्रन्थावली

• सुन्दर दास की मुख्य पीठ घेटोलाव (दौसा) में है।

रज्जब जी ;

• सांगानेर के पठान थे।

• दादूदयाल के उपदेश सुनकर शादी छोड दी, दादूदयाल जी के शिष्य बन गये, आजीवन दूल्हे के वेश में रहे।

• पुस्तकें –

रज्जब वाणी
सर्वंगी

गरीबदास जी ;

• दादूदयाल के पुत्र

• दादूदयाल की मृत्यु के बाद अगले महन्त थे।

मिस्किनदास ;

• दादूदयाल के पुत्र

• दादू पंथ के मंदिरो को 'दादू द्वारा' कहते हैं।

– दादूदयाल को राज० का कबीर कहते हैं।

– दादू पंथी विवाह नहीं करते है।

– मंदिर में कोई मूर्ति नहीं होती है, (वाणी रखी जाती है)

– दादूपंथी शव को जलाते या दफनाते नहीं है, बल्कि पशु-पक्षियों के खाने के लिए छोड़ दिया जाता है। (वायु-दहन)

– स्वंय दादूदयाल का शव भैराणा की पहाडी में छोड दिया गया था।

- दादूपंथियो के सत्संग स्थल को 'अलख दरीबा' कहा जाता है।
- दादू ने निपख आंदोलन चलाया।

(8) जाम्भो जी :

- जाम्भो जी के पिता का नाम - लोहट जी
  माता का नाम - हंसा बाई
- जाम्भो जी पंवार राजपूत थे।
- जाम्भो जी के बचपन का नाम धनराज था
- 1482 A.D. में समराथल धोरे पर अपने अनुयायियों को 29 उपदेश दिए। इसलिए इनके अनुयायी विश्नोई कहलाए। (20+9)
- सबसे पहले अपने काका 'पूलो जी' को विश्नोई बनाया था।
- जाट जाति के लोग जाम्भो जी के अधिक अनुयायी थे।
- 1536 A.D. में बीकानेर जिले के मुकाम गाँव में समाधि ली थी। जहाँ 'मुकाम' में इनका मुख्य मंदिर बना हुआ है।
- फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को यहाँ मेला भरता है।
- जाम्भो जी की प्रमुख पुस्तकें :
  जम्भ संहिता
  जम्भ सागर
  जम्भ वाणी
  विश्नोई धर्म प्रकाश
  जम्भ सरिता

• जाम्भो जी की प्रमुख शिक्षाएं –

(1) पेड़ों की कटाई नहीं करना

(2) जीव हिंसा नहीं करना (विशेषकर हिरण)

(3) नशा नहीं करना

(4) विधवा विवाह करना

(5) नीले वस्त्र का त्याग

- जाम्भो जी ने सिकंदर लोधी से कहकर गौ-वध निषेध करवाया।
- एक बार बीकानेर क्षेत्र में अकाल पड़ने पर जाम्भो जी के कहने पर सिकंदर लोधी ने पशुओं के लिए चारा भेजा था।
- विश्नोई धर्म के लोग शव को दफनाते हैं।
- 'सिर साठे रूख रहे तो भी सस्तो जाण ।।'
  (पेड़)

  यह पंक्ति पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेम को दर्शाती है।
- जाम्भो जी के अन्य प्रमुख मंदिर ;
  (1) जाम्भा (जोधपुर)
  (2) रामड़ावास (जोधपुर)
  (3) जांगलु (बीकानेर)
- जाम्भो जी को विष्णु का अवतार माना जाता है।
- जोधपुर के राव जोधा व उनके बेटे बीका व बीदा, जांभो जी के भक्त थे।
- जन्म स्थान :- पीपासर (नागौर)

(3) जसनाथी सम्प्रदाय :

- पिता का नाम - हम्मीर ज्याणी
  माता का नाम - रूपा दे
- सिकन्दर लोधी ने जसनाथ जी को बीकानेर में कतरियासर गांव की जमीन दी थी।

Note : [पहले ऊंट महोत्सव यहां होता था, जो कि अब लाडेरा (बीकानेर) में होता है।]

मरु महोत्सव - जैसलमेर
थार महोत्सव - बाड़मेर

- कतरियासर गांव में ही जसनाथ जी ने जीवित समाधि ली थी।
- जसनाथ जी के अनुयायी 36 नियम मानते हैं।
- जसनाथ जी के अनुयायियों में भी जाट जाति के लोगों की संख्या सर्वाधिक है।
- इनके अनुयायी काली ऊन का धागा पहनते हैं।
- मोर पंख व जाल वृक्ष को प्रमुख माना जाता है।
- * इनके अनुयायी अग्नि नृत्य करते हैं।
- जसनाथी सम्प्रदाय के लोग शव को दफनाते हैं।
- इनकी पत्नी 'कालदे' इनके साथ सती हुयी, जिनकी जसनाथ जी के साथ पूजा की जाती है।
- जसनाथ जी के गुरु का नाम गोरखनाथ था।
- मुख्य पीठ - कतरियासर

* उपदेश - सिंभूदड़ा एवं कोंडा ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

चरणदासी सम्प्रदाय :

- चरणदास जी का जन्म अलवर जिले के डेहरा गांव में हुआ।
- इनकी मुख्य पीठ दिल्ली में है।
- चरणदास जी के बचपन का नाम रणजीत था, पर इनके गुरु शुकदेव ने शिक्षा देकर इनका नाम चरणदास रख दिया।
- चरणदासी सम्प्रदाय के अनुयायी [42] नियम मानते हैं।
- चरणदास जी ने नादिरशाह आक्रमण (1739) की भविष्यवाणी की थी।
- चरणदासी सम्प्रदाय के लोग पीले रंग के कपड़े पहनते हैं।
- इनकी एक शिष्या का नाम दयाबाई था, जिसने -
  1. 'दया बोध'
  2. 'विनय मलिका' नामक पुस्तक लिखी।
- एक अन्य शिष्या सहजाबाई ने 'सहज प्रकाश' नामक पुस्तक लिखी।
- चरणदासी सम्प्रदाय के लोग भगवान श्रीकृष्ण की पूजा सखी भाव से करते हैं।
- मेवात क्षेत्र के लोगों में इनका प्रभाव अधिक है।
- ग्रंथ – ब्रह्म ज्ञान सागर, ब्रह्म सागर, भक्ति चरित्र

रामानन्दी सम्प्रदाय :

- कृष्णदास 'पयहारी' ने गलता जी में रामानन्दी सम्प्रदाय की स्थापना की।
- आमेर का पृथ्वीराज कछवाहा कृष्णदास जी का भक्त था।
- कृष्णदास जी के अन्य शिष्य अग्रदास ने सीकर जिले के

रैवासा गांव में इस सम्प्रदाय की दूसरी पीठ की स्थापना की।

- इस सम्प्रदाय के लोग भगवान राम की पूजा 'रसिक नायक" के रूप में करते हैं, इसलिए इस सम्प्रदाय को रसिक सम्प्रदाय भी कहते हैं।
- सवाई जयसिंह के समय कृष्ण भट्ट ने 'रामरासा' नामक ग्रंथ लिखा था, जिसमें भगवान राम व सीता के प्रेम सम्बन्धों का वर्णन है।

निम्बार्क सम्प्रदाय :

- आचार्य परशुराम ने सलेमाबाद (अजमेर) में इस सम्प्रदाय की मुख्य पीठ की स्थापना की।
- इस सम्प्रदाय के लोग राधा को भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी मानते हैं।
- द्वैताद्वैत नामक दर्शन।
- वेदान्त परिजात भाष्य का प्रतिपादन।

वल्लभ सम्प्रदाय :

- वल्लभ सम्प्रदाय की स्थापना वल्लभाचार्य ने की थी, जो तेलंगाना के ब्राह्मण थे।
- वल्लभ सम्प्रदाय के लोग श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप की

पूजा करते हैं।

- 1672 A.D. में गोविन्द दास जी व दामोदर दास ने सिहाड़ (नाथद्वारा) में श्रीनाथ जी की मूर्ति स्थापित करवायी।
- इनके मंदिर में कपड़े के पर्दे पर कृष्ण लीलाओं का अंकन किया जाता है, जिसे 'पिछवाई' कहते हैं।
- राजस्थान में वल्लभ सम्प्रदाय के 41 मंदिर हैं। इनके मंदिरो को हवेली कहा जाता है।
- मंदिरो में गाया जाने वाला संगीत हवेली संगीत कहलाता है।
- वल्लभ सम्प्रदाय को पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय भी कहते हैं।
- इनके अन्य प्रमुख मंदिर –

  द्वारकाधीश – कांकरोली

  मथुरेश जी – कोटा

  गोकुल चन्द्र मंदिर – कामां (भरतपुर)

  मदनमोहन मंदिर – भरतपुर

- इनकी कुल 7 पीठ हैं, जिनमें 5 राजस्थान में
  2 गुजरात में स्थापित है।

- अणुभाष्य व शुद्ध अद्वैतवाद का प्रतिपादन।

गौड़ीय सम्प्रदाय :

- चैतन्य महाप्रभु ने की थी
- आमेर के राजा मानसिंह ने वृंदावन में राधा गोविन्द का मंदिर बनवाया।
- सवाई जयसिंह ने जयपुर में गोविन्द देव जी का मंदिर बनवाया, जो राजस्थान में गौड़ीय सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ है।
- गोपाल पाल ने करौली में मदन मोहन जी का मंदिर बनवाया, जो गौड़ीय सम्प्रदाय की दूसरी प्रमुख पीठ है।

संत पीपा :

- वास्तविक नाम - प्रतापसिंह
- ये गागरौन के खींची शासक थे।
- रामानन्द के शिष्य थे।
- दर्जी समाज इन्हें अपना आराध्य देव मानता है।
- समदडी (बाड़मेर) में इनका मुख्य मंदिर है।
- टोडा (टोंक) में इनकी गुफा बनी हुयी है।
- गागरौन में काली सिंध नदी के किनारे इनकी छतरी बनी हुयी है।

हरिदासी सम्प्रदाय :

- इसकी स्थापना हरिसिंह साखला ने की थी।
- इनका जन्म नागौर के कापड़ोद गांव में हुआ था।
- इन्होंने गाढ़ा गांव (नागौर) में समाधि ली थी।
- ये डाकू से संत बने थे।
- हरिदासी सम्प्रदाय को* निरंजनी सम्प्रदाय* भी कहते हैं।
- हरिदास जी की प्रमुख पुस्तकें –

मन्त्र राज प्रकाश
हरिपुरुष जी की वाणी

लालदासी सम्प्रदाय :

- लालदास जी का जन्म अलवर जिले के धोलीदूब गांव में हुआ था।
- इनकी मृत्यु भरतपुर के नगला जहाज में हुयी थी।
- इनकी समाधि अलवर के शेरपुर गांव में है।
- ये मेव जाति के लकड़हारे थे।
- प्रसिद्ध संत 'गद्दन चिश्ती' इनके गुरु थे।

संत धन्ना :

- टोंक जिले के धुवन गांव में एक जाट परिवार में इनका जन्म हुआ था। (उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन की शुरुआत)
- धन्ना भी रामानन्द जी के शिष्य थे।

* इन्हें राजस्थान में भक्ति आंदोलन लाने का श्रेय जाता है।

- बोरानाड़ा (जोधपुर) में इनका मंदिर बना हुआ है।

संत मावजी :

- इनका जन्म डूंगरपुर जिले के सावला गांव में हुआ था।
- इन्होनें 'निष्कलंकी सम्प्रदाय' चलाया।
- इनमें भगवान श्रीकृष्ण की निष्कलंकी रूप में पूजा की जाती है।

* इन्होनें बेणेश्वर धाम (डूंगरपुर) की स्थापना की।

- इनके ग्रन्थ का नाम 'चोपड़ा' है। जिसमें तीसरे विश्व युद्ध की भविष्यवाणी की हुई है। (वागडी भाषा में लिखा)

अलखिया सम्प्रदाय :

- इसकी स्थापना स्वामी लाल गिरी जी ने (चुरु) में की थी।
- बीकानेर में इनकी प्रमुख पीठ है।

• 'अलख स्तुति प्रकाश' इनका प्रमुख ग्रन्थ है।

नवल सम्प्रदाय :

• इसकी स्थापना नवल सागर ने नागौर के हर्षोलाव में की थी।
• इनका मुख्य ग्रन्थ 'नवलेश्वर अनुभव वाणी' है।

बालनन्दाचार्य :

• ये औरंगजेब के समकालीन थे।
• (52) मूर्तियों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया।
• इन्होंने, दुर्गादास राठौड़, राजसिंह व शत्रुसाल की सेना भेजकर सहायता की थी।
• इन्हें लश्कर (सेना) संत भी कहते हैं।
• मुख्य पीठ – लोहार्गल (झुन्झुनु)

राम्‍जाराम :

• पटेल जाति के लोग इनमें विशेष आस्था रखते हैं।
• मुख्य पीठ – शिकारपुरा (जोधपुर)
• पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिया।

रामस्नेही सम्प्रदाय :

रामानन्द
- सन्तदास जी (दांतड़ - गूदड़ संप्रदाय) (भीलवाड़ा)
  - रामचरण जी — शाहपुरा (भीलवाड़ा) ①
  - दरियाव जी — रैण (नागौर) ②
- जैमलदास (दुलचासर) (बीकानेर)
  - हरिराम दास (सींथल) (बीकानेर) ③
    - रामदास (खेड़ापा) (जोधपुर) ④

- रामस्नेही संप्रदाय की राज॰ में प्रमुख चार पीठ –

(1) <u>शाहपुरा – (भीलवाड़ा)</u>

- स्थापना रामचरण जी ने की थी।
- बचपन का नाम – रामकिशन
- जन्म – टोंक जिले के सोड़ा गांव में।
- शाहपुरा के राजा रणसिंह ने इनके रहने के लिए शाहपुरा में एक छतरी बनवाई।
- रामचरण जी के उपदेश 'अणभैवाणी' नामक ग्रंथ में संकलित है।
- 'शाहपुरा' रामस्नेही सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ है।
- शाहपुरा में होली के दूसरे दिन 'फूलडोल का मेला' भरता है।

(2) रैण (नागौर)

- इस पीठ की स्थापना दरियाव जी ने की थी।

(3) सींथल (बीकानेर)

- इस पीठ की स्थापना हरिराम दास जी ने की थी।
- ग्रंथ का नाम – 'निशानी', इस ग्रंथ में यौगिक क्रियाओं का उल्लेख है।

(4) खेड़ापा (जोधपुर)

- इस पीठ की स्थापना रामदास जी ने की थे।
- ये हरिराम दास जी (सींथल) के शिष्य थे।

* संत जैमलदास को सींथल व खेड़ापा शाखा का आदि-आचार्य कहा जाता है।

* संतदास जी ने गूदड़ सम्प्रदाय चलाया था।

- गूदड़ सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ दांतड़ा (भीलवाड़ा) में है।

- रामस्नेही सम्प्रदाय के लोग निर्गुण राम की पूजा करते हैं। (यहां राम से तात्पर्य दशरथ पुत्र राम से नहीं है)
- रामस्नेही सम्प्रदाय के मंदिरों को राम द्वारा कहते हैं।
- रामस्नेही सम्प्रदाय के लोग गुलाबी रंग की चादर पहनते हैं।

संत मीरा :

- मीरा का जन्म पाली जिले के कुड़की गाँव में हुआ था।
- पिता का नाम - रत्नसिंह
  दादा का नाम - राव दूदा (जोधा का सबसे छोटा बेटा)
- मीरा की शादी मेवाड़ के राणा साँगा के पुत्र भोजराज से हुयी थी।
- अपने पति के मृत्यु के बाद मीरा मेवाड़ से वापस मेड़ता आ गयी थी, फिर वहां से वृंदावन चली गयी थी, फिर वृंदावन से द्वारिका चली गयी थी।
- ऐसा कहा जाता है कि मीरा द्वारिका के रणछोड़ मंदिर की मूर्ति में विलीन हो गयी।
- मीरा सगुण श्रीकृष्ण की पति रुप में पूजा करती थी।
- मीरा के शिक्षक का नाम गजाधर था।
- मीरा ने रैदास (रामानन्द के शिष्य) को अपना गुरु बनाया, रैदास की छतरी चित्तौड़ में बनी हुई है।
- रैदास के उपदेश 'रैदास की परची' नामक ग्रंथ में संकलित है।
- मीरा की पुस्तकें -

(1) गीत गोविन्द
(2) रुक्मणि मंगल
(3) सत्यभामा नू रुसणो

* रतना खाती के सहयोग से नरसी जी रो मायरो नामक पुस्तक लिखी।

- महात्मा गांधी मीरा को अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने वाली सत्याग्रही महिला के रुप में देखते थे।

- मीरा को राज की राधा कहते हैं।
- मीरा के पद 'हरजस' कहलाते हैं।

भक्त कवि दुर्लभ :

- प्रमुख प्रभाव क्षेत्र 'बागड़' रहा है।
- भक्त कवि दुर्लभ को 'बागड का नृसिंह' कहते हैं।

~~नरहड़ पीर~~

नरहडपीर :

- सलीम चिश्ती (जिसके आशीर्वाद से जहांगीर पैदा हुआ था), नरहड़ पीर के शिष्य थे।
- कृष्ण जन्माष्टमी के दिन इनका उर्स लगता है।
- साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए जाने जाते हैं।
- यहां पागलों का इलाज किया जाता है।
- इन्हें 'बागड़ का धणी' कहते हैं।

वागड	- डूंगरपुर, बांसवाड़ा
बागड	- शेखावाटी क्षेत्र

* गवरी बाई - 'वागड की मीरां'

राजस्थान की चित्रकला

- ब्राउन महोदय ने राजस्थान की चित्रकला को 'राजपूत कला' कहा।
- H.C. मेहता – 'हिन्दू शैली'
- आनन्द कुमार स्वामी ने 1916 में लिखी अपनी पुस्तक 'RAJPUT PAINTINGS' में राज. की चित्रकला को राजपूत चित्र शैली कहा तथा इस राजपूत चित्र शैली में पहाडी शैली (हिमाचल प्रदेश) को भी शामिल कर लिया।
- रामकृष्ण दास – राजस्थानी चित्रकला
- मेवाड़ को राजस्थानी चित्रकला की जन्मभूमि कहा जाता है।
  राज. के सबसे प्राचीन चित्र जैसलमेर के जिनभद्र सूरी भंडार में संग्रहीत हैं।

  मुख्य प्राचीन चित्र ; (1) ओघ निर्युक्ति वृत्ति } जैन ग्रन्थ
  (2) दस वैकालिक सूत्र चूर्णि }

(Note; जैनों ने सबसे पहले कागज पर चित्र तथा क्षेत्रीय भाषा में लिखना शुरू किया।)

- भौगोलिक व सांस्कृतिक आधार पर राज. की चित्रकला को (4) भागों में बांटा जाता है

  (1) मेवाड़ शैली — चावण्ड, देवगढ़, नाथद्वारा
  (2) मारवाड़ शैली – जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, अजमेर, नागौर, जैसलमेर
  (3) ढूंढाड़ शैली – जयपुर, अलवर, उणियारा, शेखावाटी
  (4) हाड़ौती शैली - कोटा, बूंदी

(1) मेवाड़ शैली :

- 1260 A.D. में रावल तेजसिंह के समय आहड़ में 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' नामक ग्रंथ चित्रित किया गया।
- 1423 A.D. में मोकल के समय देलवाड़ा में 'सुपार्श्वनाथ चरित्र' नामक ग्रंथ चित्रित किया गया।
- महाराणा कुम्भा ने भी मेवाड़ की चित्रकला में अपना योगदान दिया था।

– चावण्ड :

- महाराणा प्रताप के समय चावण्ड से मेवाड़ की चित्रकला शैली का स्वतंत्र विकास प्रारम्भ होता है।
- इस समय ढोला-मारू का चित्र चित्रित किया गया। जो वर्तमान में राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली में रखा हुआ है।
- महाराणा अमरसिंह के समय इस चित्रकला शैली का विकास अग्रसर होता है। नासिरुद्दीन नामक एक चित्रकार ने 'रागमाला' का चित्रण किया। (अब बड़ौदा के अजायबघर में) (1610 A.D.)
- इसके बाद 'बारहमासा' का चित्रण किया गया। (अब सरस्वती भवन पुस्तकालय उदयपुर में)
- महाराणा जगतसिंह के समय को मेवाड़ की चित्रकला का स्वर्णकाल कहते हैं।
- जगतसिंह ने 'चितेरों की ओबरी' का निर्माण करवाया। चित्तेरों की ओबरी को 'तस्वीरां रो कारखानो' भी कहते हैं।
- जगतसिंह के समय साहिबदीन नामक एक चित्रकार ने महाराणाओं के व्यक्तिगत चित्र बनाए।
- महाराणा संग्राम सिंह II के समय कलीला-दमना व मुल्ला दो प्याजा के लतीफे ग्रन्थों के चित्र चित्रित किए।
- महाराणा जगत सिंह II के समय मुहम्मदीन नामक चित्रकार ने जगत सिंह II का चित्र बनाया।

- इस शैली में शिकार के दृश्यों की चित्रकारी में त्रि - आयामी प्रभाव दिखायी देता है।
- मनोहर व कृपाराम इस शैली के अन्य चित्रकार थे।
- कदम्ब वृक्ष का अधिक चित्रण किया गया है।

— देवगढ़ :

- 1680 A.D. में महाराणा जयसिंह ने द्वारिकादास चूंडावत को देवगढ़ ठिकाणा दिया था। (मेवाड़ के 16 ठिकानों में से एक)

चूंडावत	सलूम्बर
	आमेट
	बेगूं
	देवगढ़

यहीं से चित्रकला की देवगढ़ शैली प्रारम्भ होती है।

- देवगढ़ शैली में मेवाड़, मारवाड़ व आमेर तीनों शैलियों का प्रभाव दिखायी देता है।
- श्रीधर अंधारे ने इस शैली को प्रकाश में लाने का काम किया।
- देवगढ़ शैली में अजारा की ओबरी व मोतीमहल के भित्ति चित्र देवगढ़ शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।
- हरे व पीले रंगों का अधिक प्रयोग किया गया है।

— नाथद्वारा :

- पिछवाई चित्रण नाथद्वारा शैली की मौलिक विशेषता है।
- केले के वृक्षों की प्रधानता है।

मारवाड़ शैली

जोधपुर

- मालदेव के समय यह चित्र शैली प्रारम्भ हुयी।
- चोखेला महल में भित्ति चित्र बनाए गए। (राम - रावण युद्ध के दृश्य)
- उतराध्ययन सूत्र नामक ग्रन्थ चित्रित किया गया।
- महाराजा सूरसिंह के समय ढोला - मारू व भागवत पुराण चित्रित किए गए।

* 1623 A.D. में वीर जी (विठ्ठलदास चाम्पावत) ने 'रागमाला' का चित्रण किया।

- महाराजा जसवंत सिंह के समय चित्रकला में मुगल प्रभाव आ गया था।
- इस समय कृष्ण लीलाओं के चित्र अधिक चित्रित किए गए।
- मानसिंह के समय नाथों का प्रभाव अधिक था, अतः शैव सम्प्रदाय से सम्बन्धित चित्र अधिक चित्रित हुए।

पुस्तकें –
- नाथ चरित्र
- शिव पुराण
- दुर्गा चरित्र

- महाराजा तख्तसिंह के समय यूरोपीय प्रभाव आ जाता है।
- H.K. MULER नामक एक चित्रकार ने दुर्गादास राठौड़ का घोड़े पर बैठकर भाले से रोटी सेकते हुए चित्र बनाया है।

अतः

'चौबीस घड़ी, आठ पहर, घुडले ऊपर वास।
सेल अणी सुं सेकतो, बाटी दुरगादास ॥'
(भाला)

- जोधपुर शैली में प्रेम कहानियां अधिक चित्रित की गयी।

जैसे - ढोला - मारू, महेन्द्र - मूमल, वीरमदेव सोनगरा

- इस शैली में बादलों का अधिक चित्रण किया गया।
- लाल व पीले रंगो का अधिक प्रयोग हुआ है।
- हासिये में भी पीले रंग का अधिक प्रयोग हुआ है।

बीकानेर शैली :

- महाराजा रायसिंह के समय प्रारम्भ हुई भागवत पुराण चित्रित करवाया गया।
- महाराजा अनूपसिंह का समय बीकानेर चित्रकला शैली का स्वर्णकाल कहा जाता है।
-

उस्ता कला ; महाराजा अनूपसिंह लाहौर से अली रजा, रुक्नुद्दीन नामक दो कलाकारों को लेकर आए, जिन्होनें बीकानेर में उस्ता कला प्रारम्भ की।

- उस्ता कला में ऊंट की खाल पर सोने की चित्रकारी की जाती है।
- हिसामुद्दीन उस्ता को इसके लिए पद्म श्री मिल चुका है।
- बीकानेर के 'कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर' में उस्ता कला सिखायी जाती है।

मथेरणा कला ; जैनों की एक उपजाति

- गीले प्लास्तर पर चित्र बनाए जाते हैं।
- इसे फ्रेस्को कहते हैं।
- इसे अरायश भी कहते हैं।
- शेखावटी क्षेत्र में इसे पणा कहा जाता है।

- बीकानेर की चित्र कला शैली में पंजाबी, दक्कनी व मुगल तीनों प्रभाव दिखायी देते हैं।
- बीकानेर शैली की प्रमुख विशेषता मुस्लिम चित्रकारों द्वारा हिन्दू पौराणिक चित्रों का अंकन किया जाना है।

"तेरा सारा जहर उतर जाएगा,
दो दिन मेरे शहर में रह कर तो देख॥"

- बीकानेर के चित्रकार चित्र के साथ अपना नाम व तिथि अंकित करते थे

<u>किशनगढ़ शैली</u> :-

- '<u>फैयाज अली</u> व <u>एरिक डिक्सन</u>' इस शैली को प्रकाश में लाए।
- महाराजा सावन्त सिंह का समय किशनगढ़ शैली का स्वर्ण काल कहा जाता है।
- वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव अधिक होने के कारण कृष्ण-लीलाओं का चित्रण अधिक किया गया है।
- सावन्त सिंह ने अपनी प्रेमिका '<u>रसिक बिहारी</u>' को राधा के रूप में चित्रित करवाया।
- इसी रसिक बिहारी की तस्वीर को बणी-ठणी कहा जाता है, जिसका चित्रकार 'मोरध्वज निहालचन्द' था।
- एरिक डिक्सन ने इसे 'भारत की मोनालीसा' कहा है।
- एक दूसरा प्रमुख चित्र 'चांदनी रात की गोष्ठी' है, जिसका चित्रकार अमीरचन्द था।
- किशनगढ़ शैली में कांगड़ा (हिमाचल) शैली का प्रभाव अधिक दिखायी देता है।
- नारी सौन्दर्य का अधिक चित्रण हुआ है।
- नारी पात्रों के नाक में बाली इस शैली की प्रमुख विशेषता है।

· अजमेर शैली :

- साहिबा नामक एक महिला चित्रकार का नाम मिलता है।

नागौर शैली :

- इस शैली में बुझे हुए रंगो का अधिक प्रयोग किया जाता था।

जैसलमेर

- मूमल का चित्रण अधिक हुआ है।
- जैसलमेर के चित्रों पर किसी अन्य शैली का प्रभाव नजर नहीं आता है।

* बणी - ठणी पर 1973 में डाक - टिकट जारी किया गया।

ढुंढाड़ शैली :

- ढुंढाड़

जयपुर :

- मुगल शैली का सर्वाधिक प्रभाव दिखायी देता है।
- महाराजा मानसिंह के समय यशोदा का चित्र बनाया गया।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने (बिहारी सतसई, कृष्ण रुक्मणि, गीत गोविन्द) आदि के चित्र अपनी रानी चन्द्रावती के लिए बनवाए।
- सवाई जयसिंह ने आमेर में सूरतखाने की स्थापना की।
- महाराजा ईश्वरी सिंह के समय साहिबराम नामक एक चित्रकार ने आदमकद चित्र बनाए।
- माधो सिंह के समय भित्ति चित्र अधिक बनाए गए।
- 'पुण्डरीक हवेली' के भित्ति चित्र प्रमुख हैं।
- प्रताप सिंह का समय जयपुर चित्रकला शैली का स्वर्ण काल था। इस समय लालचंद नामक एक चित्रकार ने पशुओं की लड़ाई के दृश्य बनाए।
- विशेषताएं –

  आदमकद चित्रण, भित्ति चित्रण

  उद्यान चित्रण, हाथियों का चित्रण

अलवर शैली :

- महाराजा विनयसिंह का समय अलवर शैली का स्वर्ण काल था।
- बलदेव नामक एक चित्रकार ने शेखसादी की पुस्तक 'गुलिस्तां' का चित्रण किया।
- अलवर शैली में वेश्याओं के चित्र सर्वाधिक बनाए गए।
- महाराजा शिवदान/स्योदान सिंह के समय 'कामशास्त्र' का चित्रण हुआ।
- मूलचन्द नामक एक चित्रकार हाथीदांत पर चित्रकारी करता था।
- विशेषता;

  लघु चित्रण, योगासन के चित्र

  हासिये में बेल - बूंटो का प्रयोग

(राजगढ़ के महलों में शीशमहल का चित्रण राव बख्तावर सिंह के द्वारा करवाया गया, यहीं से चित्रकला की अलवर शैली का विकास हुआ।)

उणियारा शैली : (टोंक)

- कछवाओं की 'नरूका शाखा' का प्रमुख ठिकाणा।
- यहां ढूंढाड़ व बूंदी शैली का प्रभाव/समन्वय देखने को मिलता है।
- चित्रकार - धीमा, मीम, मीर बख्श, काशी, राम लखन

शेखावाटी शैली :

- भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध।
- कम्पनी शैली का प्रभाव अधिक दिखायी देता है।
- नीले व हरे रंगो का अधिक प्रयोग किया गया।
- उदयपुर, वाटी में जोगीदास की छतरी भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। इन भित्ति चित्रों का चित्रकार 'देवा' था।

• फतेहपुर की गोयनका हवेली के भित्ति चित्र भी आकर्षक हैं।

हाड़ौती शैली :

बूंदी :

- राव सुरजन के समय यह शैली प्रारम्भ हुई थी।
- राव रतन सिंह के समय दीपक व भैरवी राग पर चित्र बनाये गये।
- शत्रुसाल के समय रंगमहल का निर्माण करवाया गया,जो भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- उम्मेद सिंह का समय बूंदी चित्रकला शैली का स्वर्ण काल कहा जाता है। इन्होंने बूंदी के किले में चित्रशाला का निर्माण करवाया, जिसे भित्ति चित्रों का स्वर्ग कहते हैं।
- विशेषता-
  * पशु-पक्षी व प्रकृति चित्रण
- मेवाड़ शैली का अधिक प्रभाव दिखायी देता है।

कोटा :

- महाराव रामसिंह के समय शुरु हुयी थी।
- भीमसिंह के समय कृष्ण लीलाओं का अधिक अंकन हुआ है।
- उम्मेद सिंह का समय कोटा - शैली का स्वर्ण काल माना जाता है।
- 'डालू' नामक एक चित्रकार ने रागमाला को चित्रित किया।
- प्रमुख विशेषता - शिकार के दृश्य

- महिलाओं को पशुओं का शिकार करते हुये दिखाया गया है।
- नारी सौन्दर्य का सबसे अधिक चित्रण कोटा शैली में हुआ है।

प्रमुख आधुनिक चित्रकार :

(1) रामगोपाल विजयवर्गीय :

- राज० के सबसे अग्रणी चित्रकार।
- सबसे पहले एकल चित्र प्रदर्शनी लगानी शुरु की।
- इनके गुरु का नाम शैलेन्द्र नाथ डे।
- साहित्यिक रचना ; 'अभिसार निशा'

> अभिसार – प्रेमी से छिपकर मिलना
> अभीसार – आक्रमण

(2) गोवर्धन लाल बाबा :

- भीलों का चितेरा
- प्रमुख चित्र :- बारात

(3) कुन्दन लाल मिस्त्री :

- इन्होंने महाराणा प्रताप का चित्र बनाया।
- राजा रवि वर्मा ने कुन्दन लाल मिस्त्री के चित्रों को देखकर महाराणा प्रताप का चित्र बनाया। राजा रवि वर्मा (केरल) को 'भारतीय चित्रकला का पितामह' कहा जाता है।

(4) सौभाग्य मल गहलोत :

- इन्हें नीड़ का चितेरा कहते हैं।

(5) परमानन्द चोयल :

- इन्हें भैंसों का चितेरा कहते हैं।

(6) जगमोहन मायोडिया :

- इन्हें स्वान का चितेरा कहते हैं।

(7) भूर सिंह शेखावत :

- इन्होनें देशभक्त व क्रांतिकारियों के चित्र बनाए।
- इनके चित्रों में राजस्थानी अंश अधिक पाया जाता है।

(8) ज्योति स्वरूप ; कच्छावा ;

- चित्र – 'INNER JUNGLE' (Book में)

(9) देवकीनन्दन शर्मा ;

- इन्हें 'THE MASTER OF NATURE AND LIVING OBJECT' कहते हैं।

---

* रमेश गर्ग → आधुनिक कला के जनक के नाम से प्रसिद्ध।
प्रसिद्ध चित्र – मशीनी मानव
बीसवीं सदी
माता और शिशु

राजस्थान के दुर्ग

(1) गागरौन का किला :

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध व आहू नदियों के किनारे स्थित है
- गागरौण का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण डोड परमार शासकों ने करवाया था, इसलिए इसे डोडगढ़ भी कहते हैं। इसे धूलरगढ़ भी कहते हैं।
- देवेन सिंह खिंची ने बीजलदेव डोड को हराकर इस पर आधिकार कर लिया था। (चौहान कुल कल्पद्रुम के अनुसार)
- जैत्र सिंह
  - 1303 में जैत्रसिंह के समय अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था।
  - संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरौण आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहब' के नाम से जानते हैं। इनकी ~~छतरी~~ दरगाह गागरौण के किले में बनी हुयी है।

प्रताप सिंह

- ~~इन्हें हम संत पीपा के नाम से जानते हैं।~~
- इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरौण पर विफल आक्रमण किया था।
- संत पीपा की छतरी गागरौण में बनी हुयी है।

अचलदास

- 1423 A.D. में मालवा का सुलतान होशंगशाह गागरोन पर आक्रमण करता है। इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता है।
- अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता है।
- लाला मेवाड़ी के नेतृत्व में जौहर किया जाता है।

* अचलदास खिंची की अन्य रानी का नाम - उमा सांखला

- शिवदास गाड़ण ने 'अचलदास खिंची री वचनिका' नामक ग्रन्थ लिखा है।

पाल्हण सिंह ; (अचलदास का बेटा, कुम्भा का भांजा)

- 1444 A.D. में मालवा का सुलतान महमूद खिलजी गागरौण पर आक्रमण करता है।
- कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता है। (मआसिरे मुहम्मदशाही में इसका जिक्र है।)
- इस समय गागरौण के किले का दूसरा साका होता है। महमूद खिलजी ने गागरौण का नाम मुस्तफाबाद रख दिया था।

- बाद में गागरौण का किला महाराणा सांगा (मेवाड़) के अधिकार में आ गया था।
- सांगा ने अपने मित्र मेदिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।
- 1567-68 के चित्तौड़ आक्रमण के समय अकबर इसके लिए किले में ठहरता है और फैजी इससे मुलाकात करता है।
- बाद में अकबर ने यह किला पृथ्वी राज राठौड़ को दे दिया।
- पृथ्वीराज राठौड़ ने इसी किले में 'वेलि क्रिसण रुक्मिणी' की रचना की।
- शाहजहां ने यह किला कोटा महाराजा माधो सिंह को दे दिया था।
- कोटा महाराणा दुर्जनसाल ने यहां मधुसूदन का मंदिर बनवाया।
- जालिम सिंह झाला ने यहां जालिम कोट (परकोटा) का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने यहां बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया।
- इस किले में एक जौहर कुंड, 2 अंधेरी बावड़ी, गीध कराई (ऊंची पहाड़ी) (यहां राजनैतिक

बंदियों को सजा दी जाती थी) है।

- गागरौण का किला बिना नींव के (चट्टानों पर) खड़ा है।
- कोटा राज्य की टकसाल यहीं पर थी।

चित्तौड़गढ़ का किला :

- दुर्गों का सिरमौर
- दुर्गों का तीर्थस्थल
- राजस्थान का गौरव

"ओ गढ़ नीचो किम झुकै, ऊँचो जस गिर वास ।
हर झाटै जौहर (ज्वाला) उठै, हर भाठे इतिहास ॥"

- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)
- 734 A.D. में बापा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है।
- यह राज. का सबसे बड़ा* आवासीय किला है।
- चित्तौड़ के किले में तीन साके हुए।

    1303
    1534
    1568

- कुम्भा ने कुम्भश्याम / कुम्भा स्वामी का मंदिर, शृंगार चंवरी का मंदिर बनवाया।
- मोकल ने समाद्धिश्वर (समिद्धेश्वर) मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।
- बनवीर ने नवलखा भंडार बनवाया।

- बनवीर ने तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- चित्तौड़ के किले में रत्नेश्वर तालाब, भीमलत तालाब, मीरा मंदिर, कालिका मंदिर, लाखोटा बारी आदि प्रमुख है।

- चित्तौड़ का किला मेसा पठार पर मीनाकृति में बना हुआ है।
- धान्वन दुर्ग को छोड़कर इसमें अन्य सभी विशेषताएं है।
- यह किला गम्भीरी व बेड़च नदियों के किनारे बसा हुआ है।
- महाराणा कुम्भा ने इसमें सात दरवाजे बनवाए।
- कुम्भा ने इसमें विजयस्तम्भ (कीर्ति स्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- चित्तौड़ के किले में एक जैन कीर्ति स्तम्भ बना हुआ है।
- यह राज्य की प्रथम इमारत है, जिस पर 15 Aug. 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया था।

कुम्भलगढ़ का किला :

- महाराणा कुम्भा ने 1448 से 1458 A.D. के बीच करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार मंडन था।
- कुम्भलगढ़ वर्तमान राजसमंद जिले में स्थित है।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़ - मारवाड़ का सीमा प्रहरी कहते है।
- अत्यधिक ऊंचाई पर बना हुआ होने के कारण अबुल - फजल ने कहा था कि

  इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।

- कुम्भलगढ़ के शीर्ष भाग में कटारगढ़ बना हुआ है, जो कुम्भा का निजी आवास था। कटारगढ़ को मेवाड़ की आँख कहते हैं।
- कुम्भलगढ़ के किले में उदा ने कुम्भा की हत्या (मामादेव कुंड के पास) की थी।
- उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज की छतरी बनी हुयी है। (12 खम्भों की)
- पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलगढ़ के किले में आयी थी उदयसिंह का राजतिलक यहीं हुआ था।
- प्रताप ने भी अपना शुरुआती शासन कुम्भलगढ़ से चलाया था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़ के शासकों की 'संकटकालीन राजधानी' कहते हैं।
- कुम्भलगढ़ के किले में भी कुम्भा स्वामी का मंदिर बना हुआ है।
- इसी किले में झाली रानी का मालिया बना हुआ है।
- कुम्भलगढ़ के दीवार की लम्बाई – 36 km
- चौड़ाई इतनी है कि आठ घोड़े समानान्तर दौड़ सकते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसकी तुलना 'यूरोप के एट्रुस्कन' से की है। 'एट्रुस्कन' (सुदृढ़ प्राचीर, बुर्जें एवं कंगूरे के कारण)

रणथम्भौर दुर्ग :

- वर्तमान सवाई माधोपुर में स्थित।
- 8वीं शताब्दी में चौहान शासकों द्वारा निर्मित।
- अष्टाकार आकृति में निर्मित।
- गिरि व वन दोनों दुर्गों की विशेषता रखता है।
- अबुल फज्ल –

  'बाकी सब किले नंगे हैं, पर रणथम्भौर दुर्ग बख्तरबंद है।'
- हम्मीर के समय जलालुद्दीन खिलजी ने यहां एक विफल आक्रमण किया था। इस विफलता के बाद खिलजी ने कहा था –

  'ऐसे 10 किलों को मैं मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता।'
- 1301 A.D – अलाउद्दीन ने रणथम्भौर किले पर आक्रमण किया।
  उस समय – रणथम्भौर का पहला साका (हम्मीर के नेतृत्व में) हुआ।
- रणथम्भौर का किला हम्मीर हठ के लिए प्रसिद्ध है।

  " रण लड़ियो रण रीति सुं, रणथल रणथम्भौर।
  हठ राख्यौ हम्मीर रो, कट – कट खांगा कोर॥"
  (तलवार)

- इस किले में
  - जोगी महल
  - सुपारी महल
  - रणत भंवर गणेश जी का मंदिर (शादी की पहली कुमकुमपत्री यहां भेजी जाती है।)
  - पद्म तालाब
  - जौरा - भौरा महल
  - पीर सदरूद्दीन की दरगाह
- अकबर कालीन टकसाल यहां स्थित है।

मेहरानगढ़ :

- यह किला जोधपुर में मयूर आकृति में बना हुआ है, इसलिए इसे मयूर ध्वज गढ़ भी कहते हैं।
- इस किले का निर्माण राव जोधा ने 1459 A.D. में करवाया था।
- इस किले की नींव करणी माता ने रखी थी।
- मेहरानगढ़ किले की नींव में राजाराम नामक व्यक्ति की बलि दी गयी थी।
- मालदेव के समय शेरशाह सूरी ने इस किले पर अधिकार कर लिया था। तथा एक मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- मालदेव ने किले में लोहा पोल का निर्माण करवाया था।
- अजीत सिंह ने मुगल खालसे की समाप्ति पर फतेह पोल का निर्माण करवाया।
- मानसिंह ने किले में जयसिंह पोल का निर्माण करवाया। (इस पोल के दरवाजे निमाज का ठाकुर 'अमर सिंह उदावत' अहमदाबाद से लाया था)
- मेहरानगढ़ के किले में 'कीरत सिंह सोढ़ा' की छतरी बनी हुयी है। (मानसिंह की तरफ से लड़ता हुआ मारा गया था)
  (जसोल गांव के कीरत सिंह सोढ़ा ; गिंगोली युद्ध के बाद जोधपुर घेरे में मानसिंह की तरफ से लड़ता है।)
- धन्ना-भींवा की छतरी बनी हुयी है। (मामा - भान्जा की छतरी)
- महाराजा सूरसिंह ने मोती महल का निर्माण करवाया।
- सूरसिंह ने ही एक तलहटी महल (अपनी रानी सौभाग्यवती के लिए) बनवाया।

- तख्त सिंह ने 'श्रृंगार चौकी' का निर्माण करवाया, यहाँ जोधपुर के राजाओं का राजतिलक किया जाता था।
- मेहरानगढ़ के किले में तीन तोपें हैं -
  - (1) किलकिला (महाराजा अजीतसिंह अहमदाबाद की सूबेदारी के दौरान लाए थे)
  - (2) गजनी खाँ (महाराजा गजसिंह ने जालौर घेरे में प्राप्त की थी)
  - (3) शम्भू बाण
    (महाराजा अभय सिंह सर बुलन्द खाँ से छीनकर लाते हैं)
    ↓
    (अहमदाबाद)

अन्य तोप - भवानी

- जोधा की रानी जसमा दे हाड़ी ने रानीसर तालाब बनवाया, जिसे मेहरानगढ़ किले को जलापूर्ति की जाती थी।
- जोधा ने चामुण्डा माता का मंदिर बनवाया था।
- RUDYARD KIPLING' - जोधपुर के किले का निर्माण परियों और देवताओं ने किया है।
- मेहरानगढ़ का किला चिड़ियाटूंक पहाड़ी पर बना हुआ है।
- जोधपुर के किले में एक फूल महल (↓ अभयसिंह) बना हुआ है, जो भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- किले में मान पुस्तक प्रकाश नामक पुस्तकालय है, जो मानसिंह ने 1805 A.D. में बनवाया।
- 2005 A.D. में यूनेस्को अवार्ड ~~प्रक्स~~ दिया गया था।

• जैसलमेर दुर्ग :

(1155)

• जैसलमेर के राजा जैसल ने इस किले का निर्माण करवाया।

"गढ़ दिल्ली गढ़ आगरो, अर गढ़ बीकानेर।
भलो चिणायो भाटियां, सिरे गढ़ जैसलमेर॥"

• जैसलमेर के किले में 99 बुर्जें बनी हुयी हैं।

• जैसलमेर का किला त्रिभुजाकार (त्रिकूट) आकृति में बना हुआ है।

"दूर से देखने पर ऐसा लगता है मानो रेत के समन्दर में जहाज ने अपना लंगर डाल रखा हो।"

• जैसलमेर का किला अंगड़ाई लेते शेरे के समान प्रतीत होता है।

• जैसलमेर के किले को 'स्वर्णगिरी का किला' कहते हैं। इसे सोनार का किला भी कहते हैं।

• सत्यजीत रे 'सोनार किला' नामक डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म बनायी थी।

• जैसलमेर के किले में दोहरा परकोटा बना हुआ है, जिसे कमर कोट कहा जाता है।

• जैसलमेर का किला अपने 2½ साकों के लिए प्रसिद्ध है।

• अबुल फजल ने कहा था - पत्थर की टांगे ही आपको जैसलमेर के किले तक पहुंचा सकती हैं।

"शरीर किजे काठ रा, पग कीजे पाषाण।
बख्तर कीजे लौह का, तब पहुंचे जैसाण॥"

• इस किले में चूने का ~~प्र~~ उपयोग नहीं किया है।

• जैसलमेर के किले की छत लकड़ी की बनी हुयी है।

• बादल महल बना हुआ है।

• जवाहर विलास महल

• 2009 A.D. में जैसलमेर किले में 5 रु. का डाक टिकट जारी किया गया।

बीकानेर - दुर्ग : (चतुष्कोण आकृति)

- बीकानेर के किले को जूनागढ़ किला कहा जाता है।
- इस किले का निर्माण महाराजा रायसिंह ने करवाया था।
- इसमें 37 बुर्जें बनी हुयी हैं।
- जूनागढ़ के किले को 'जमीन का जेवर' कहते हैं।
- जूनागढ़ में सूरजपोल के पास जयमल फत्ता की मूर्तियां लगी हुयी हैं।
- जूनागढ़ किले में 33 करोड़ देवी- देवताओं का मंदिर है।
- बादल महल
  अनूप महल
  हर मंदिर (बीकानेर के राजाओं का राजतिलक किया जाता था)
  (निर्माण - महाराजा डूंगरसिंह ने करवाया था)
- जूनागढ़ किले के चारों तरफ खाई बनी हुई है।

* आमेर व बीकानेर दो ऐसे किले हैं, जो जिस वंश के द्वारा निर्मित किए गए थे, हमेशा उसी वंश के अधिकार में रहे।

भटनेर का किला :

- हनुमानगढ़ जिले में स्थित। (भूपत भाटी ने इसका निर्माण शुरू करवाया था)
- भाटी शासकों ने इसका निर्माण करवाया था।
- महमूद गजनवी ने इस पर आक्रमण किया था।

- तैमूर ने भी यहां आक्रमण किया था। इस आक्रमण के समय यहां हिन्दू महिलाओं के साथ-साथ मुस्लिम महिलाओं ने भी जौहर किया था।
- तैमूर इसे भारत का सर्वश्रेष्ठ किला बताता है।
- तैमूर के आक्रमण के समय यहां का शासक दूलचन्द भाटी था।
- हुमायूं के भाई कामरान ने भी यहां आक्रमण किया था। उस समय यहां का किलेदार खेतसिंह कांधल था।
- अकबर ने भी यहां आक्रमण किया था। कल्याणमल का भाई ठाकुरसिंह लड़ता हुआ मारा गया।
- रायसिंह के बेटे दलपत सिंह व उसकी पांच रानियों के स्मारक बने हुए हैं। (दलपतसिंह ने अपने पिता रायसिंह के विरूद्ध भी विद्रोह किया था)
- मनोहर कछवाहा ने यहां मनोहर पोल का निर्माण करवाया।
- 1805 में बीकानेर महाराजा सूरतसिंह ने इस पर अधिकार कर लिया उसदिन मंगलवार था, इसलिए भटनेर के किले का नाम बदलकर हनुमानगढ़ कर दिया।
- भारत में सबसे अधिक आक्रमण झेलने वाला किला।
- भटनेर के किले को 'उत्तरी सीमा का प्रहरी' कहा जाता है।
- इसमें भद्रकाली माता का मंदिर बना हुआ है।
- बलबन के भाई शेर खां की कब्र है।

जालौर का किला :

- सूकड़ी नदी के किनारे स्थित।
- सुवर्णगिरी के किले के नाम से विख्यात।
- प्रतिहार शासक नागभट्ट I ने इसका निर्माण करवाया।
- कान्हडदेव सोनगरा ने यहां पुनर्निर्माण करवाया।
- 1311 A.D. में जालौर के किले में साका हुआ था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने यहां अलाई मस्जिद व खिलजी मीनार बनवाई थी। जालौर का नाम जलालाबाद रख दिया था।
- जोधपुर महाराजा मानसिंह अपने संघर्ष के दिनों में जालौर के किले में रहा था। (मानसिंह महल)
- जालौर के किले में तोपखाना मस्जिद बनी हुयी है। जो पूर्व में भोज परमार द्वारा बनायी गयी एक संस्कृत पाठशाला थी।

कान्हडदेव की बावडी, वीरमदे की चौकी, जलंधर नाथजी का मंदिर।
मलिक शाह की दरगाह।

सिवाणा का किला : (इसी दुर्ग में शेर-ए-राज्य जयनारायण व्यास को बंदी बनाकर रखा गया था।)

- बाड़मेर जिले में स्थित। (हल्देश्वर पहाड़ी पर)
- वीर नारायण पंवार ने इसका निर्माण करवाया था।
- कूमट झाड़ी की अधिकता के कारण इसे कूमट दुर्ग भी कहते हैं।
- सिवाणा का किला राठौड़ों की शरणस्थली (राव चन्द्रसेन व मालदेव ने शरण ली थी), जालौर की कुंजी कहलाता है।
- अलाउद्दीन के आक्रमण के समय सातल व सोम के नेतृत्व में साका हुआ था।
- अकबर के आक्रमण के समय कल्ला रायमलोत के नेतृत्व में साका हुआ था।

(रामसनोत)

"किलो अणखलो यूं कहे, ~~सुण~~ आव कल्ला राठौड़।

म्हारे तो मेहणो उतरे, तोहे बंधे सिर मौड़।।"

(व्यंग)

- सिवाणा के किले में मांडेलाव तालाब बना हुआ है।

आमेर का किला:

- इसे कादिलगढ़ भी कहा जाता है।
- मानसिंह I ने इसका निर्माण करवाया था।
- ~~यह किला कछवाओं वंश का संकटमोचक किला कहा जाता है।~~
- आमेर के किले में सुहाग मंदिर है। यह रानियों के हास-परिहास का स्थान था।
- सुख मंदिर :- एक जैसे 12 कमरे हैं, जो मिर्जा राजा जयसिंह ने बनवाए थे।
- दौलाराम का बाग
- मावठा जलाशय
- शिला माता का मंदिर
- जगत शिरोमणि मंदिर
- अम्बिकेश्वर मंदिर
- बारहदरी महल
- शीश महल
- दीवान-ए-आम
- दीवान-ए-खास
- केसर क्यारी बगीचा

जयगढ़ का किला :

- पहले इस स्थान को चील्ह का टोला कहते हैं।
- मानसिंह I ने इसका निर्माण कार्य शुरू करवाया था।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने इसका निर्माण पूरा करवाया व इसका नाम जयगढ़ रखा।
- सवाई जयसिंह ने इस में जयबाण तोप रखवायी।
- जयगढ़ का किला अपने पानी के विशाल टांको के लिए प्रसिद्ध है।
- इसमें आमेर के कछवाहों शासकों का शस्त्रागार व खजाना था।
- इन्दिरा गांधी ने यहां 1975-76 में यहां खुदाई करवायी।
- इस किले में सुरंगे बनी हुयी हैं। इस कारण इस किले को रहस्यमय दुर्ग भी कहते हैं।
- इसे जयपुर का संकटमोचक किला कहते हैं।
- विजयगढ़ी : राजनैतिक जेल, सवाई जयसिंह ने अपने छोटे भाई (चीमाजी) विजयसिंह को यहां गिरफ्तार करके रखा था, इस कारण इसका नाम विजयगढ़ी पड़ गया।

नाहरगढ़ का किला :

- इस किले का निर्माण सवाई जयसिंह ने करवाया था।
- जगतसिंह II की प्रेमिका रसकपूर को यहीं गिरफ्तार करके रखा गया था।
- सवाई माधोसिंह II ने अपनी 9 पासी / पासवानों के लिए 9 एक जैसे महल बनवाए।

• इसे जयपुर का पहरेदार किला कहते हैं।

• प्रारम्भ में इसका नाम सुदर्शनगढ़ था, बाद में नाहरसिंह भौमियां जी के नाम पर इसका नाम नाहरगढ़ पड़ गया।

बाला किला :

- अलवर जिले में स्थित है।
- निकुम्भ चौहानों ने इसका निर्माण करवाया था।
- कोकिल देव के बेटे अलघुराय ने इसका पुनर्निर्माण करवाया था।
- हसन खां मेवाती ने इसकी ~~पुनर्निर्माण~~ मरम्मत करवायी।
- इसमें — { निकुम्भ महल, जल महल
- जहांगीर इस किले में ठहरा था। इसलिए इसे सलीम महल भी कहते हैं।
- करणी माता का मंदिर बना हुआ है। (बख्तावर सिंह)

तारागढ़ (अजमेर) :

- इस किले का निर्माण चौहान शासक अजयराज ने करवाया।
- उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज ने अपनी पत्नी तारा के नाम पर इसका नाम तारागढ़ रख दिया।
- पृथ्वीराज चौहान का स्मारक बना हुआ है। पृथ्वीराज चौहान के घोड़े

तारा रम्भा का स्मारक बना हुआ है।

- मीरान साहब की दरगाह बनी हुयी है।
- यह किला मराठों के अधिकार में भी रहा था।
- इस किले में नाना साहब का झालरा बना हुआ है।
- मराठों से यह किला अंग्रेजो ने छीन लिया
- विलियम बैंटिक ने इसे 'आरोग्य सदन' में बदल दिया।
- दारा शिकोह ने यहां शरण ली थी।
- राठी रानी उमा दे ने भी अपना कुछ समय यहां बिताया था।
- हिंजडे की मजार बनी हुयी है।
- इसे राज. का जिब्राल्टर कहते हैं।
- गढ़ बीठली किला भी कहते हैं। (बीठली पहाड़ी, शाहजहां का सामन्त विट्ठल राज गौड ने पुनर्निमाण करवाया)

अकबर का किला :

- 1570 A.D. में ख्वाजा मुइनदीन के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए अकबर ने इस किले का निर्माण करवाया।
- हल्दीघाटी युद्ध से पहले यहां पर युद्ध की अंतिम योजना बनायी गयी थी।
- जहांगीर मेवाड़ अभियान के दौरान तीन साल यहां ठहरा था।
- 10 Jan. 1616 को 'टॉमस रो' जहांगीर से मिलता है।
- इस महल को अकबर का दौलतखाना भी कहते हैं।
- अंग्रेजों ने इसे शस्त्रागार में बदल दिया था, इसलिए इसे मैगजीन का किला भी कहते हैं।
- इसमें राजपूताना म्यूजियम बना हुआ है।

चुरू का किला : (कुशाल सिंह)

- इस किले का निर्माण चुरू के ठाकुर कुशाल सिंह ने करवाया था।
- 1815 A.D. में बीकानेर के राजा सूरत सिंह ने यहां आक्रमण किया, उस समय चुरू का ठाकुर स्योजी सिंह (शिव जी सिंह) था।
- इस आक्रमण के समय किले में सीसा समाप्त होने पर चाँदी के गोले दागे गये थे (बीकानेर का सेनापति - अमरचन्द सुराणा)

"बीको फीको पड़ गयो, बण गोरा हमगीर।
चाँदी गोळा चालिया, आ चूरू री तासीर॥"

भरतपुर का किला (लोहागढ़)

- 1733 A.D. में सूरजमल ने इस किले का निर्माण करवाया।
- भरतपुर के राजा जवाहर सिंह ने इस किले में दिल्ली आक्रमण से लूट कर लाए हुये अष्ट धातु के दरवाजे लगवाए। तथा इस जीत की स्मृति में किले में जवाहर बुर्ज बनवायी।
- महाराजा रणजीत सिंह ने जसवंत राव होल्कर को इस किले में शरण दी थी।
- अनेक प्रयासों के बावजूद अंग्रेज इस किले को जीत नहीं सके, इसी कारण भरतपुर के किले को लोहागढ़ कहा जाता है।
- रणजीत सिंह ने इस जीत की स्मृति में 'फतेह बुर्ज' का निर्माण करवाया।
- चार्ल्स मेटकॉफ ने अंग्रेजो की इस विफलता पर कहा था —
"अंग्रेजो की प्रतिष्ठा भरतपुर के दुर्भाग्यपूर्ण घेरे में दबकर रह गई।"
इसी किले के बारे में कहा जाता है —

"आठ फिरंगी नौ गोरा,
लड़े जाट का दो छोरा ॥"
"(दुर्जनलाल और माधोसिंह)

- किशोरी महल
  दादी मां का महल
  वजीर की कोठी
  गंगा मंदिर
  लक्ष्मण मंदिर

बयाना का किला :

- इस किले का निर्माण विजयपाल ने करवाया था।
- इसे बादशाह का किला
  बाणासुर किला
  विजय मंदिर गढ़, के नाम से जाना जाता है।
- खानवा के युद्ध के बाद बाबर इस किले में आया था।
- इसमें - लोदी मीनार
  अकबर की छतरी
  जहांगीरी दरवाजा
  सादुल्ला सराय
  दाउद खां की मीनार
- बयाना में समुद्रगुप्त ने विजय स्तम्भ का निर्माण करवाया।
- रानी चित्रलेखा (समुद्रगुप्त के सामंत की पत्नी) ने ऊषा मंदिर का निर्माण करवाया ।
- समुन्द्रगुप्त के सामन्त विष्णुवर्धन ने भीमलाट / ऊषालाट का निर्माण करवाया था।

तारागढ़ (बूंदी)

- इस किले का निर्माण हाड़ा शासक बरसिंह ने करवाया था।
- दूर से देखने पर यह तारे के समान दिखायी देता है।
- इसमें - सुख महल
  छत्र महल
  रानी जी की बावडी
  84 खम्भों की छतरी
  फूल सागर तालाब

सूरसागर तालाब - बूंदी | बीकानेर

- बूंदी का तारागढ़ किला अपने भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- रूडयार्ड किपलिंग - इसे देखकर लगता है कि इसका भूतों द्वारा निर्माण करवाया गया है।
- जेम्स टॉड - बूंदी के महलों को राज. का सर्वश्रेष्ठ महल बताता है।
- 'गर्भ गुंजन' तोप रखी हुयी है।

मांडलगढ़ : (बनास, बेड़च व मेनाल नदियों के संगम पर)

- वर्तमान भीलवाड़ा जिले में स्थित है।
- इस किले का निर्माण चांदना/चानणा गूर्जर ने माण्डिया भील की स्मृति में करवाया था। (पुर्ननिर्माण - महाराणा कुम्भा)
- मांडलगढ़ में जगन्नाथ कछवाहा की 32 खंभों की छतरी बनी हुयी है।
- राणा सांगा की छतरी भी यहीं स्थित है।

- मानसिंह हल्दीघाटी युद्ध से पहले माण्डलगढ़ में रुकता है।
- इस में उंडेश्वर महादेव का मंदिर बना हुआ है।
- शीतला माता का मंदिर भी है।
- मांडलगढ़ मण्डल आकृति में बना हुआ है, इसलिए भी इसे मांडलगढ़ कहते हैं।

अचलगढ़ :

- इस किले का निर्माण परमार शासकों ने करवाया था।
- महाराणा कुम्भा ने इसका पुनर्निर्माण करवाया व कुम्भा स्वामी का मंदिर बनवाया।
- सावन भादो की मूर्तियां (कुम्भा - ऊदा) लगी हुयी हैं।
- अचलेश्वर स्वामी का मंदिर है, इसमें शिव जी के अंगूठे की पूजा की जाती है। इस मंदिर के ठीक सामने दूरसा आढ़ा की मूर्ति लगी हुयी है।
- अचलगढ़ को 'भँवराथल' कहते हैं, क्योंकि महमूद बेगड़ा के आक्रमण के समय यहां पर मधुमक्खियों ने उसकी सेना पर आक्रमण कर दिया था।

शेरगढ़ :

- यह किला बारां जिले में परवन नदी के किनारे स्थित है।
इसे कोषवर्धन गढ़ भी कहते हैं। (जल दुर्ग)

शेरगढ़ (धौलपुर) :

- इसका निर्माण कुषाण काल में हुआ था।
  (मालदेव नामक सामन्त ने)
- शेरशाह सूरी ने इसका नाम शेरगढ़ रख दिया था।
- इस किले में सैय्यद हुसैन की दरगाह है।
- हुनहुंकार तोप भी इसी किले में स्थित है।

* धौलपुर के सिक्कों को 'तमंचाशाही' कहते हैं।

- इस शहर किले में भारत का सबसे बड़ा घंटाघर है।
- धौलपुर में कमलबाग है, जिसका बाबर की आत्मकथा बाबरनामा में जिक्र है।
- राजस्थान, मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश की सीमाओं पर स्थित।

कोटा का किला : (माधोसिंह, परकोटा)

- जैत्रसिंह (बूंदी का राजा) ने यहां एक गुलाब महल का निर्माण करवाया। कालान्तर में माधोसिंह ने इसे कोटा के किले के रूप में विकसित किया।
- जेम्स टॉड के अनुसार इस किले का परकोटा आगरा के किले के बाद सबसे बड़ा है।
- झाला हवेली - भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध

कांकणबाड़ी का किला : (अलवर, मिर्जा राजा जयसिंह)

- अलवर जिले में स्थित मिर्जा राजा जयसिंह ने इसका निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने दारा शिकोह (बड़े भाई) को यहां बंधक बना कर रखा था।

शाहबाद का किला :

- बारां जिले में स्थित।
- मुकुटमणि देव चौहान ने इसका निर्माण करवाया था।
- शेरशाह सूरी अपने कालिंजर अभियान के दौरान इस पर अधिकार कर लेता है व इसका नाम सलीमाबाद कर देता है।
- इसमें एक बादल महल बना हुआ है।
  (अललपंख पक्षी - बादल महल के दरवाजे पर)
- इसमें नवलबान तोप रखी हुयी है।

चौमूं का किला :

- जयपुर जिले में स्थित।
- इसे धा धारागढ़, रघुनाथगढ़, चौमुंहागढ़ भी कहते हैं।
- इसका निर्माण करणसिंह ने करवाया था।
- इसमें एक हवा मंदिर (आतिथ्य स्वागत) बना हुआ है।

दौसा का किला :

- देवगिरी पहाड़ी पर बना हुआ है।
- छाजले की आकृति का बना हुआ है।
- दौसा कछवाओं की पहली राजधानी थी।

माधोराजपुरा का किला :

- ~~सवाई माधोपुर~~ जयपुर जिले में स्थित। (फागी तहसील के पास)

जयपुर महाराजा सवाई माधोसिंह ने मराठों पर जीत के उपलक्ष्य में बनवाया था।

- यह किला कछवाहों की नरुका शाखा के अधीन रहा था। यहां का भारत सिंह नरुका, अमीर खां पिण्डारी की बेगमों को बंधक बना कर लाता है।

फतेहपुर का किला :

- सीकर जिले में स्थित।
- 1453 में फतेहपुर के नवाब फतेह खां कायमखानी ने निर्माण करवाया था।
- पीर निजामुद्दीन की दरगाह बनी हुयी है।
- बीकानेर के राजा लूणकरण ने यहां आक्रमण किया था।

* सरस्वती पुस्तकालय - फतेहपुर

नीमराणा का किला :

- अलवर जिले में स्थित।
- इसे पंचमहल भी कहते हैं।

कुचामन का किला : (निर्माण = मेड़तिया शासक - जालिम सिंह)

- नागौर के जिले में स्थित।
- इसे जागीरी किलों का सिरमौर कहते हैं।

नागौर का किला :

- इसका निर्माण चौहान शासक सोमेश्वर के सामन्त कैमास ने करवाया था।
- इसे 'अहिच्छत्रगढ़' दुर्ग भी कहते हैं।
- अमर सिंह राठौड़ की वीरता के लिए प्रसिद्ध है।
  ↓
  (16 खंभो की छतरी) (2007 - Award of Excellence to this fort)

• इसे 2013 का आगा खां अवार्ड दिया गया है।

भैंसरोड़गढ़ का किला :- (एक व्यापारी द्वारा निर्मित)

- चम्बल व बामनी नदियों के संगम पर चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है।
- इसे राज० का वेल्लोर कहते हैं। (जल दुर्ग)

मालकोट का किला :

- मेड़ता (नागौर) के किले को मालकोट का किला कहते हैं।
- निर्माण - मालदेव ने।

मोहनगढ़ का किला :

- जैसलमेर जिले में स्थित।
- निर्माण - जैसलमेर महाराजा जवाहर सिंह के समय।
- भारत का अंतिम किला है।

तिमनगढ़ का किला :

- त्रिभुवनगढ़ भी कहते हैं।
- ननद - भौजाई का कुआं।

राजस्थान की प्रमुख छतरियाँ

गैटोर की छतरियां :

- यहां पर जयपुर के शासकों की छतरियां है।
- सवाई जयसिंह से लेकर माधोसिंह II तक।
- ईश्वरी सिंह की छतरी यहां स्थित नहीं है, ईश्वरी सिंह की छतरी ईसरलाट के पास ही है।

आहड़ :

- यहां पर मेवाड़ के शासकों की छतरियां है।
- सबसे पहले यहां अमरसिंह I की छतरी बनायी गयी थी।

इस स्थान को महासतियां कहते हैं।

पंचकुण्ड (मंडोर) :

- यहां जोधपुर के राजाओं की छतरियां हैं।

* **जसवन्त थड़ा :** जोधपुर के महाराजा जसवन्त सिंह II का स्मारक, इसका निर्माण उनके बेटे सरदार सिंह ने करवाया था। इसे राज. का ताजमहल कहते हैं।
↓
मेहरानगढ़ किले के पास

कागा की छतरियां : यहां जोधपुर के सामन्तों की छतरियां बनायी जाती हैं।

- जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह I के प्रधानमंत्री रामसिंह कुम्पावत की 16 खम्भों की छतरी बनी है।

देवी कुंड सागर (बीकानेर)

- यहां बीकानेर के राजाओं की छतरियां बनी हुयी है।
- इनमें राव कल्याण मल की छतरी अधिक प्रसिद्ध है।

बड़ा बाग (जैसलमेर) - (महारावल जैतसिंह की छतरी)

- यहां जैसलमेर के राजाओं की छतरियां बनी हुयी है।

क्षार बाग

- कोटा के राजाओं की छतरियां बनी हुयी हैं।
- क्षार बाग की छतरियों को छत्रविलास बाग की छतरियां भी कहते हैं।

पालीवाल

- जैसलमेर

- बन्जारों की छतरी - लालसोट (दौसा)
- नाथों की छतरी - जालौर
  ↳(छतरी पर तोता बना हुआ है।)
- मिश्रजी की छतरी - अलवर जिले के नेहड़ा गांव में स्थित।
  - भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध।
  - दशावतारों के चित्र बने हुये हैं।
- कुत्ते की छतरी - जोधपुर - ? (सवाई माधोपुर)

गोपाल सिंह जी की छतरी - करौली

→ गंगा बाई की छतरी : गंगापुर सिरी (भीलवाड़ा)

• महादजी सिन्धिया की पत्नी

→ रैदास जी, कल्ला जी की छतरी – चित्तौड़गढ़ में

* राजस्थान की प्रमुख हवेलियां व महल :

(विश्व की एकमात्र हवेली, जिसकी खिड़कियां पत्थर की बनी हुयी है।)

* जैसलमेर : ① पटवों की हवेली – जिसका निर्माण गुमानचन्द बाफना ने करवाया।

② सालिम सिंह की हवेली – 9 मंजिला हवेली, जिसकी ऊपर की दो मंजिले लकड़ी की बनी हुयी है।

③ नथमल की हवेली – वास्तुकार : हाथी व लालू

④ सर्वोत्तम विलास पैलेस –

* शेखावाटी :

① सोने – चांदी की हवेली – महनसर (झुन्झुनु)

② भगतों की हवेली – नवलगढ़ (झुन्झुनु)

③ रामनाथ गोयनका की हवेली – मंडावा (झुन्झुनु)

④ पसारी की हवेली – श्रीमाधोपुर (सीकर)

⑤ माल जी का कमरा – चुरु

⑥ मन्त्रियों की हवेली – चुरु

⑦ पुराणों की हवेली – चुरु (चुरु का हवामहल)

⑧ खेतड़ी महल – झुन्झुनु (राज्य का दूसरा हवा महल)

* **नवलगढ** : सर्वाधिक हवेलियाँ
  - हवेलियों का नगर
  - शेखावाटी की स्वर्ण नगरी।

* **कोटा** :
  - गुलाब महल
  - अबली मीणी का महल
  - अमेड़ा महल
  - हवा महल - रामसिंह II
  - जगमंदिर - दुर्जनसाल ने अपनी रानी ब्रज कंवर के लिए बनाया।

* **जोधपुर** :

(1) बड़े मियां की हवेली

(2) राखी हवेली

(3) पोकरण हवेली

(4) एक खम्भा महल - महाराजा अजीत सिंह ने बनवाया था।

(5) राई का बाग पैलेस - जसवंत दे (जसवंत I की रानी)

(6) उम्मेद पैलेस - छीतर पैलेस भी कहते हैं।
  - इसका निर्माण अकाल राहत कार्यों के दौरान कराया गया था।
  - यह विश्व (एशिया) का सबसे बड़ा आवासीय महल है।

(7) अजीत भवन पैलेस - राज्य का पहला हेरिटेज होटल

(8) पुष्य हवेली : विश्व की एकमात्र हवेली, जो एक ही नक्षत्र पुष्य नक्षत्र में बनी।

डूंगरपुर :

(1) एक थम्बिया महल :

(2) जूना महल

अलवर :

(1) हवा बंगला ; तिजारा

(2) विनय विलास पैलेस ; सिटी पैलेस (अलवर)

टोंक :

* (1) सुनहरी कोठी -(इस्लामिक शैली में निर्मित)

(2) राजमहल ; देवली

(3) मुबारक महल

जयपुर :

(1) सलीम मंजिल

(2) प्यारे मियां की हवेली

बीकानेर :

(1) रामपुरिया हवेली

(2) बच्छावतों की हवेली - कर्णसिंह बच्छावत ने बनवायी थी।

(3) गूँधड़ा हवेली

(4) मोहता हवेली (5) गजनेर पैलेस (गजसिंह)

राज॰ की जनजातियाँ

(1) कंजर :

- मुख्यतया हाड़ौती क्षेत्र में।
- मुख्य व्यवसाय ; चोरी करना
- चोरी करने से पूर्व आशीर्वाद (देवता से) मांगते है, जिसे ये पाती मांगना कहते हैं।
- जोगणिया माता (~~भीलवाड़ा~~ चित्तौड़गढ़) - कंजरो की कुलदेवी
  चौथमाता (चौथ का बरवाड़ा, सवाई माधोपुर)
  रक्तदंजी माता - बूंदी
  हनुमान जी - आराध्य देव
- हाकम राजा का प्याला पीने के बाद झूठ नहीं बोलते हैं।
- मरणासन्न व्यक्ति के मुंह में शराब डाली जाती है।
- शव को दफनाते हैं।
- इनके मुखिया को 'पटेल' कहते हैं।
- मोर का मांस खाते हैं।
- इनके घरों में पीछे की तरफ खिड़की अनिवार्य होती है।
- महिलाएं चकरी नृत्य करती हैं। नृत्य करते समय विशेष प्रकार का पायजामा ~~कहते~~ पहनते हैं, जिसे खूसनी कहते हैं।

(2) कथौड़ी :

- उदयपुर जिले में अधिक संख्या।
- मूल रूप से महाराष्ट्र के हैं।
- खैर के वृक्ष से कत्था बनाते हैं, इसलिये कथौड़ी कहते हैं।

- कथौड़ी दूध नहीं पीते हैं।
- कथौड़ी शराब पीते हैं।
- महिलाएं भी पुरुषों के बराबर बैठकर शराब पीती हैं।
- महिलाएं गहने नहीं पहनती, गोदना गुदवाती हैं।
- कथौड़ी महिला द्वारा पहने जाने वाली साड़ी '<u>फड़का</u>' कहलाती है।
- इनका मुखिया 'नायक' कहलाता है।
- प्रमुख देवता – { डूंगर देव, बाघ देव, भारी माता, कंसारी माता }
- कथौड़ी एक संकटग्रस्त जनजाति है, केवल 35-40 परिवार ही बचे हैं।
- इनको 'मनरेगा' में विशेष लाभ दिया जाता है। पूरे परिवार को 250 दिन का रोजगार दिया जाता है।
- कथौड़ी पुरुषों द्वारा '<u>मावलिया नृत्य</u>' नवरात्रि के दिनों में किया जाता है। और महिलाएं होली पर होली नृत्य करती हैं।
- कथौड़ी झोंपड़े को '<u>खोलरा</u>' कहते हैं।

<u>डामोर</u> : (0.7%)

- मुख्यतः उदयपुर, डूंगरपुर व बांसवाड़ा।
  (डूंगरपुर → सर्वाधिक - डामोर)
- डूंगरपुर जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति को डामरिया क्षेत्र कहते हैं।
- एकमात्र जनजाति जो वनाश्रित नहीं है। कृषि व पशुपालन करते हैं।
- डामोर अपनी उत्पत्ति '<u>राजपूतों</u>' से मानते हैं।
- डामोर पुरुष महिलाओं के समान गहने पहनते हैं।
- होली के अवसर पर किया जाने वाला कार्यक्रम 'चाड़िया' कहलाता है।
- होला बावजी का मेला ; पंचमहल (गुजरात)
  ग्यारस की रेवड़ी का मेला ; डूंगरपुर (सितम्बर माह में)

. मुखिया - मुखी
. डामोर बहुविवाह करते हैं; विवाह का माधार 'वधू मूल्य' कहते हैं।

सांसी :

- भरतपुर जिले में अधिक संख्या में।
- इनकी उत्पत्ति सांसमल से मानी जाती है।
- इनकी दो उपजातियां हैं – ① बीज्जा
  ② माला

*सांसी विधवा विवाह नहीं करते हैं।

- 'माखर बावजी' (कुलदेवता) की कसम खाने के बाद ये झूठ नहीं बोलते हैं। कसम खाते समय ये एक हाथ में कुल्हाड़ी व दूसरे हाथ में पीपल का पत्ता रखते हैं। (माखर बावजी के मंदिर में)
- लड़की को शादी के बाद अपने चरित्र की परीक्षा देनी पड़ती है, जिसे कूकड़ी रस्म कहते हैं।
- सिकोदरी माता इनकी प्रमुख आराध्य देवी है।
  अशोक जाडेजा (सांसी) - डाकर (गुजरात)

गरासिया : (2.7%)

- सिरोही – आबू, पिण्डवाड़ा तहसील में
- पाली – बाली तहसील
- गरासिया महिलाएं सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध हैं।
- प्रेम विवाह को अधिक तवज्जो दी जाती है।
- विवाह के प्रकार :
  (1) मोर बांधिया विवाह (परम्परागत)
  (2) पहरावणा विवाह
  (3) ताणना विवाह
  (पैसे देकर - छीनकर)

(4) मेलबी विवाह (बाल-विवाह के बाद बड़ी होने पर लड़की को ससुराल छोड़कर आना।)

(5) खेवणो विवाह (शादीशुदा महिला अपने प्रेमी के साथ भाग जाते हैं।)

इसे माता विवाह भी कहते हैं।

(6) सेवा विवाह (घर जवाई)

- गरासिये के मुखिये को सहलोत या पालवी कहते हैं।
- सफेद पशु व मोर को पवित्र मानते हैं।
- नक्की झील में अस्थियों का विसर्जन करते हैं। (12वें दिन - अंतिम संस्कार)
- गरासिया, राज्य की तीसरी बड़ी जनजाति है।
- गरासियों की जातीय पंचायत के प्रकार :
- मोटीन्यात / ऊँचली न्यात - उच्च श्रेणी के लोग होते हैं, जिन्हें बाबीर-हाड्या कहते हैं।
- नेनकी न्यात - इसमें शामिल लोगों को माड़ेरिया कहा जाता है।
- निजली न्यात
- जब कोई गरासिया पुरुष भील महिला से शादी कर लेता है, तो उसे भील गरासिया कहते हैं। और जब कोई गरासिया महिला भील पुरुष से शादी कर लेती है, तो उसे गमेती गरासिया कहते हैं।
- हूरे / मोगी - मृतकों की याद में बनाए जाने वाले स्मारक। (कार्तिक पूर्णिमा के दिन विधिवत प्रतिष्ठापित करते हैं।)
- हेलरु - गरासियों की सहकारी संस्था
- गरासियों के प्रमुख मेले :

(1) सियावा गाँव का मेला - गणगौर (इस मेले में प्रेम विवाह अधिक होते हैं।)

(2) कोटेश्वर मेला - यह अम्बा जी में भरता है।

(3) चेतर-विचितर मेला - देलवाड़ा

- अनाज भंडार की कोठियाँ - साहरी

सहरिया : (1%)

- राज. की एकमात्र आदिम जनजाति (भारत सरकार द्वारा घोषित)
- बारां जिले के किशनगंज व शाहबाद जिलों में सर्वाधिक संख्या।
- सहरियों का मुखिया - कोतवाल
- बड़े गांव को 'सहराना' कहा जाता है।
  छोटी बस्ती को 'सहरौल' कहा जाता है।
- गांव के बीच में स्थित सामुदायिक केन्द्र टालिया / हथाई (हथाई) कहलाता है।
- सहरियों की पंचायती व्यवस्था त्रि-स्तरीय होती है -
  (1) पंचताई - पांच गांवो की पचायती
  (2) एकदसिया - 11 गांवो की पंचायती
  (3) चौरासियां - 84 गांवो की पंचायती
  ↓
  चौरासी गांवो की सभा सीताबाड़ी के वाल्मीकि मंदिर में होती है।
- सहरिया 'वाल्मीकि' को अपना आदि पुरूष मानते हैं।
- सहरियों की कुल देवी - कोड़िया माता
- तेजाजी व भैरव की भी पूजा करते हैं।
- दीपावली पर 'हीड़' गाते हैं।
  होली के अवसर पर लट्ठमार होली खेलते हैं। राई नृत्य किया जाता है।
- मकर सक्रान्ति के अवसर पर लकड़ी के डण्डों से 'लेंगी' खेला जाता है।
- वर्षा ऋतु में आला व लहँगी गीत गाया जाता है।
- कपिलधारा का मेला - कार्तिक पूर्णिमा

- सीताबाड़ी का मेला – ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा
  (इसे सहरियों का कुम्भ कहते हैं।)
- सहरिया महिलाएं गोदना गुदवाती हैं, पर पुरुषों को मनाही है।
- <u>धारी संस्कार</u> : मृतक के तीसरे दिन उसकी अस्थियों व राख को एक बर्तन से ढककर छोड़ दिया जाता है, अगले दिन उस जगह जैसी आकृति बनी होती है, यह समझा जाता है कि व्यक्ति का अगला जन्म उसी आकृति के अनुसार होगा।
- सहरिया पेडों पर घर बनाकर रहते हैं। इसे '<u>गोपना</u>' कहते हैं।
- अनाज व घरेलु सामान रखने की छोटी कोठी – कुसिली
  बडी कोठी – भडेली

<u>भील</u> (56%)

- राज० की सबसे प्राचीन जनजाति।
- भील शब्द की उत्पत्ति '<u>बील</u>' शब्द से हुयी है, जिसका अर्थ है, तीर-कमान।
- भीलों का मुख्य अस्त्र तीर कमान ही है।
- भील, राज० की दूसरी सबसे बडी जनजाति है।
- उदयपुर जिले में सर्वाधिक संकेन्द्रण।
- भील, (टोटम) को अपना कुल देवता मानते हैं।
- पेड - पौधों को टोटम का प्रतीक माना जाता है।
- <u>केसरियानाथजी</u> (ऋषभ देव) की केसर पीकर भील झूठ नहीं बोलते हैं।
- 'फाइरे - फाइरे', भीलों का रणघोष है।
- <u>हाथीवेण्डो विवाह</u> : पेड-पौधों को साक्षी मानकर किया जाने वाला विवाह। (हरज व लाडी)
- <u>भंगोरिया त्यौहार</u> के अवसर पर शादी की जाती है।

भील बाल विवाह नहीं करते हैं।

तलाक को 'छेड़ा फाड़ना' कहा जाता है।

यदि कोई महिला अपने पति को छोड़कर किसी दूसरे पुरुष के साथ रहती है तो उस पुरुष को पूर्व पति को झगड़ा राशि देनी पड़ती है।

विवाह के समय दूल्हे द्वारा अपने ससुराल में भराड़ी माता का चित्र बनाना होता है।

भराड़ी माता को विवाह की देवी कहते हैं।

भील पुरुषों द्वारा 'हाथीमना नृत्य' किया जाता है।

होली के दूसरे दिन गैर नृत्य किया जाता है।

गवरी - भीलों का प्रसिद्ध लोकनाट्य है, जो रक्षाबन्धन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है।

हेलमो - भीलों द्वारा मिल-जुल कर किया जाने वाला कार्य।

भीलों के प्रमुख मेले -

(1) घोटिया अम्बा मेला - बांसवाड़ा

(2) बेणेश्वर मेला - डूंगरपुर (माघ पूर्णिमा) - नवाटापुरा गाँव में

भील, स्थानान्तरित कृषि करते हैं। यह दो प्रकार की होती है -

- दजिया - मैदानी भागों में की जाने वाली कृषि।
- चिमाता - पहाड़ी भागों में।

भीलों का मुखिया गमेती कहलाता है।

मेवाड़ के राजचिन्ह में भील का चित्र बना हुआ है। मेवाड़ के महाराणा के राजतिलक में भी भील सरदार मुख्य भूमिका निभाता था।

पाखरिया - किसी सैनिक के घोड़े को मारने वाला

मीणा : (51%)

- राज्य में सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति।
- सर्वाधिक संख्या – जयपुर में।
- आमेर व बूंदी में पहले मीणा शासकों का अधिकार था।
- आमेर के राजा का राजतिलक मीणा करते थे।
- सर्वाधिक शिक्षित जनजाति।
- मीणाओं में दो प्रमुख वर्ग हैं – (1) जमींदार मीणा
  (2) चौकीदार मीणा
- गौतमेश्वर / भूरिया बाबा, मीणाओं के प्रमुख आराध्य देव। – (बैशाख पूर्णिमा) (13 April - 13 May)
- मीणा जाति के देवताओं को बुझ देवता कहा जाता है।

पुरुष → पटेल

ओड :

- यह जनजाति तालाबों में मिट्टी खोदने का कार्य करती है।
- जसमल ओड़ण : राव खंगार (गुजरात) के द्वारा जबरदस्ती करने पर अग्नि में कूद जाती है।

; शान्ता गान्धी ने जसमल ओडन नामक नाटक लिखा है।

→ राज॰ में भारत की कुल जनजाति का 13.5% निवास करता है।

→ राज॰ में सर्वाधिक जनजाति - उदयपुर जिले में।

→ राज॰ में प्रतिशत के आधार पर सर्वाधिक जनजाति - बाँसवाड़ा (76%)

→ न्यूनतम जनसंख्या - बीकानेर

→ प्रतिशत के आधार पर न्यूनतम संख्या - नागौर (0.3%)

→ राज॰ का ~~जनसंख्या~~ जनजाति की दृष्टि से भारत में छठा स्थान है।
- (मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, बिहार, गुजरात, राजस्थान)

राज० की हस्तकलाएँ

थेवा कला :

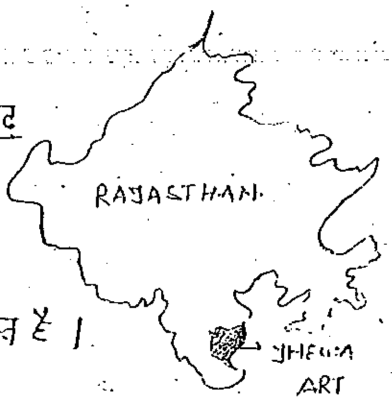

- विश्व में थेवा कला का एकमात्र केन्द्र - प्रतापगढ़
- थेवा कला - काँच में सोने का चित्रांकन।
- रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता है।
- प्रतापगढ़ का सोनी परिवार, इस कला में सिद्धहस्त है।
- 'नाथू जी सोनी' ने इस कला को शुरू किया था।
- वर्तमान में गिरीश कुमार इस कला को आगे बढ़ा रहे हैं।
- जस्टिन वकी ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलायी।

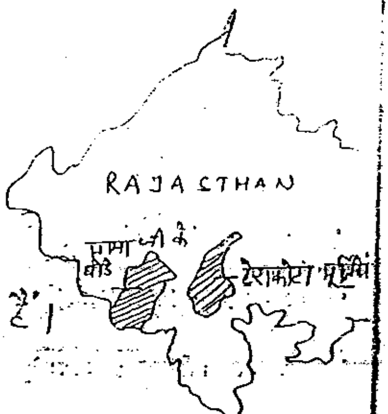

टेराकोटा :

- पकाई हुई मिट्टी से मूर्तियां व खिलौने बनाए जाते हैं।
- मिट्टी को 800°c temp. पर गर्म किया जाता है।
- राजसमन्द का मोलेला गांव टेराकोटा मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
- जालौर जिले का हरजी गांव मामा जी के घोड़े बनाये जाते हैं।
- 'मोहनलाल कुम्हार' को इसके लिए पद्म श्री मिल चुका है।
- बड़ोपल (हनुमानगढ़), एक पुरातात्विक स्थल है, जहां से टेराकोटा मूर्तियां प्राप्त हुयी हैं, जो बीकानेर संग्रहालय में रखी हुयी हैं।

ब्लू पॉटरी :

- चीनी मिट्टी के सफेद बर्तनों पर नीले रंगों का अंकन।
- जयपुर इसका प्रमुख केन्द्र है।
- जयपुर महाराजा रामसिंह के समय चूड़ामण व कालू कुम्हार को भोला नामक कारीगर से प्रशिक्षण लेने के लिए दिल्ली भेजा।
- वर्तमान में इसके प्रमुख कलाकार कृपाल सिंह शेखावत हैं, जिन्हें इसके लिए पद्म श्री से नवाजा जा चुका है।
- कृपाल सिंह जी ने नीले रंग के अतिरिक्त 25 से अधिक अन्य रंगों का प्रयोग किया, जो ब्लू पॉटरी की कृपाल शैली कहलाती है।

मीनाकारी :

- सोने पर रंग चढ़ाने की कला।
- जयपुर मीनाकारी के लिए प्रसिद्ध है।
- महाराजा मानसिंह इसे लाहौर से लेकर आए थे।
- कुदरत सिंह को मीनाकारी के लिए पद्म श्री मिल चुका है।
- अन्य केन्द्र - प्रतापगढ़, कोटा, बीकानेर।

उस्ता कला :

- ऊँट की खाल पर सोने की चित्रकारी।
- महाराजा अनूपसिंह (बीकानेर), अली रजा व रुकनुद्दीन को लाहौर से लेकर आए थे।
- बीकानेर उस्ता कला का प्रमुख केन्द्र है।
- बीकानेर के हिसामुद्दीन उस्ता को पद्म श्री मिल चुका है।

• उस्ता कला सिखाने के लिए बीकानेर में कैमल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर स्थापित किया गया है।

रंगाई- छपाई :

(1) बाड़मेर - अजरक प्रिन्ट - नीले रंग का अधिक प्रयोग।
मलीर प्रिन्ट - काले व कत्थई रंग का अधिक प्रयोग।

(2) सांगानेर - सांगानेरी प्रिन्ट (काला व लाल रंग)
मुन्ना लाल गोयल ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि दिलायी।

बगरू प्रिन्ट : इसमें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है।

(3) चित्तौड़गढ़ - दाबू प्रिन्ट
आजम प्रिन्ट - गाड़िया लुहारों की स्त्रियों के कपड़ों की छपाई।
जाजम प्रिन्ट

(4)

बंधेज :

• जयपुर में प्रसिद्ध है।
• 'TIE AND DYE' के नाम से प्रसिद्ध।

→ चूनड़ी - जोधपुर
* पीमचा - जयपुर
लड़के के जन्म पर - पीला पोमचा
लड़की के जन्म पर - गुलाबी पोमचा

→ तलवार - सिरोही

→ लोहे के औजार - नागौर

→ मोजड़ियाँ - भीनमाल (जालौर)
बड़गाँव (

→ पेच वर्क - शेखावाटी

→ मिरर वर्क - जैसलमेर

→ फड़ चित्रण - शाहपुरा (भीलवाड़ा)

शाहपुरा का जोशी परिवार फड़ चित्रण के लिए प्रसिद्ध है।
(श्रीलाल जोशी - प्रमुख कलाकार)

- पार्वती जोशी, भारत की पहली महिला फड़ चितेरी है।

→ बादला - जोधपुर (पानी को ठंडा रखने का बर्तन)

→ जस्ते की मूर्तियां - जोधपुर

→ रमकड़ा उद्योग (खिलौने) - गलियाकोट (डूंगरपुर)

→ काष्ठ कला - बस्सी (चित्तौड़गढ़)
(देवताओं के मंदिर, मूर्तियां)

→ तारकशी के जेवर - नाथद्वारा (राजसमंद)
(चांदी के पतले तारों द्वारा निर्मित जेवर)

→ गोटा किनारी - खंडेला (सीकर)
(किरण, बांकड़ी, लप्पा, लप्पी)

→ खस के बने पानदान - सवाई माधोपुर

→ कोटा डोरिया / मसूरिया - कैथून (कोटा)
मांगरोल (बारां)

- जालिम सिंह झाला सर्वप्रथम महमूद मंसूर नामक व्यक्ति को लेकर आये थे, इसलिए नाम मसूरिया पड़ा।
- वर्तमान में श्रीमती जैनब इसकी प्रमुख कारीगर है।
- इस कपड़े में चौकोर खाने बने होते हैं।

→ लहरिया – जयपुर और पाली।

→ जौरजटह – जसोल (बाड़मेर)

→ गलीचे / नमदे – टोंक,
जयपुर
बीकानेर

- जयपुर व बीकानेर की जेलों में बने गलीचे प्रसिद्ध है।

दरियाँ – सालावास (जोधपुर)
लवाण (दौसा)
✓ टांकला (नागौर)

कागजी बर्तनी – अलवर

आरा - तारी – सिरोही

जड़ाई – जयपुर

पिछवाई – नाथद्वारा

पाव रजाई – जयपुर

लाख का काम - जयपुर

हाथी दांत – जोधपुर
पाली

कठपूतली – उदयपुर

→ संगमरमर की मूर्तियां - जयपुर

↓

अर्जुन लाल प्रजापत को इसके लिए पद्म श्री मिल चुका है।

→ जरदोजी - जयपुर

→ पेपरमेसी - जयपुर

→ कागज से बनी वस्तुओं के लिए सांगानेर प्रसिद्ध है।

→ ब्लैक पॉटरी - कोटा

→ कोफ्तगिरी - लोहे की वस्तुओं में सोने की कारीगरी।

- जयपुर
अलवर

- यह कला सीरिया से भारत आयी थी।

→ तहनिशा - पीतल पर सोने की कारीगरी

* अलवर

→ तलवार - ब्यावर

→ खेल का सामान - हनुमानगढ़

→ जेम्स एंड ज्वैलरी - जयपुर

→ गरासियों की फाग (ओढ़नी) - सोजत (पाली)

→ मेंहदी - सोजत

→ पशु पक्षियों की कलाकृति - बू - नरावता (नागौर)

→ गोल्डन पेंटिंग - कुचामन एवं मारोठ (नागौर)

→ आलगीला कारीगरी - बीकानेर

→ पत्थर मूर्तिकला - तलवाड़ा (बांसवाड़ा)

→ मलमल - जोधपुर

→ चन्दन की मलयागीरी लकड़ी पर खुदाई - चुरू

→ काष्ठ पर कलात्मक शिल्प - जेठाना (डूंगरपुर)

→ ऊनी कम्बल - जैसलमेर

→ खेसले - लेटा (जालौर)

* हस्त शिल्प कागज राष्ट्रीय संस्थान - Sanganer (Jaipur)
  ↓
  UNDP तथा खादी व ग्रामोद्योग आयोग के प्रयासों से।

* हस्तशिल्प डिजाइन एवं विकास केन्द्र - Jaipur

* राज्य का पहला 'अरबन ~~हाट~~ हाट' जोधपुर में स्थापित किया गया है। (हस्तशिल्पियों को उनका पूरा मूल्य मिल सके)

* राज्य में शिल्प ग्राम -
  (1) उदयपुर
  (2) पाल (जोधपुर)
  (3) पुष्कर (2002)
  (4) सवाई माधोपुर (2003-04)

राजस्थान के त्यौहार

- चैत्र वसन्त ऋतु
- बैशाख, ज्येष्ठ — ग्रीष्म
- आषाढ़, श्रावण — वर्षा
- भाद्रपद, आश्विन — शरद ऋतु
- कार्तिक, मार्गशीर्ष — हेमन्त ऋतु
- पौष, माघ — शिशिर ऋतु
- फाल्गुन वसन्त ऋतु

- विक्रमी संवत् चैत्र शुक्ल एकम् से शुरु होता है।
- अंग्रेजी महिनों से बराबर करने के लिए प्रत्येक ~~चार~~ तीसरे वर्ष ~~बाद~~ एक महीना दो बार गिना जाता है, जिसे अधिकमास कहते हैं।

श्रावण :

कृष्ण पक्ष

- पंचमी - नागपंचमी
(सांपों को दूध पिलाया जाता है।)

- नवमी - निड़री नवमी
(नेवले की पूजा की जाती है।)

शुक्ल पक्ष

① तृतीया (तीज) - इसे छोटी तीज कहते हैं।
- इस तीज से त्यौहारों की शुरुआत मानी जाती है, तथा गणगौर तक जाकर मुख्य त्यौहार समाप्त हो जाते हैं।

तीज त्यौहारां बावड़ी, ले डूबी गणगौर।

अमावस्या –

हरियाली अमावस्या

* अजमेर के मांगलियावास में 'कल्प वृक्ष' का मेला भरता है।

- जयपुर की तीज की सवारी प्रसिद्ध है।
- शादी के बाद की पहली तीज, लड़की पीहर में मनाती है।
- तीज से एक दिन पहले लड़की के ससुराल पक्ष से सिंजारा आता है।
- तीज पर नवविवाहिताएं लहरिया पहनती है।
- बीकानेर का सावन अच्छा माना जाता है।

'सियालो जैपर भलो, उनालो अजमेर।
नागाणो नित री भलो; सावण बीकानेर॥'

② पूर्णिमा : रक्षाबन्धन

- इसको नारियल पूर्णिमा कहते हैं।
- श्रवण कुमार की पूजा की जाती है।
- रक्षाबन्धन के बाद अमरनाथ के दर्शन बंद हो जाते हैं।

भाद्रपद :

कृष्ण पक्ष

① तृतीया : – बड़ी तीज
कजली तीज
सातुड़ी तीज
बुढ़ी तीज

- बूंदी की कजली तीज प्रसिद्ध है।

② षष्ठी / छठ – ऊब छठ

शुक्ल पक्ष

① तृतीया - हरियाली तीज

② चतुर्थी - गणेशजी की चतुर्थी / शिव जी की चतुर्थी

- इस दिन रणथम्भौर में बड़ा मेला लगता है।

* चतरा चौथ / कलंक चतुर्थी - है। इस दिन चांद नहीं देखे

③ पंचमी – ऋषि पंचमी

· इस दिन लड़कियां निराहार व्रत रखती है व पूरे दिन खड़ी रहती है।

* हल षष्ठी - बलराम जयन्ती

पूजा करने वाले इस दिन गाय के दूध का सेवन नहीं करते हैं।

③ अष्टमी - जन्माष्टमी

· नरहड़ पीर का उर्स।

④ नवमी - गोगानवमी

⑤ द्वादशी / बारस - बछबारस

· बछड़े की पूजा की जाती है।

- मूंग अन्न खाया जाता है।

· चाकू का उपयोग नहीं किया जाता है।

⑥ अमावस्या - सतियां अमावस

· रानी सती का मेला भरता है।

* भाद्रपद में सर्वाधिक त्यौहार मनाए जाते है, इसलिए इसे बड़ा महीना कहते हैं।

· ब्राह्मणों व बणियों में इस दिन राखी बांधी जाती है।

· सप्त ऋषि की पूजा की जाती है।

· झोरड़ा (नागौर) में हरिराम जी का मेला भरता है।

④ अष्टमी - राधाष्टमी

· निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ सलेमाबाद (अजमेर) में इस दिन मेला भरता है।

⑤ दशमी - तेजादशमी

· खेजड़ली का वृक्ष मेला

· विश्वकर्मा जयन्ती - औजारों की पूजा की जाती है।

⑥ एकादशी

· रामदेव जी का मेला द्वितीया से एकादशी तक चलता है।

* भाद्रपद की दूज को 'बाबे री बीज' भी कहा जाता है। [भोजन थाली मेला - कामां भरतपुर]

* जल झूलनी ग्यारस :
भगवान श्रीकृष्ण (ठाकुर जी) को स्नान कराया जाता है।

⑦* चतुर्दशी - अनन्त चतुर्दशी

- गणेश विसर्जन

⑧ पूर्णिमा - श्राद्ध पक्ष शुरू होते हैं।

· इस दिन लड़कियां सांझी बनाती है। (गोबर की आकृति)

आश्विन :

कृष्ण पक्ष

श्राद्ध पक्ष - कृष्ण पक्ष की एकम् से अमावस्या तक श्राद्ध चलते हैं।

श्राद्ध पक्ष के अंतिम दिन (अमावस्या) को थम्बुड़ा व्रत करती हैं। (सांझी की पूजा करती हैं, जो कि श्राद्ध पक्ष के प्रत्येक दिन लड़कियां बनाती हैं।)

शुक्ल पक्ष

* एकम् -
- नवरात्रा शुरु हो जाते हैं, इन्हें शरद / बड़े नवरात्रा कहा जाता है।

* षष्ठी को आमेर में शिला माता का मेला भरता है।

* अष्टमी : दुर्गाष्टमी (पश्चिम बंगाल विशेषकर)

* दशमी : दशहरा
- खेजड़ी/शमी वृक्ष की पूजा की जाती है।
- हथियारों की पूजा भी की जाती है।
- इस दिन लीलटांस पक्षी (चिड़िया) के दर्शन शुभ माने जाते हैं।
- कन्हैयालाल सेठिया ने 'लीलटांस' नामक कविता लिखी है।
- कोटा का दशहरा प्रसिद्ध है। (भारत में मैसूर)
- भरतपुर में नुमायश मेला लगता है।

* पूर्णिमा : शरद पूर्णिमा
(चन्द्रमा 16 कलाओं से परिपूर्ण होता है।)
- इसे रास पूर्णिमा भी कहते हैं।
- इस दिन मारवाड़ महोत्सव का समापन होता है।

कार्तिक पक्ष

कृष्ण पक्ष

* चतुर्थी - करवा चौथ
* अष्टमी - अहोई अष्टमी (संतान के लिए व्रत रखा जाता है।)
  - तारों को देखकर व्रत खोल दिया जाता है।
* एकादशी - ~~तुलसी~~ रमा पूजा
* त्रयोदशी - धनतेरस
  - ऋषि धन्वन्तरि की पूजा की जाती है।
* चतुर्दशी - रूप चौदस / छोटी दीपावली
  - इस दिन यम की पूजा की जाती है।
* अमावस्या - दीपावली
  - बणिये, इस दिन अपने बही - खाते बदलते हैं।
  - दीपावली को भगवान महावीर, व दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस।

शुक्ल पक्ष

* एकम - गोवर्धन पूजा
  - इस दिन नाथद्वारा में अन्नकूट महोत्सव शुरु हो जाता है।
* द्वितीया / भैया दूज -
  - इस ~~दिन को भैया~~ यम दूज भी कहते हैं। (इस दिन चित्रगुप्त की पूजा होती है।)
* अष्टमी - गोपाष्टमी
* नवमी - आंवला नवमी / अक्षय नवमी
* एकादशी - देव उठनी ग्यारस / प्रबोधिनी एकादशी (तुलसी पूजा)
* पूर्णिमा - कार्तिक पूर्णिमा
  - इस दिन गंगा स्नान का विशेष महत्त्व है।
  - पुष्कर व कोलायत के मेले प्रसिद्ध है।
  - इसे सत्यनारायण पूर्णिमा कहते हैं।
  - गुरु नानक जयन्ती, इस दिन सिखों का कोलायत में मेला भरता है।

माघ

कृष्ण पक्ष

- चतुर्थी – तिल चतुर्थी
  – संकट हरण चतुर्थी
  – चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर) में मेला भरता है।

- एकादशी – षट्तिला एकादशी
  (6 प्रकार के तिलद्रव्यों का दान किया जाता है।)

- अमावस्या – मौनी अमावस्या
  – ऋषि मनु का जन्मदिन
  (इस दिन मौन रहते हैं)
  – कुम्भ स्नान

शुक्ल पक्ष

- एकम् से-
  गुप्त नवरात्रि शुरू हो जाते हैं।

- पंचमी – बसंत पंचमी
  – माता सरस्वती का जन्म दिन।
  – राज. में बालिका शिक्षा के लिए गार्गी पुरस्कार दिया जाता है।

- पूर्णिमा – बेणेश्वर मेला (डूंगरपुर)
  [नवातपुरा गांव, आसपुर तहसील]
  – यहां शिवलिंग 5 स्थानों से खंडित है।
  – बेणेश्वर मेले को आदिवासियों का कुम्भ कहते हैं।
  – वागड़ का पुष्कर
  – इस दिन होली का डंडा रोपण किया जाता है।

फाल्गुन :

कृष्ण पक्ष	शुक्ल पक्ष
• चतुर्दशी - महाशिवरात्रि	• द्वितीया - फुलेरा दूज
- शिवाड़ (सवाई माधोपुर) में घुश्मेश्वर महादेव का मेला भरता है।	* पूर्णिमा - होली
	• एकादशी - ढूंढ पूजा की जाती है।

पूर्णिमा (होली) - * ब्यावर में होली पर बादशाह (टोडरमल) की सवारी निकाली जाती है।

* भिनाय - कोड़ामार होली
  ↓
  (1st सहकारी समिति राज्य की)

* महावीर जी - लट्ठमार होली

* बाड़मेर - पत्थर मार होली।
  - बाड़मेर में इलो जी की सवारी निकाली जाती है।
  - इलो जी को छेड़ छाड़ का देवता कहा जाता है।

* सांगोद का न्हाण (कोटा)

* जयपुर में जन्म, मरण, परण का त्यौहार मनाया जाता है।

→ बादशाह की सवारी के आगे बीरबल भैरव नृत्य करता है।

चैत्र

कृष्ण पक्ष

• एकम् - धुलण्डी

• अष्टमी - शीतलाष्टमी
- इस दिन धुड़ले का त्यौहार शुरु हो जाता है।
- मारवाड़ के राजा राव सातल (जोधा का बेटा) के समय शुरु हुआ था।

शुक्ल पक्ष

एकम - विक्रमी संवत् शुरु होता है।
- महाराष्ट्र में गुडी पडवा मनाते हैं।
- बसन्त नवरात्रि शुरु।
- वृहद् राज्य का गठन

• तीज (तृतीया) - गणगौर के रूप में मनाते हैं।
- इस दिन शिव-पार्वती की पूजा की जाती है। (गणगौर की पूजा धुलण्डी से ही शुरु हो जाती है।)
- इस दिन पार्वती का गौना / मुकलावा हुआ था।
- जयपुर व उदयपुर की गणगौर सवारी प्रसिद्ध है। (चैत्र शुक्ल चतुर्थी)
- जैसलमेर में गणगौर पर केवल गौर / गवर की सवारी निकलती है। (बीकानेर वाले ईसर कोअपहरण कर ले जाते है।)
- सबसे अधिक गीतों वाला त्यौहार
- इस दिन लड़कियां अपने भाई व पति की दीर्घायु की कामना करती हैं।

• अष्टमी - अशोक अष्टमी

• नवमी - रामनवमी (भगवान राम का जन्मदिन)

• पूर्णिमा - हनुमान जयन्ती

वैशाख :

कृष्ण पक्ष

- तृतीया -
उदयपुर में
धींगा गवर मनायी
जाती है,
जोधपुर में इस दिन
धींगा गवर मेला लगता है।
(राजसिंह की पत्नी)

शुक्ल पक्ष

* तृतीया : आखा तीज / अक्षय तृतीया
- अबूझ सावा।
- राज॰ में सबसे ज्यादा बाल - विवाह इसी दिन होते हैं।
- बीकानेर का स्थापना दिवस

* पूर्णिमा : पीपल पूर्णिमा
: इसको बुद्ध - पूर्णिमा भी कहते हैं।

ज्येष्ठ :

कृष्ण पक्ष

* अमावस्या - बड़ मावस /
वट सावित्री व्रत

शुक्ल पक्ष

* दशमी - गंगा दशमी
(गंगा जी का धरती पर अवतरण।)

* एकादशी - निर्जला एकादशी
(गंगा जी के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए)
→ उदयपुर में निर्जला एकादशी पर पतंगें उड़ती हैं।

आषाढ़

कृष्ण पक्ष

शुक्ल पक्ष

- एकम् - गुप्त नवरात्रा शुरु हो जाते है।
- नवमी - भदल्या नवमी (विवाह के लिए अंतिम सावा)
- एकादशी - देव शयनी एकादशी।
- पूर्णिमा - गुरु पूर्णिमा
  - वेदव्यास का जन्म दिन, इसलिए इसे व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं।

* पूस की एक रात - प्रेमचन्द

* पौष - माघ - जनवरी

मुस्लिम - त्यौहार

- मुस्लिम त्यौहार 'हिजरी संवत्' के अनुसार मनाए जाते हैं।
- 622 A.D. में मौहम्मद साहब मक्का छोड़कर मदीना गये थे, इसी दिन से हिजरी संवत् का प्रारम्भ माना जाता है।

(1) मोहर्रम :

- हिजरी संवत् का पहला महीना
- मोहर्रम की 10 वीं तारीख को हजरत मोहम्मद साहब के नवासे 'हुसैन' करबला के मैदान में शहीद हो गये थे, इसलिए इस दिन ताजिये निकाले जाते हैं।
- 27 वीं तारीख को गलियाकोट (डूंगरपुर) में सैय्यद फखरुद्दीन का उर्स।
  (दाउदी बोहरा सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ)

(2) सफर

- 20 वीं तारीख को चेहल्लम मनाते हैं। (हुसैन के चालीस दिन पूरे हुये थे।)

(3) रबी - उल - अव्वल (बसंत)

- 12 वीं तारीख को बारावफात (ईद-मिलादुलनबी) मनाते हैं।
- हजरत मौहम्मद साहब का जन्म व मृत्यु इसी दिन हुयी थी।
  (570 A.D.) (632 A.D.)

(4) रबी - उस - सानी

(5) जमात - उल - अव्वल

(6) जमात उस सानी

- 8वीं तारीख की ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती का जन्मदिन।

(7) रज्जब (सम्मान देना)

- 1 से 6 तारीख तक ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती का उर्स।
- इस उर्स में भीलवाड़ा का गौरी परिवार बुलन्द दरवाजे पर झंडा चढ़ाता है।
- इस बार 801 वाँ उर्स मनाया गया।
- रज्जब की छठी तारीख को कुल की रस्म अदा की जाती है।
- रज्जब की 9वीं तारीख को बड़े कुल की रस्म अदा की जाती है।

(8) शाबान

- शाबान महीने की 14वीं तारीख हजरत मोहम्मद साहब की खुदा से मुलाकात हुयी थी, इसलिए इसको शब (रात) - बरात कहते हैं।
- मुसलमान इस दिन अपने कर्मों का प्रायश्चित करते हैं।
- मक्का की हीरा पहाड़ी पर मुसलमान एकत्रित होते हैं।

(9) रमजान

- मुसलमान, इस महीने में रोजे रखते हैं।
- रमजान की 27 वीं तारीख को 'शबे - कद्र' कहते हैं, इस दिन कुरान (फरिश्तों द्वारा लिखी हुयी) का धरती पर अवतरण हुआ था।

(10) शव्वाल

- शव्वाल की पहली तारीख को ईद - उल - फितर (खुशी) (मीठी ईद) / सेवईयों की ईद मनाया जाता है।
- यह भाईचारे का त्यौहार है।

(11) जिल - कद्र

(12) जिल्हिज

- 10वीं तारीख की ईद - उल - जुहा / बकर ईद / कुर्बानी का त्यौहार होता है।
- (हजरत इब्राहिम ने ε) इस दिन हजरत इब्राहिम ने अपने बेटे को हजरत इस्माइल की अल्लाह को कुर्बानी दी थी, कुर्बानी के बाद जब पर्दे को हटाया गया, तो वहां एक भेड़ मृतक अवस्था में मिली इसीलिए इस दिन प्रतीक स्वरूप भेड़ या बकरी की कुर्बानी दी जाती है।

(6) दसलक्षण पर्व : चैत्र, भाद्रपद, माघ → शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी ।

सिन्धी समाज के त्यौहार :

(1) चैटीचण्ड - चैत्र शुक्ल एकम् (विक्रम संवत प्रारम्भ)

- झूलेलाल जयन्ती ।
- झूलेलाल जी को वरुण का अवतार मानते हैं ।
- झूलेलाल जी ने सिंध के राजा मृगशाह के अत्याचारों से मुक्ति दिलायी ।
- झूलेलाल जी का जन्म - थट्टा (सिंध)

(2) थदड़ी (ठंडा) सातम / बड़ी सातम :

भाद्रपद कृष्ण सप्तमी (कृष्ण जन्माष्टमी से ठीक एक दिन पहले)

→ सिन्धियों का बास्योड़ा ।

(3) चालीसा महोत्सव :

- 16 जुलाई से 25 अगस्त तक व्रत रखते हैं ।
- मृगशाह के अत्याचारों से तंग आकर सिन्धी समाज ने व्रत रखे ।

(4) असूचंड पर्व : झूलेलाल जी ने समाधि ली थी ।

- इस महीने में मुसलमान हज्ज के लिए जाते हैं।
- जिल्हिज की 8 से 10 तारीख तक हज के लिए जाते हैं।
- 10 की नमाज को हज की नमाज कहते हैं।

(अष्टांग योग का सरलीकरण)

जैन धर्म के त्यौहार

(1) ऋषभ जयन्ती – चैत्र कृष्ण नवमी

(2) महावीर जयन्ती – चैत्र शुक्ल त्रयोदशी

(3) सुगन्ध दशमी – भाद्रपद शुक्ल दशमी.

- सुगन्ध दशमी को धूप दशमी कहा जाता है।

(4) रोट तीज – भाद्रपद शुक्ल तीज

(5) पर्यूषण – ये जैनों का महापर्व है

- दिगम्बर – भाद्रपद शुक्ल पंचमी से चतुर्दशी तक व्रत रखते हैं। आश्विन कृष्ण एकम् को पड़वा ढोक मनाते हैं। (क्षमा-याचना पर्व)
- श्वेताम्बर – भाद्रपद कृष्ण द्वादशी से भाद्रपद शुक्ल पंचमी तक व्रत रखते हैं।

भाद्रपद शुक्ल पंचमी को संवत्सरी पर्व मनाते हैं। (क्षमा-याचना पर्व)

सिक्खों के त्यौहार

(1) गुरु नानक जयन्ती - कार्तिक पूर्णिमा (शुक्ल)

इस दिन साखा (कुरु) में सिक्खों का बड़ा मेला भरता है।
फीलायत में भी सिक्खों का मेला भरता है।

(2) गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती - पौष शुक्ल सप्तमी

(3) लोहड़ी - 13 जनवरी

(4) वैशाखी - 14 अप्रैल

- 13 अप्रैल 1699 को आनंदपुर साहिब में गुरु गोविन्द साहिब ने खालसा पंथ की स्थापना की थी।
- 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग हत्याकांड।

ईसाई समाज के त्यौहार

(1) 1 जनवरी - ईसाईयों का नववर्ष

(2) 25 दिसम्बर - ईसा मसीह का जन्मदिन

(3) ईस्टर - 21 मार्च से 22 अप्रैल के बीच जो पूर्णिमा आती है, उसके ठीक बाद वाले रविवार को ईस्टर मनाया जाता है।

- इस दिन ईसा मसीह पुनर्जीवित होकर लौट आए थे।

(4) गुड फ्राइडे - ईस्टर से ठीक पहले वाला शुक्रवार।

- इस दिन ईसा मसीह को सूली पर लटकाया गया।

(5) असैन्शन है – ईस्टर से ठीक 40 –चालीस दिन बाद, ईसा मसीह, वापस स्वर्ग चले गये थे।

राजस्थान के लोक-नृत्य

घूमर :

- राजस्थान का राज्य नृत्य। (उमेद सिंह के समय शुरू)
- नृत्यों का सिरमौर।
- राजस्थान की आत्मा।
- केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है, विवाह एवं मांगलिक अवसरों पर। विशेषतः गणगौर
- घूमर में हाथों का लचकदार संचालन आकर्षक होता है।
- लहंगे के घूम के कारण ही इसे घूमर कहा जाता है।
- इसमें विशेष 8 steps होते हैं, जिन्हें सवाई कहते हैं।
- ढोल, नगाड़ा, शहनाई वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।
- इसे रजवाड़ी लोक नृत्य कहा जाता है। (राज परिवारों में विशेषतः)
- घूमर मुख्यतः तीन रूपों में होता है –
  (1) घूमर
  (2) लूर
  (3) झूमरियो
-

कच्छी घोड़ी :

शेखावाटी क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनृत्य। (व्यावसायिक नृत्य)
केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- चार-चार पंक्तियों में पुरुष आमने-सामने खड़े होकर नृत्य करते हैं।
- नृत्य करते समय फूल की पंखुड़ियों के खिलने का आभास होता है।
- इसमें नृतक हाथ में तलवार रखते हैं।
- वाद्य यंत्र – ढोल

अग्नि नृत्य :

- जसनाथी सम्प्रदाय के लोगों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।
- बीकानेर का कतरियासर गांव इसका मुख्य स्थल है।
- नृत्य करते समय आग से मतीरा फोड़ना, तलवार के करतब दिखाना, प्रमुख है।
- नृत्य करते समय नृतक फर्ते-फर्ते बोलता है।
- आग के साथ राग व फाग का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है।
- बीकानेर महाराजा गंगा सिंह ने इस नृत्य को संरक्षण प्रदान किया।

गींदड़ नृत्य :

- शेखावाटी क्षेत्र का लोक नृत्य। (नगाड़ा - प्रमुख वाद्य यंत्र)
- माघ पूर्णिमा (होली का डंडा रोपण) से इसकी शुरूआत हो जाती है, और फिर होली तक चलता रहता है।
- गींदड़, केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- पुरुष के द्वारा महिला वस्त्र पहनकर किया जाने वाला नृत्य - गणगौर कहलाता है।

गैर नृत्य :

- होली के अवसर पर किया जाता है। (होली के दूसरे दिन से 15 दिन तक चलता है)
- मेवाड़ में भील पुरुषों का गैर नृत्य प्रसिद्ध है। (वाद्य यंत्र - ढोल, बांकिया व थाली)
- बाड़मेर का कनाना गांव गैर नृत्य के लिए प्रसिद्ध है।
- गैर खेलते समय गैरिये एक विशेष प्रकार का वस्त्र पहनते हैं, जिसे आंगी कहते हैं। (कमर के नीचे)
- बाड़मेर के ~~फूल~~ भूरचन्द जैन को पद्म श्री मिला है।

वालर नृत्य : (विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर किया जाने वाला)

- सिरोही क्षेत्र में गरासिया जनजाति का मुख्य नृत्य।
- महिला पुरुष दोनों भाग लेते हैं।
- वालर नृत्य में किसी भी वाद्य यंत्रों का प्रयोग नहीं किया जाता है।
- नृत्य करते समय महिला-पुरुष अर्द्धवृत्त बनाते हैं।

भवाई नृत्य : (जन्मदाता - बाघोजी जाट (केकड़ी) - अजमेर)

- उदयपुर क्षेत्र में किया जाने वाला व्यावसायिक नृत्य।
- इस लोक नृत्य में तलवारों पर नाचना, मुँह से रूमाल उठाना, थाली के किनारों पर नाचना, गिलासों पर नाचना, सिर पर सात - आठ मटके रख कर नृत्य करना आदि करतब किये जाते हैं।

चकरी नृत्य : — कोटा ✓कंजर

- कालबेलिया जाति द्वारा किये जाने वाला लोकनृत्य।
- गुलाबो - प्रसिद्ध नृत्यांगना (×)

चरी नृत्य :

- किशनगढ़ क्षेत्र में।
- गुर्जर महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- सिर पर सात चरी रखकर, सबसे ऊपर की चरी में कपास के बीजों को जलाकर नृत्य किया जाता है।
- फलकू बाई : प्रसिद्ध नृत्यांगना (किशनगढ़)

तेरह ताली नृत्य : उद्गम स्थल → पादरला (गांव - पाली) (पाली, नागौर, जैसलमेर में मुख्यत:) (महिलाएँ)

- कामड़ जाति/पंथ (रामदेव जी के भक्त) के लोगों द्वारा किया जाता है।
- इसमें नौ मंजिरे दायें पैर में बांधे जाते हैं।
- २ मंजिरे कोहनी के ऊपर दोनों हाथों में तथा दो मंजिरे एक - एक हाथ में लिए जाते हैं।
- महिलाएं बैठ कर नृत्य करती हैं।
- मांगी बाई - प्रसिद्ध नृत्यांगना
- वाद्य यंत्र - मंजीरा, तानपुरा, चौतारा

ढोल नृत्य :

- जालौर क्षेत्र का प्रसिद्ध लोकनृत्य
- ढोली, माली, भील, सरगड़ा आदि जातियों में द्वारा पुरुषों द्वारा मांगलिक अवसरों पर किया जाता है।
- 'थाकना' शैली में नृत्य किया जाता है।

बम नृत्य :

- अलवर, भरतपुर, धौलपुर क्षेत्रों में फसल की कटाई के अवसर पर (नयी फसल आने के उपलक्ष्य में) पुरुषों द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य।
- इसमें नगाड़े को बम किया जाता है।
- इसमें गायन को रसिया कहा जाता है। इसलिए इस नृत्य को बम-रसिया भी कहा जाता है।

घुड़ला नृत्य : (जोधपुर के राणा सातल की याद में)

- मारवाड़ क्षेत्र में शीतलाष्टमी को किया जाता है।
- छिद्रित मटके में दीपक रखकर लड़कियां डांस करती हैं।
- मणिशंकर गांगुली, देवीलाल सामर, कोमल कोठारी } ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रदान किया।

[दो बार पद्म श्री मिल चुका है।] (कोमल कोठारी)

Note - राज. रत्न पुरस्कार / सम्मान (30 March)

(1) कोमल कोठारी - रूपायन
(2) जगजीत सिंह
(3) कन्हैया लाल सेठिया
(4) लक्ष्मी गौरी चूडांवत -- living Now.
(5) अल्लाह जिलाई बाई
(6) विजय दान देथा - दुविधा पर पहेली फिल्म
(7) विश्वमोहन भट्ट (मोहन - वीणा बजाते हैं)

रूपायन संस्थान – 1960, कोमल कोठारी व विजयदान देथा ने की थी। (जोधपुर में)

अल्लाह जिलाई बाई – मांड गायिका

* देवी लाल सांभर ने उदयपुर में लोककला मंडल की स्थापना (1952) की थी।

गवरी नृत्य :

- मेवाड़ में भीलों द्वारा किये जाने वाला नृत्य।
- भाद्रपद कृष्णा एकम् (रक्षाबन्धन से एक दिन पहले) से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है।
- इसमें गवरी पार्वती का प्रतीक है।
- शिव को 'पुरिया' कहा जाता है।
- इसे राई नृत्य भी कहते हैं।

शंकरिया लोक नृत्य :

- कालबेलिया जाति का लोक नृत्य।
- प्रेम कहानी पर आधारित।

बिंदोली नृत्य :

- झालावाड़ क्षेत्र का लोक नृत्य।
- होली के अवसर पर किया जाता है।

गरबा नृत्य :

- डूंगरपुर, और बांसवाड़ा क्षेत्रों में किया जाता है।
- होली के अवसरों पर।

चंग नृत्य :

- शेखावाटी क्षेत्र में होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा किये जाने वाला नृत्य।

डांग नृत्य :

- नाथद्वारा क्षेत्र में होली के अवसरों पर किया जाता है।

जनजातियों के नृत्य :

गरासिया जनजाति :

वालर
मांदल
लूर
कूद
मोरिया
जवारा

भील जनजाति :

नेजा	शिकार
गवरी	युद्ध
द्विचक्री	
घूमरा	
घूमर	

कालबेलिया नृत्य : इंडोणी
पणिहारी
चकरी
शंकरिया
बागड़िया

सपेरा ; राज. का एकमात्र नृत्य जिसे विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया गया।
(गुलाबो ने दिल्ली के राष्ट्रमंडल खेलों के उद्घाटन पर सपेरा नृत्य)

मेव जाति - रणबाजा
रतवई (पुरूष अलगोजा बजाते हैं)

बंजारों के नृत्य - मछली
नाहर
पेंजणा

सहरिया जाति - शिकारी नृत्य

कथौड़ी जनजाति - मावलिया नृत्य,
होली नृत्य

राजस्थानी भाषा की महत्त्वपूर्ण कृतियां

आर्य भाषा

वैदिक संस्कृत

पाली संस्कृत

शौरसेनी प्राकृत मागधी प्राकृत महाराष्ट्री प्राकृत

गुर्जरी अपभ्रंश शौरसेनी अपभ्रंश

राजस्थानी हिन्दी

डिंगल — प. राजस्थानी का साहित्यिक रूप

पिंगल — पूर्वी राजस्थानी का साहित्यिक रूप, इसमें ब्रज भाषा का मिश्रण पाया जाता है।

राजस्थानी भाषा का विकास :

गुर्जरी अपभ्रंश – 11वीं से 13 वीं शताब्दी

प्राचीन राजस्थानी – 13 वीं से 16 वीं शताब्दी (जैन)

मध्यकालीन राजस्थानी – 16 वीं से 18 वीं शताब्दी (चारण)

आधुनिक राजस्थानी – 18 वीं ——

* राजस्थानी साहित्य का प्राचीनतम ग्रंथ –
  भरतेश्वर बाहुबली घोर
  (वज्रसेन सूरि)

* उद्योतन सूरि ने अपनी पुस्तक कुवलयमाला में मरु भाषा का उल्लेख किया है। (18 देशी भाषाओं का उल्लेख)
* अबुल फजल भी मारवाड़ी भाषा का उल्लेख करता है।
* जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 1912 में लिखी अपनी पुस्तक 'LINGUISTIC SURVEY OF INDIA' में राजस्थानी भाषा का उल्लेख किया है।

(1) सारंगधर — हम्मीर रासो
(2) जोधराज — हम्मीर रासो
(नीमराणा के राजा चन्द्रभान के दरबार में था)

(3) श्रीधर — रणमल छन्द, इसमें ईडर के राजा रणमल व पाटन के सूबेदार जफर खाँ के बीच युद्ध का वर्णन है।

(4) चन्दबरदाई (वास्तविक नाम [पृथ्वीभट्ट]) — पृथ्वीराज रासो (पिंगल भाषा शैली में रचित ग्रन्थ)
इसका पहला प्रामाणिक उल्लेख राजप्रशस्ति महाकाव्य में मिलता है।

(5) दलपत विजय — खुमाण रासो, इसमें बापा रावल से महाराणा राजसिंह तक का वर्णन है। (पिंगल)

(6) गिरधर आसियाँ — सगतसिंह रासो, इसमें महाराणा प्रताप के भाई शक्तिसिंह का वर्णन है। [राम रासो – माधोदास चारण]
[बुद्धि रासो – जानकवि (मुस्लिम लेखक द्वारा पंचतंत्र पर रचित)]

(7) डूंगरसिंह — शत्रुसाल रासो (बूंदी)

(8) आशानन्द (आसा बारहठ) भादरेस (बाड़मेर) (मालदेव के समकालीन) — गोगा जी री पेड़ी, बाघा रा दूहा, उमादे भटियाणी रा कवित्त।

(पाहेबा के युद्ध में मालदेव के साथ थे।)

(9) ईसरदास — (काठियावाड़) [A] हाला झाला री कुण्डलियां
(आशानन्द जी के भतीजे) [B] सूर सतसई

(10) केशवदास गाडण — [A] गुण रूपक
(जोधपुर महाराजा गजसिंह I का दरबारी था) [B] अमरसिंह जी रा दूहा
[C] विवेक वार्ता (उपनिषदों पर लिखित कृति)

(11) शिवदास गाडण — 'अचलदास खिंची री वचनिका' (गागरोन का वर्णन)

(12) उमरदान — [A] (अफीम) अमल रा औगण
↓ [B] दारु रा दोस
इन्होंने दादूपंथियों की आलोचना की थी। [C] भजन री महिला

(13) पृथ्वीराज राठौड — [A] बेलि क्रिसण रूक्मणि री
↓ [B] गंगा लहरी
• बीकानेर महाराजा रायसिंह का छोटा भाई। [C] दशम भागवत रा दूहा, ठाकुर जी रा दूहा
• अकबर के नवरत्नों में से एक। [D] दसरथ रावउत

(14) करणीदान — सूरज प्रकाश, (शकुन्तला)
↓
(अहमदाबाद) जोधपुर महाराजा अभयसिंह व गुजरात के सूबेदार सर बुलन्द खां के बीच युद्ध का वर्णन है।

* सूरज प्रकाश का संक्षिप्त रूप - बिड़द सिणगार

इस पुस्तक के लिए करणीदान जी को 1 लाख रुपये दिए गए।

(15) वीरभाण — राजरूपक

↑ कृपाराम जी का नौकर

(16) कृपाराम खिड़िया — राजिया रा दूहा

थे सीकर के रावराजा लक्ष्मण सिंह के दरबारी थे।

" फाटा पीड़ उपाव, तन लागा तलवारियां।
वहै जीभ रा घाव, रती औषध न राजिया॥"

नाटक : चानक नैसी [अलंकारों का सुन्दर प्रयोग]

(17) जग्गा खिड़िया — वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेस दासोत री

सीतामऊ रियासत (M.P.) के सीताखेड़ा गाँव में जन्म। (जसवंत सिंह I के समकालीन)

(धरमत के युद्ध में रतलाम नरेश रतन सिंह राठौड़ द्वारा दिखायी गयी अद्भुत वीरता का वर्णन है

(18) कवि कल्लोल — (मरवण) ढोला - मारु रा दूहा (नरवर) (पूगल)

" अकथ कहानी प्रेम की, मुख सुं कही ना जाय।
गुंगा रा सुपना भयो, सुमर - सुमर पछतायो॥"

(19) कुशल लाभ — ढोला - मारु री चौपाई

जैसलमेर महारावल हरराज का दरबारी

(20) बुद्धसिंह — नेहतरंग

(बूंदी नरेश)

(21) सूर्यमल्ल मिश्रण — (A) वंश भास्कर - दत्तक पुत्र मुरारि दान ने इसे पूरा किया।

बूंदी नरेश रामसिंह का दरबारी

(B) वीर सतसई -
(C) बलवन्त विलास
(D) सती रासो
(E) छन्द मयूख (F) धातु रूपावली (G) राम रंजाट

(बेटा) लहुलुहान (मिट्टी)
" सुत धारा रज- रज पियो, बहू बलेवा जाय।
लखियां डूँगर लाज रा, सासू उर न समाय॥"

(22) बीठू सूजा — राव जैतसी री छन्द

↓

इसमें बीकानेर के राजा जैतसिंह व कामरान के बीच हुये 'रातीघाटी के युद्ध' का वर्णन है।

(23) बांकीदास — [A] बांकीदास री ख्यात

[B] कुकवि बत्तीसी

[C] दातार बावनी

[D] मान जसो मंडन

↓

[जोधपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि, जिसे मानसिंह ने कवि राज की उपाधि दी।]

• भाण्डियावास (बाडमेर)

4) मुरारिदास — जसवन्त जसो भूषण

(बांकीदास जी के पोते) (अलंकारों का सबसे बड़ा ग्रन्थ)

जोधपुर महाराजा जसवंत सिंह II के दरबारी।

5) मुहणोत नैणसी — [A] नैणसी री ख्यात

[B] मारवाड़ रा परगना री विगत

↓ ↓

(मारवाड़ गजेटियर) (जनगणना का उल्लेख मिलता है)

↓

जोधपुर महाराजा जसवंत I के दरबारी थे। जसवंत सिंह ने किसी बात पर 1 लाख रु. का जुर्माना लगा दिया। इन्हें व इनके भाई सुन्दरदास को जेल में डाल दिया, जहां दोनों भाइयों ने आत्महत्या कर ली।

* मुंशी देवी प्रसाद ने इन्हें '<u>राजपूताने</u> का <u>अबुल - फजल</u>' कहा है।

(26) नरपति नाल्ह — बीसलदेव रासौ (विग्रहराज IV)

(27) नल्ल सिंह — विजयपाल रासौ (करौली)

(28) हम्मीर (रणथम्भौर का राजा) — शृंगार हार

(29) दयालदास — बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात।
ये बीकानेर महाराजा रतनसिंह व सरदारसिंह के दरबारी थे। — (राव बीका से सरदार सिंह का वर्णन)

(30) बख्तावर जी — केहर प्रकाश

(31) सवाई प्रताप सिंह — ब्रजनिधि ग्रन्थावली

(32) दुरसा आढा — विरुद्ध छातहरी, किरतार बावनी, राव सुरताण रा कवित
अकबर के दरबार में थे। इन्होंने अकबर को अतः अवतार कहा है। अकबर के दरबार में रहते हुये भी महाराणा प्रताप की तारीफ की।
[पत्तानी के युद्ध में दुरसा आढा अकबर की तरफ से लड़े थे।]

(33) बादर दाढी — वीरमाण (मारवाड़ के राजा वीरमदेव की वीरता का वर्णन है।)

(34) वृन्द — ① सत्य स्वरूप (औरंगजेब के पुत्रों के बीच हुये उत्तराधिकार संघर्ष का वर्णन है।)
② शृंगार शिक्षा

(35) दयाल — राणा रासौ (बापा रावल से लेकर जयसिंह तक का वर्णन है।)

(36) खेतसी सांदू — भाषा भारथ (महाभारत का डिंगल में अनुवाद)

(37) जगजीवन भट्ट — अजितोदय

(38) जोगीदास — हरिपिंगल प्रबन्ध (प्रतापगढ़ के राजा हरिसिंह के बारे में वर्णित)

(39) किशोरदास — राजरूपक प्रकाश

(40) सायाँ जी झूला — नागदमण, रुक्मिणी हरण

↓

ईडर के राजा कल्याणमल के दरबार में थे।

सायाँ जी झूला व पृथ्वीराज राठौड़, अकबर के समकालीन थे।

(41) कल्याणदास — गुण गोविन्द

(42) नरहरिदास — अवतार चरित्र

(43) कवि जान — ① कायमरासौ ② बुधि सागर ③ लैला - मजनूं

- वास्तविक नाम - न्यामत खाँ
- फतेहपुर के 8वें नवाब थे।

---

① रामकरण आसोपा - बांकीदास ग्रन्थावली, राजस्थानी व्याकरण

② मुरलीधर व्यास - राज. कहावतां

> पवाड़ा : वीरों के विशेष कार्यों को वर्णन करने वाली रचना

> विगत : राज्य की सामाजिक - आर्थिक स्थिति।

> कहा — राजकीय विवरण।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य :-

(1) श्रीमाल नथमल जोशी —— [A] एक बीनणी दो बींद
[B] परण्योड़ी कुंवारी
[C] सबड़का
(स्वतंत्रता के बाद पहला राज• उपन्यास) ← [D] आभै पटकी
[E] धोरां री धोरी

(2) विजयदान देथा —— [A] बातां री फुलवारी
[B] तीडो राव
[C] मां रो बदलो
[D] हिटलर
[E] अलेखूं, दुविधा

(3) लक्ष्मी कुमारी चुंडावत —— [A] मांझल रात
↓
देवगढ़ की राजकुमारी (राजसमंद)
→ टाबरां री बातां
→ डूंगर जी, जवारजी री बात

[B] अमोलक बातां
[C] कै रे चकवा बात
[D] गिर ऊंचा ऊंचा गढ़ा
[E] राज• की प्रेम कहानियां
[F] हुंकारो दो सा
[G] बाघा - भारमली
[H] बगडावत
[I] मूमल

(4) कन्हैया लाल सेठिया —— [A] धरती धोरां री
→ सबद
[B] लीलटांस
[C] पायल और पीयल
[D] कुंकू मिंझर
[E] निर्ग्रन्थ

(5) यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र — [A] हूं गोरी किण पीव री
(बीकानेर)
→ मिट्टी का कलंक
[B] खम्मा अन्नदाता
[C] हजार घोड़ों का सवार
[D] तास रो घर
[E] जमारो
[F] मेहंदी के फूल (कहानी)
[G] जोग - संजोग
[H] एक और मुख्यमंत्री

(6) मेघराज मुकुल —
[A] उमंग
[B] सैनाणी
[C] चंवरी

(7) रांगेय राघव —
[A] घरौंदे
[B] मुर्दों का टीला
[C] कब तक पुकारूं
[D] आग की आवाज

(8) गौरीशंकर हीराचन्द ओझा — [A] प्राचीन लिपिमाला
[B] कर्नल जेम्स टॉड का जीवन चरित्र
[C] राजपूताने का इतिहास

(9) जहूर खाँ मेहर —
[A] राजस्थानी संस्कृति रा चितराम
[B] अर्जुन आळी आंख
[C] धर मंजला धर कोसां

(10) चन्द्रसिंह बिरकाली — * [A] बादली (कालिदास के मेघदूत का राज. अनुवाद)
(B) लू

[C] सांझ बालासाद

(D) कद - मुकरनी

(11) नारायण सिंह भाटी : (A) मीरा
→ सांझ, ओळूं
[B] परमवीर
(C) दुर्गादास
(D) बरसां रा डिगोड़ा डूँगर लाँघिया

(12) सीताराम लालस : राजस्थानी शब्दकोष *

(13) हरिराम मीणा : हाँ चाँद मेरा है।
(साहित्य अकादमी पुरस्कार)

(14) मणिमधुकर : पगफेरो, सुधि सपनों के तीर, रस गन्धर्व

(15) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' : उसने कहा था।

(16) श्यामलदास : वीर विनोद
(शम्भू सिंह के समय लिखना शुरू किया था, तथा फतेह सिंह के समय पूरी की गयी)

- अंग्रेजों ने इन्हें केसर-ए-हिन्द की उपाधि दी थी।
- महामहोपाध्याय भी इनकी एक उपाधि है।

* वीर विनोद मेवाड़ का इतिहास है। परन्तु इसमें अन्य इतिहास की भी समकालीन जानकारियाँ मिलती हैं।

---

① रेवतदान चारण - बरखा बीनणी, नेहरू ने ओलमो
② शिवचन्द्र भरतिया - कनक सुन्दरी (उपन्यास), केसर विलास (नाटक)
③ हमीदुल्ला - ख्यारमली, दरिन्दे, ख्याल
④ कुन्दन माली - सागर पांखी
⑤ हीरालाल शास्त्री - प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र
⑥ सावित्री परमार - 'जमी हुयी झील' (मीरां पुरस्कार)

→ राजस्थानी भाषा एवं साहित्य अकादमी — बीकानेर

↓ सबसे प्रमुख पुरस्कार — सूर्य मल्ल मिश्रण पुरस्कार

↓ समाचार पत्रिका — जागती जोत

→ राजस्थान साहित्य अकादमी — उदयपुर

↓ सबसे प्रमुख पुरस्कार — मीरा पुरस्कार

↓ समाचार पत्रिका — मधुमती

मीरा पुर. { 2012 — अम्बिका दत्त
2013 — भवानी सिंह को उनकी रचना मागस के लिए मिला है।

राजस्थान के लोकगीत

→ केसरिया बालम : राज्य गीत, यह एक रजवाड़ी गीत है, जिसमें पति का इंतजार करती पत्नी की विरह-व्यथा का वर्णन है।

→ मोरियो : लड़की जिसकी शादी छोटी उम्र में हो गयी, और जिसे अपने मुकलावे का इंतजार हो।

→ सूवटियो : परदेस गये पति के पास तोते के माध्यम से संदेश भेजती पत्नी का गीत।

→ कुरजाँ : पत्नी द्वारा परदेस गये पति से मिलन की कुरजाँ से की गयी गुजारिश

→ कागा : कागा को उड़ाकर पत्नी अपने पति के आगमन का शगुन बनाती है।

→ पपैयो : पत्नी एवं पति के बीच आदर्श दाम्पत्य प्रेम का सूचक।

→ पीपली : विरह गीत, इसमें पत्नी द्वारा पति से परदेस न जाने की विनती

→ लावणी : शाब्दिक अर्थ – बुलाना
पति द्वारा पत्नी से मिलन का आग्रह।

→ हिंडो : सावण के महीने में गाया जाने वाला गीत।

→ कामण : वर को जादू-टोने से बचाने के लिए गाये जाने वाले गीत।

सीठणे : विवाह आदि अवसरों पर महिलाओं द्वारा गाये जाने वाले गाली गीत।

→ गोरबन्द : ऊंट के गले का एक आभूषण

चिरमी : ससुराल में अपने पिता व भाई की प्रतीक्षा करती वधू द्वारा

गाया जाने वाला गीत ।

→ जीरा : इसमें वधू अपने पति से जीरा नहीं बोने की विनती करती है।

→ जच्चा : संतान जन्म पर गाये जाने वाले गीत ।

→ बधावा : शुभ कार्यों के सम्पन्न होने पर गाया जाने वाला गीत ।

→ पावणा : दामाद के ससुराल आने पर गाया जाने वाला गीत ।

→ मूमल : श्रृंगारिक विरह गीत ।

→ घूमर : मांगलिक अवसरों पर गाया जाने वाला गीत, जिसमें कन्या अपनी माता से घूमर खेलने जाने की प्रार्थना करती है।

→ हमसीढो : भील महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला गीत ।

→ पणिहारी : अपने पतिव्रत धर्म पर अटल स्त्री का गीत

→ कलाली : वीर रस प्रधान गीत ।

→ इंडोणी

→ जली : बारात का डेरा देखने जाते समय, महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला गीत ।

→ बना - बनी : विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला गीत ।

→ घुड़चढ़ी : -

→ बिच्छुड़ो -

राजस्थान के लोकनाट्य

* **ख्याल** : पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथाओं को पद्यबद्ध करके नाटक के रूप में मंचन किया जाता है।
  इसमें सूत्रधार – हलकारा होता है।

- कुचामनी ख्याल :
  - प्रवर्तक – लच्छी राम
  - इसमें महिला पात्रों की भूमिका पुरुषों द्वारा ही निभायी जाती है।
  - इसका स्वरूप 'ओपेरा' जैसा होता है।
  - मुख्य कथाएं – चांद नीलगिरि
    राव रिड़मल
    मीरा मंगल
  - 'उगमराज', कुचामनी ख्याल के प्रमुख कलाकार हैं।

- जयपुरी ख्याल :
  - इसमें महिला पात्रों की भूमिका महिला ही निभाती है।

- हेला ख्याल
  - दौसा, लालसोट एवं सवाई माधोपुर क्षेत्र में प्रसिद्ध।
  - वाद्य यंत्र : नौबत

- तुर्रा - कलंगी
  - तुकनगीर व शाह अली ने इसे लोकप्रिय किया था।
    (चन्देरी शासक के दरबार में थे)
  - यहाँ तुर्रा से तात्पर्य – शिव से,
    कलंगी – पार्वती से।
  - सहेडू सिंह व हमीद बेग ने इसे मेवाड़ में लोकप्रिय किया था।
  - इसमें दो पक्ष आमने-सामने बैठकर प्रतिस्पर्धामूलक संवाद करते हैं, जिसे गम्मत कहते हैं।
  - तुर्रा - कलंगी ख्याल में मंच की सजावट की जाती है।
  - दर्शकों के भी भाग - लेने की सम्भावना रहती है।

- अन्य कलाकार - चेतराम
  ताराचन्द
  जयदयाल सोनी
  ओंकार सिंह

• शेखावाटी ख्याल :

- नानूराम व दूलिया राणा ने इसे लोकप्रिय किया।

• अली बख्शी ख्याल :

- अलवर जिले के मुण्डावर ठिकाने के नवाब अली बख्श के समय यह ख्याल शुरु हुआ।

• कन्हैया ख्याल :

- भरतपुर, धौलपुर, करौली क्षेत्र में लोकप्रिय।
- कृष्ण लीलाओं का मंचन किया जाता है।
- सूत्रधार - मेडिया

• ढप्पाली ख्याल :

- अलवर क्षेत्र में लोकप्रिय

• भेंट के दंगल :

- धौलपुर क्षेत्र में लोकप्रिय।
- धार्मिक कहानियों का मंचन किया जाता है।

(2) नौटंकी

• अलवर, भरतपुर, करौली क्षेत्र में लोकप्रिय।
• प्रवर्तक - भूरीलाल
• वर्तमान में प्रमुख कलाकार - गिरिराज प्रसाद
• 9 प्रकार के वाद्य यंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

नौटंकी

- यह हाथरस शैली से प्रभावित है।
- नौटंकी में प्रचलित कहानी –
  - अमरसिंह राठौड़
  - आल्हा - ऊदल
  - सत्यवान - सावित्री
  - हरिश्चन्द्र - तारामती

(3) रम्मत

- बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र की लोकप्रिय।
- पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा खेली जाती है।
- होली एवं सावन के महीने में रम्मत खेली जाती है।
- जैसलमेर में तेजकवि ने इसे लोकप्रिय किया था।
- तेजकवि की प्रसिद्ध रम्मतें –
  - स्वतंत्र बावनी (1942 में महात्मा गांधी को की गयी भेंट)
  - मूमल
  - जोगी भृतहरि
  - छेले तम्बोलन
- तेजकवि ने अंग्रेजो की नीतियों के खिलाफ थे।
- बीकानेर में 'पाटों' पर रम्मत का मंचन किया जाता है।
  * पाटा संस्कृति – बीकानेर की मौलिक विशेषता है।
- होली के समय शुक्ल अष्टमी से चतुर्दशी तक इनका अधिक मंचन किया जाता है।
- हेड़ाऊ - मेरी की रम्मत सर्वाधिक लोकप्रिय है, जिसे जवाहर लाल ने शुरू किया था।
- रम्मत शुरू करने से पहले रामदेव जी का गीत गाया जाता है।
- बीकानेर के कलाकार : तुलसीदास जी
  - सुआ महाराज
  - फागु महाराज

(4) स्वांग :

- किसी पौराणिक या ऐतिहासिक पात्र की वेशभूषा पहनकर उसकी नकल करना।
- भीलवाड़ा के जानकीलाल भांड ने इसे लोकप्रिय किया।
- जानकी लाल भांड को 'MONKEY MAN' कहा जाता है।
- चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को भीलवाड़ा में नाहरों का स्वांग खेला जाता है।
- इसके कलाकार को बहुरूपिया कहा जाता है।

(5) गवरी :

- राजस्थान का प्राचीनतम लोक नाट्य।
- इसे राजस्थान का मेरु नाट्य भी कहा जाता है।
- मेवाड़ क्षेत्र में भीलों द्वारा गवरी नाट्य का मंचन किया जाता है।
- लोकनाट्य - शिव पार्वती से सम्बन्धित है।
- रक्षा बन्धन से शुरु होकर 40 दिनों तक चलता है।
- इसमें शिव - भस्मासुर कथा को आधार बनाया जाता है।
- सूत्रधार - कुटकड़िया
- हास्य पुट डालने वाला कलाकार - झटपटिया
- विभिन्न कथानकों को आपस में जोड़ने के लिए बीच में सामुहिक नृत्य किया जाता है, जिसे 'गवरी की घाई' कहते हैं।

(6) तमाशा :

- यह जयपुर में लोकप्रिय है।
- सवाई प्रतापसिंह के समय बंशीधर भट्ट (महाराष्ट्र) को तमाशा के लिए जयपुर लाया गया।
- उस समय 'गौहर जान' तमाशा में भाग लिया करती थी।
- होली के दिन - जोगी - जोगण का तमाशा।
- शीतलाष्टमी के दिन - जुट्ठन मियां का तमाशा।

• चैत्र अमावस्या के दिन - गोपीचन्द का तमाशा।

(7) भवाई :

- गुजरात के सन्निकट राजस्थानी जिलों में अधिक लोकप्रिय।
- इसमें संगीत पक्ष पर कम ध्यान दिया जाता है, बल्कि करतब अधिक दिखाये जाते हैं।
- भवाई लोकनाट्य व्यावसायिक प्रकृति का है।
- राज. में मुख्य कलाकार : रूपसिंह
  तारा शर्मा
  सांगी लाल
- महिला व पुरुष पात्रों को सगीजी व सगाजी कहा जाता है।

(8) चारबैत :

- टोंक क्षेत्र में लोकप्रिय।
- मूलतः अफगानिस्तान का लोकनाट्य है।
- पहले इसे पश्तो भाषा में प्रस्तुत किया जाता था।
- मुख्य वाद्ययंत्र - डफ.
- टोंक नवाब फैजुल्ला खां के समय करीम खाँ निहंग ने इसे टोंक में लोकप्रिय किया था।

(9) फड़ :

- कपड़े के पर्दे पर किसी देवता से सम्बन्धित जीवन चरित्र का मंचन फड़ कहलाता है। (30x5)
- 30 Feet - length
  5 Feet - Bredth } फड़ का चित्रण किया जाता है।
- किसी देवता की मनौती पूरी होने पर फड़ बंचवाते हैं।

(10) रासलीला :

- इसे वल्लभाचार्य द्वारा शुरू किया गया।
- भगवान श्रीकृष्ण से सम्बन्धित घटनाओं का मंचन किया जाता है।
- भरतपुर क्षेत्र में लोकप्रिय है।
- शिवलाल कुमावत ने इसे भरतपुर में लोकप्रिय किया था।
- राम स्वरूप जी व हरगोविन्द जी भी इसके मुख्य कलाकार रहे हैं।
- कामां (भरतपुर) } फुलेरा (जयपुर) } की रासलीला प्रसिद्ध है।

(11) रामलीला :

- तुलसीदास जी द्वारा
- भगवान राम से सम्बन्धित घटनाओं का मंचन किया जाता है।
- बिसाऊ (झुन्झुनु) की रामलीला — मूक अभिनय पर आधारित
- अटरू (बारां) — यहाँ रामलीला में धनुष को भगवान राम द्वारा न तोड़ा जाकर, जनता द्वारा तोड़ा जाता है।
- पाटूंदा (कोटा) — की रामलीला भी प्रसिद्ध है।
- वेंकटेश मन्दिर (भरतपुर) — भरतपुर के वेंकटेश मंदिर में होती है।

(12) सनकादिक लीला :

- चित्तौड़गढ़ के घोसुण्डा (आश्विन) व बस्सी (कार्तिक) स्थान पर इसका मंचन किया जाता है।
- मंचित देवता कथा — गणेश
  गौरा - काला भैरु
  नृसिंह - हिरण्यकश्यप

राज• के प्रमुख मंदिर

1. **किराडू के मंदिर :**

- माड़वार (बाड़मेर) के समीप।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप है जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- मुख्य मंदिर – सोमेश्वर
- किराडू के मंदिरों को राज• का खजुराहो कहते हैं।
- यह मंदिर नागर शैली में बने हुये हैं।

2. **सूर्य मंदिर !**

- झालरापाटन (झालावाड़)
- इसे सात सहेलियों का मंदिर कहते हैं।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इसे ~~सात सहेलिय~~ चारभुजा मंदिर भी कहा है।
- इसे पद्मनाभ मंदिर भी कहते हैं।
- यह मंदिर 10 वीं शताब्दी में निर्मित हुआ।

(3) **अर्थुना के मंदिर :**

- बांसवाड़ा
- अर्थुना भी परमारों की राजधानी थी।
- मुख्य मंदिर – हनुमान जी का मंदिर
- 11 वीं व 12 वीं शताब्दी के बने हुये हैं।
- इन्हें 'वागड़ का खजुराहो' कहते हैं।

(.) **रणकपुर के जैन मंदिर :**

- कुम्भा के समय रणकशाह द्वारा निर्मित
- मुख्य मंदिर – चौमुखा मंदिर (वास्तुकार – देपाक)

- इस मंदिर में 1444 खम्भे हैं, अतः इसे खम्भों का अजायबघर कहते हैं।
- इस मंदिर के पास ही नेमिनाथ मंदिर है, जिसे वेश्याओं का मंदिर भी कहते हैं।

(5) देलवाड़ा के जैन मंदिर :

- सिरोही

* विमलसहि मंदिर : इसका निर्माण 1031 ई. में भीमशाह (गुजरात के चालुक्य राजा का मंत्री) ने करवाया था।

* नेमिनाथ मंदिर : चालुक्य राजा धवल के मंत्री तेजपाल एवं वास्तुपाल ने इसका निर्माण करवाया।
 : इसे देवरानी - जेठानी का मंदिर भी कहते हैं।

(6) पुष्कर के मंदिर :

- यहाँ ब्रह्मा जी का मंदिर बना हुआ है, जिसका निर्माण गोकुल चन्द पारीक ने करवाया।
- यहाँ कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है।
- यहाँ सावित्री माता का मंदिर भी है।
- यहाँ रंगनाथ मंदिर भी बना हुआ है, जो द्रविड शैली का है।
- पुष्कर को कोंकण तीर्थ भी कहा जाता है।
- ब्रह्मा जी के अन्य मंदिर :(a) आसोतरा (बाड़मेर)
 (b) छींछ (बाँसवाड़ा)

(7) एकलिंगनाथ जी के मंदिर :

- कैलाशपुरी (उदयपुर) - नागदा के समीप
- 18 वीं सदी में बापा रावल ने इसका निर्माण करवाया था।

(8) सहस्त्रबाहु का मंदिर :

- नागदा (उदयपुर)
- इसे सास- बहु का मंदिर भी कहते हैं।

(9) नौ- ग्रहों का मंदिर : – किशनगढ़ (अजमेर)

(10) सांवलिया जी का मंदिर :

- मंडफिया (चित्तौड़गढ़)
- इसे चोरों का मंदिर भी कहते हैं।

(11) हर्षद माता का मंदिर :

- आभानेरी

Note • अ

(12) मुनि का मंदिर :

- कोलायत (बीकानेर)
- कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है।

* कपिल मुनि सांख्य दर्शन के प्रणेता थे।

(13) अम्बिका माता :

- जगत (उदयपुर)
- इसे मेवाड़ का खजुराहो कहते हैं।
- इसे राज्य का मिनी खजुराहो कहते हैं।

(14) कंसुआ मंदिर :

- कोटा
- मौर्य राजा धवल ने शिव मंदिर बनवाया था, जिसमें 1000 शिवलिंग हैं।
- यहां गुप्तेश्वर महादेव का मंदिर भी है, जिसके दर्शन नहीं किये जाते हैं।

(15) शीतलेश्वर महादेव :

- झालावाड़ (कर्नल टॉड ने झालरापाटन को घंटियों का शहर कहा है।)
- इसका निर्माण 689 A.D. में हुआ।
- यह राज्य का प्राचीनतम तिथि युक्त मंदिर है।

(16) महामंदिर :

- जोधपुर
- राजा मानसिंह द्वारा निर्मित
- नाथ सम्प्रदाय का सबसे बड़ा मंदिर।

(17) सिरे मंदिर :

- जालौर (जोधपुर के राजा मानसिंह ने इसका निर्माण करवाया था)

(18) भांडाशाह जैन मंदिर :

- बीकानेर
- यह 5वें जैन तीर्थंकर सुमतिनाथ का मंदिर है।
- इसके निर्माण में पानी की जगह घी का उपयोग किया गया था।

(19) सतबीस मंदिर :

- चित्तौड़गढ़
- 11 वीं शताब्दी के जैन मंदिर।

20) भंडदेवरा मंदिर :

- अटरू (बारां)
- इसे हाड़ौती का खजुराहो कहते हैं।
- (राज्य का मिनि खजुराहो)

(21) फूलदेवरा मंदिर :
- बारां
- इसे मामा- भान्जा मंदिर भी कहते हैं।

(22) सोनी जी की नसियां :
- अजमेर
- इसे लाल मंदिर भी कहते हैं।
- 1864 में मूलचन्द सोनी ने इसका निर्माण करवाया।

(23) खड़े गणेश का मंदिर :
- कोटा

(24) बाजणा गणेश मंदिर :
- सिरोही

(25) सारणेश्वर महादेव मंदिर :
- सिरोही

(26) नाचणा गणेश मंदिर :
- ~~रणथम्भौर~~ अलवर

(27) त्रिनेत्र गणेश मंदिर :
- रणथम्भौर

(28) हेरम्ब गणपति :
- बीकानेर (जूनागढ़ किले में)
- गणपति शेर पर सवार है।

(29) रावण मंदिर :
- मण्डौर (जोधपुर)
- श्रीमाली ब्राह्मण पूजा करते हैं।

(30) विभीषण मंदिर : कैथून (कोटा)

(31) खोड़ा गणेश : अजमेर

(32) रोकड़िया गणेश : जैसलमेर

(33) सालासर बालाजी : चुरू

• बालाजी के दाढ़ी - मूंछ है।

(34) 72 जिनालय : भीनमाल (जालौर)

(35) मेंहदीपुर बालाजी : दौसा (N.H.11, आगरा से जयपुर)

(36) पावापुरी जैन मंदिर : सिरोही

(37) नारेली के जैन मंदिर : अजमेर

(38) बाला पीर : नागौर (कुम्हारी)

• यहाँ खिलौने चढ़ाये जाते हैं।

(39) मूछाला महावीर : घाणेराव (पाली)

(40) 33 करोड़ देवी - देवताओं का मंदिर : बीकानेर (जूनागढ़)

(41) 33 करोड़ देवी - देवताओं की साल : मंडौर (अभयसिंह द्वारा निर्मित)

(42) नीलकण्ठ महादेव मंदिर : अलवर

• अजयपाल द्वारा निर्मित

(43) मालासी भैरू जी का मंदिर : मालासी (चूरू)

• यहाँ भैरू जी की उल्टी मूर्ति लगी है।

(44) खाटू श्याम जी का मंदिर :

- खाटू (सीकर)
- बर्बरीक का मंदिर

(45) कल्याण जी का मंदिर :

- डिग्गी (टोंक)

अन्य मंदिर

① ऋषभदेव जी का मंदिर – उदयपुर,
– पूरे देश में एकमात्र यही ऐसा मंदिर है जहां सभी सम्प्रदाय व जाति (श्वेताम्बर, दिगम्बर, जैन, शैव, वैष्णव, भील) के लोग आते हैं।

② सिरयारी मंदिर – पाली
– जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के प्रथम आचार्य श्री भिक्षु की निर्वाण स्थली।

③ मुकन्दरा का शिव मंदिर – कोटा
– राज. का एकमात्र गुप्तकालीन मंदिर है।

④ स्वर्ण मंदिर – पाली
- जिसे 'Gateway of Golden' and 'Mini Mumbai' के नाम से जाना जाता है।

⑤ सुन्धा माता का मंदिर – जालौर
- राज. का प्रथम रोप - वे बनाया गया है।

⑥ नागर शैली का अंतिम व सबसे भव्य मंदिर – सोमेश्वर (किराडू)
(गुर्जर-प्रतिहार कालीन)

⑦ पंचायतन शैली का प्रथम उदाहरण राज. में – 'ओसियां का हरिहर मंदिर'
(भारत में प्रथम उदाहरण – देवगढ़ (झांसी) का दशावतार मंदिर)

⑧ नाकोड़ा भैरव जी – बालोतरा

राजस्थान की मस्जिदें एवं मजारें

(1) ईदगाह मस्जिद : जयपुर

(2) मलिकशाह की दरगाह : जालौर

3) मीठे शाह की दरगाह : गागरौन

4) गुलाब खां का मकबरा : जोधपुर

5) गुलाब कलन्दर का मकबरा : जोधपुर

(6) तमता गाजी मीनार : जोधपुर

7) भूरे खां की मजार : मेहरानगढ़ (जोधपुर)

8) इकमीनार : जोधपुर

9) सफदरजंग की दरगाह : अलवर

10) अलाउद्दीन आलमशाह की दरगाह : तिजारा (अलवर)

11) बीबी जरीना का मकबरा : धौलपुर

12) मेहर खां की मीनार : कोटा

13) सैय्यद बादशाह की दरगाह : शिवगंज (सिरोही)

14) जामा मस्जिद : शाहबाद (बारां)

15) काकाजी पीर की दरगाह : प्रतापगढ़

16) मस्तान बाबा की दरगाह : सोजत (पाली)

17) रजिया सुलतान का मकबरा : टोंक

18) गुलर कालूदान की मीनार : जोधपुर

19) तन्हा पीर की दरगाह : मण्डोर

20) कबीर शाह की दरगाह : करौली

(21) कमरुद्दीन शाह की दरगाह : झुन्झुनु

(22) पीर अब्दुल्ला की दरगाह : बांसवाडा

(23) दीवान शाह की दरगाह : कपासन (चित्तौड़गढ़)

(24) हजरत शक्कर बाबा की दरगाह : नरहड़ (झुन्झुनु)
(नरहड पीर) - इन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है।

(दाऊदी बोहरा सम्प्रदाय का सबसे बड़ा उर्स)
(25) सैय्यद फखरुद्दीन की दरगाह : गलियाकोट (डुंगरपुर)

(26) चल फिर शाह की दरगाह : चित्तौड़गढ़

(27) पंजाब शाह की दरगाह : अजमेर

(28) मर्दान शाह पीर की दरगाह : रणथम्भौर

(29) फखरुद्दीन चिश्ती की दरगाह : सरवाड़ (अजमेर)

(30) नालीसर मस्जिद : सांभर (जयपुर)

(31) इमली वाले बाबा की दरगाह : ताला (जयपुर)

(32) लैला मंजनू की मजार : रायसिंह नगर (गंगानगर)

(33) बाबा दौलतशाह की दरगाह : चौमूं

(34) दूल्हेशाह की दरगाह : पाली

(35) पीर निजामुद्दीन की दरगाह : फतेहपुर (सीकर)

→ राज० में कादरिया सम्प्रदाय की सबसे बड़ी दरगाह – सैफुद्दीन अब्दुल वहाब (बड़े पीर की दरगाह)

राजस्थान के प्रमुख मेले

* राज• सरकार द्वारा आयोजित मेले :

पतंग महोत्सव - जयपुर

ऊँट महोत्सव - बीकानेर

मरु महोत्सव - जैसलमेर

थार महोत्सव - बाड़मेर

हाथी महोत्सव - जयपुर

शरद महोत्सव - Mt. Abu

मेवाड़ महोत्सव - उदयपुर

दशहरा महोत्सव - कोटा

हिण्डोला महोत्सव - पुष्कर

अन्य मेले :

गंगा दशहरा - कामां (भरतपुर)

भोजन थाली मेला : कामां (भरतपुर)

बसंत पंचमी मेला : दौसा

गौतम जी का मेला : सिरोही

जगदीश मेला : गोनेर (जयपुर)

घोड़ो - गधों का मेला : भावबन्ध (जयपुर) (लुनियावास) (Before Bhavbandh)

सावित्री मेला : पुष्कर

गरुड़ मेला : बयाना (भरतपुर)

सूईयां कपालेश्वर मंदिर - बाड़मेर

(इसे अर्द्धकुम्भ भी कहते हैं।)

(10) राम रावण मेला - बड़ी सादड़ी (चित्तौड़)

(11) मीरा महोत्सव - चित्तौड़गढ़

(12) तीर्थराज मेला - धौलपुर

(13) डोलची महोत्सव - दौसा

(14) (फूल) डोल मेला - बारां

(15) विक्रमादित्य मेला - उदयपुर

(16) चनणी चेरी का मेला - देशनोक (बीकानेर)

(17) सवाई भोज मेला - आसींद (भीलवाड़ा)

(18) बाणगंगा मेला - विराटनगर (जयपुर)

(19) पूंगी तीर्थ मेला - जैसलमेर

(20) चारभुजा नाथ मेला - मेड़ता (नागौर)

प्रजामंडल आंदोलन

रियासतों में कुशासन को समाप्त कर, उत्तरदायी शासन की स्थापना करने, राजनीतिक जनजागृति पैदा करने, नागरिकों के मौलिक अधिकारों की बहाली करने के उद्देश्य से किये गये आंदोलन प्रजामंडल आंदोलनों के नाम से जाने जाते हैं।

1938 A.D. के कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन के बाद देशी रियासतों में चल रहे संघर्ष को कांग्रेस ने अपना समर्थन दिया

1927 A.D में बम्बई में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना की गयी थी, जिसकी रियासती इकाइयों को प्रजामण्डल के नाम से जाना गया।

मारवाड़ सेवा संघ: 1920 A.D. में जयनारायण व्यास व चाँदमल सुराणा द्वारा मारवाड़ सेवा संघ का गठन किया गया. जिसका उद्देश्य जन-जागृति पैदा कर मारवाड़ रियासत में उत्तरदायी शासन की स्थापना करवाना था।

- मारवाड़ सेवा संघ, राज. सेवा संघ की एक इकाई थी।

तौल आंदोलन: 1920-21 A.D. में मारवाड़ रियासत में ब्रिटिश भारत की तर्ज पर सौ तोले के स्थान पर 80 तोले का एक सेर कर दिया गया. मारवाड़ सेवा संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा इसके खिलाफ आंदोलन चलाया गया, अत: सरकार को अपना निर्णय बदलना पड़ा।

मारवाड़ यूथ लीग: 10 May 1931 A.D. को जयनारायण व्यास द्वारा मारवाड़ रियासत में इस संगठन की स्थापना की गयी।

चण्डावल घटना: मई, 1942 A.D. में चण्डावल (पाली) नामक स्थान पर मारवाड़ प्रजा परिषद के कार्यकर्ताओं की एक सभा पर रियासती सैनिकों द्वारा हमला किया गया, फलस्वरूप कई कार्यकर्त्ता घायल हो गये।

डाबड़ा काण्ड: 13 March 1947 A.D. को डाबड़ा (नागौर) नामक स्थान पर मारवाड़ प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं की एक सभा, मोतीलाल नामक एक किसान के घर पर हो रही थी। डीडवाना परगने के जागीरदार द्वारा कार्यकर्ताओं पर हमला करवाया गया। प्रजामंडल के मुख्य नेता चुन्नी लाल समेत 12 लोग मारे गये। मथुरादास माथुर घायल हो गये।

सर्वहितकारिणी सभा: ~~1907~~ 1913 A.D. में बीकानेर प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं स्वामी गोपाल दास व कन्हैया लाल द्वारा चुरू में इसकी स्थापना की गयी, इसके तहत बालिका शिक्षा के लिए पुत्री पाठशाला तथा दलित शिक्षा के लिये कबीर पाठशालाएँ खोली गयी।

बीकानेर षडयंत्र अभियोग: बीकानेर महाराजा गंगा सिंह जब दूसरे गोलमेज सम्मेलन (1931) में भाग लेने के लिये लंदन गये, तब वहां पर बीकानेर ~~प्रजामंडल~~ रियासत के कार्यकर्ताओं द्वारा 'बीकानेर दिग्दर्शन' (बीकानेर में कुशासन को बताने वाली) नामक पत्रिका बँटवायी गयी। इसके दण्डस्वरूप स्वामी गोपालदास, चन्दनमल बहड़, सत्यनारायण सर्राफ बीकानेर षडयंत्र मुकदमा चलाया गया।

जेन्टलमैन एग्रीमेन्ट: भारत छोड़ो आंदोलन के समय Sep. 1942 में जयपुर प्रजामंडल के नेता हीरालाल शास्त्री व जयपुर के प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल के मध्य एक समझौता हुआ, जिसे Gentleman agreement कहा जाता है, इसके तहत यह तय किया गया कि

- जयपुर रियासत अंग्रेजो की जन- धन से सहायता नहीं करेगी।
- प्रजामंडल के कार्यकर्ता शांतिपूर्ण विरोध कर सकते हैं तथा कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारी नहीं की जायेगी।
- राज्य में उत्तरदायी शासन स्थापित करने के प्रयास किये जायेगें।
- जयपुर प्रजामंडल भारत छोडो आंदोलन में भाग नहीं लेगा।

आजाद मोर्चा : जयपुर प्रजामंडल के द्वारा Quit India Movement में भाग नहीं लेने के हीरालाल शास्त्री के निर्णय से नाराज कार्यकर्त्ताओं ने बाबा हरिश्चन्द्र के नेतृत्व में आजाद मोर्चा का गठन किया तथा भारत छोडो आंदोलन में भाग लिया, जिसके अन्य नेता रामकरण जोशी, दौलतमल भंडारी व गुलाबचन्द कासलीवाल थे।

तसीमों कांड : अप्रैल 1947 A.D. में धौलपुर प्रजामंडल के तसीमों नामक गांव में पुलिस फायरिंग की गयी, जिसमें पंचम सिंह व छतरसिंह, दो कार्यकर्त्ता शहीद गये।

रास्तापाल घटना : वागड सेवा संघ द्वारा सचांलित विद्यालयों को बंद करवाने गये डुंगरपूर राज्य के सैनिकों ने रास्तापाल नामक गाँव में विद्यालय बंद नहीं करने पर अध्यापक नाना भाई की गोली मारकर हत्या कर दी तथा दूसरे अध्यापक सेंगाभाई को गाडी के पीछे बांधकर घसीटा गया, 13 वर्षीय भील बालिका कालीबाई अध्यापक सेंगाभाई को बचाने के प्रयास में पुलिस की गोलियों की शिकार (शहीद) हो गयी। (19 June 1947)

डुंगरपुर जिले में गेप सागर के तट पर काली बाई की प्रतिमा लगी हुयी है। राज. सरकार बालिका शिक्षा के क्षेत्र में बालिका पुरस्कार प्रदान करती है।

कटराथल सम्मेलन : 25 Apr. 1934 A.D. को कटराथल (सीकर) नामक स्थान पर महिलाओं से दुर्व्यवहार के खिलाफ किशोरी देवी (किसान नेता हरलाल सिंह) के नेतृत्व में 10,000 महिलाओं का एक सम्मेलन हुआ। इस में भरतपुर के किसान नेता ठाकुर देशराज की पत्नी उत्तमा देवी ने भी भाग लिया था।

कूदन हत्याकांड : Apr. 1934 A.D. में कूदन (सीकर) नामक गाँव में पुलिस अधिकारी कैप्टन वेब द्वारा किसानों पर फायरिंग कर दी गई, इसमें कई किसान मारे गये, इस हत्याकांड की चर्चा लंदन के 'HOUSE OF COMMONS' में भी हुयी थी।

महत्त्वपूर्ण संगठन

देश हितैषिणी सभा : मेवाड़ रियासत में विवाह सम्बन्धी सुधार करने के उद्देश्य से 2 जुलाई 1877 A.D. को महाराणा सज्जन सिंह की अध्यक्षता में समाज सुधार संगठन बनाया गया, जिसके उद्देश्य विवाह के समय होने वाले खर्च को कम करना, बहु विवाह निषेध करना था।

[समाज सुधार के परिप्रेक्ष्य में किसी रियासत में हुआ पहला प्रयास)

कवि राजा श्यामलदास (वीर विनोद के लेखक) इसके सदस्य थे।

वाल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा : Jan. 1889 A.D. में A.G.G. वाल्टर ने राजपूतों में विवाह सम्बन्धी सुधार करने के लिये इस सभा का गठन किया जिसके उद्देश्य –

a) विवाह योग्य आयु निश्चित करना (लड़के के लिये 18, लड़की -14वर्ष)

b) बहु विवाह बंद करना

c) टीका व रीत बंद करना

संस्कार / संस्कृति

जड़ूला - जातकर्म (बच्चों के बाल उतरवाना)

बरी पड़ला - वर पक्ष के लोगों द्वारा वधू पक्ष के लोगों के लिए लेकर जाने वाले उपहार.

मेला (मधुपर्क) - शादी पर वधु पक्ष द्वारा वर पक्ष की अगुवानी करना।

मोड़ बाँधना - वर को बारात में चढ़ाते समय मांगलिक कार्य।

नांगल - नये घर का उद्घाटन

ांकन डोरा - वर को शादी पूर्व बांधे जाने वाला डोरा।

रावणी / रंगबरी / समठूनी - शादी के बाद वधू पक्ष द्वारा वर पक्ष को दिये जाने वाले उपहार।

रढ़ार - शादी के समय का प्रीतिभोज।

ौना / मुकलावा - बाल विवाह होने पर, बाद में लड़की की पहली विदाई। जब लड़की पहली बार ससुराल जाती है।

छक / जामणा - ~~लड़क~~ नवजात के जन्म पर, ननिहाल पक्ष की ओर से दिये जाने वाले आभूषण।

द सोठन -

ण - किसी अवसर पर अमल (अफीम) की मनुहार।

बैकुण्ठी : | चंपौल : शव-यात्रा

अघेटा : शमशान ले जाते समय रास्ते में अर्थी की दिशा बदलना ।

पगड़ी : घर में मुखिया की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी चुना जाना ।

सांतरवाड़ा : मृत्यु के बाद दी जाने वाली सांत्वना ।

फूल चुगना : मृत्यु पश्चात् अस्थि एकत्रित करना ।

राजस्थान में सामन्ती व्यवस्था

सामन्ती व्यवस्था (Feudal system): राज॰ में सामन्ती व्यवस्था से तात्पर्य उस व्यवस्था से है जो रक्त सम्बन्धों पर आधारित कुलीय प्रशासनिक व सैनिक व्यवस्था होती थी, जिसमें राजा समकक्षों में प्रथम होता था (कबीलाई संस्कृति)

राज॰ की सामन्त व्यवस्था पश्चिम की सामन्ती (feudal) व्यवस्था के समान नहीं थी, जिसमें राजा व सामन्त के मध्य स्वामी व सेवक का सम्बन्ध होता था बल्कि बंधुत्व पर आधारित थी।

शासक पिता की मृत्यु के बाद बड़ा पुत्र राजा बनता था। तथा शेष छोटे भाईयों को जीवन निर्वाह के लिए जमीन आवंटित की जाती थी, इन भाईयों को सामन्त, तथा भूमि को सामन्त जागीर कहा जाता था जिस पर उस सामन्त का जन्मजात अधिकार होता था।

सामन्ती व्यवस्था का स्वरूप:

राज॰ में सामन्ती व्यवस्था पदसोपान पर आधारित नहीं थी बल्कि टैंट व्यवस्था के समान थी जिसमें राजा टैंट का मुख्य स्तम्भ तथा सामन्त उसके अन्य स्तम्भ होते थे। किसी एक भी स्तम्भ के हिलने से पूरी व्यवस्था पर उसका पूरा प्रभाव पड़ता था।

सामन्ती व्यवस्था की विशेषताएँ – (Started from Saptavahan dynasty)

यह रक्त सम्बन्धों पर आधारित प्रशासनिक व सैनिक व्यवस्था थी।

राजा इन सामन्तों को मुख्य प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया करता था।

राज्य के सभी प्रशासनिक, सैनिक व नीतिगत निर्णय सामन्तों की सलाह / परामर्श पर ही लिए जाते थे।

- सामन्त का उत्थान व पतन राजा के साथ ही होता था। वह अपनी मर्जी से किसी अन्य राज्य के साथ युद्ध या संधि का निर्णय नहीं ले सकता था।
- राजा व सामन्तों के सम्बन्ध सम्मान व कर्त्तव्यों पर आधारित होते थे। राजा सामन्तों के विशेषाधिकारों का सम्मान करता था वहीं सामन्त राज्य के प्रति कर्त्तव्य को निभाते थे।
- सामन्तों को अपने पास एक सेना (जमीयत) रखनी पड़ती थी तथा आवश्यकता पड़ने पर राजा को सैनिक सहायता दी जाती थी, यह युद्ध व शांतिकाल दोनों में रहती थी। इस अनिवार्य सैनिक सहायता के पीछे यह भावना रहती थी कि इस राज्य की भूमि पर सबका सामूहिक अधिकार रहे।
- राजा समकक्षों में प्रथम होता था इस तथ्य को मजबूती देने के लिए राजा सामन्तों को 'काकाजी' व 'भाई जी' जैसे सम्मानजनक शब्दों से सम्बोधित करता था, वहीं सभी सामन्त राजा को 'बापजी' कहकर बुलाते थे। (राजा राज्य का प्रधान, सामंत जागीर का प्रधान)

सामन्तों को मिलने वाले विशेषाधिकार :

* ताजीम : यह एक राजकीय सम्मान होता था जिसमें सामन्त के दरबार में आने पर राजा को खड़ा होकर अभिवादन करना होता है। ताजीम दो प्रकार की होती थी –

इकैवडी (इकहरी)
↓
इसमें राजा (एक बार ही) सामन्त के केवल आने पर खड़ा होता था।

दोवडी (दोहरी)
इसमें राजा को सामन्त के आगमन व गमन दोनों पर खड़ा होना पड़ता था।

3) राजपूताना मध्य भारत सभा: 1918 A.D. में जमनालाल बजाज द्वारा दिल्ली के चांदनी चौक में मारवाड़ी पुस्तकालय में इस सभा का गठन किया गया जिसका मुख्यालय अजमेर (बाद में) बनाया गया। विजयसिंह पथिक, गणेश शंकर विद्यार्थी, चांदकरण शारदा आदि लोग भी इससे जुड़े हुये थे।

4) राजस्थान सेवा संघ: 1919 A.D. में विजय सिंह पथिक द्वारा वर्धा (महाराष्ट्र) में इसका गठन किया गया था। रामनारायण चौधरी व हरिभाई किंकर इस संघ के मुख्य कार्यकर्त्ता थे। राज॰ सेवा ने किसान आंदोलनो (बूंदी, शेखावाटी आदि) में अपनी मुख्य भूमिका निभाई। राज॰ सेवा संघ का मुख्यालय अजमेर में बनाया गया।

5) जीवन कुटीर: 1927 A.D. में वनस्थली (टोंक) में हीरालाल शास्त्री द्वारा इस संस्था का गठन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसे ग्राम समाज का निर्माण करना था, जो पूर्णतः स्वावलम्बन पर आधारित हो।

6 हिन्दी साहित्य समिति: 1912 A.D. में इस संस्था की स्थापना की गयी थी, इसके तहत 1927 A.D में भरतपुर में विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन करवाया गया जिसके अध्यक्ष गौरी शंकर हीराचन्द ओझा थे इस सम्मेलन में रवीन्द्र नाथ टैगोर व जमना लाल बजाज ने भी भाग लिया था।
(भरतपुर में किशनसिंह ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया था)

7) अखिल भारतीय हरिजन संघ: 1932 A.D. में गांधी जी ने घनश्यामदास बिड़ला के नेतृत्व में अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना की थी. इसकी राजपूताना इकाई के अध्यक्ष हरविलास शारदा थे।

6) **वीर भारत सभा:** राज० में क्रांतिकारी गतिविधियों के प्रसार के लिये 1910 A.D. में केसरी सिंह बारहठ व राव गोपाल सिंह खरवा द्वारा इसका गठन किया गया था, विजय सिंह पथिक भी इससे जुड़े हुये थे। यह संस्था अभिनव भारत (वीर सावरकर) की प्रान्तीय इकाई थी

प्रजामण्डलों का राजनीतिक व सामाजिक योगदान :

राजनीतिक योगदान

- राजनीतिक चेतना जागृत
- राष्ट्रीय चेतना का संचार
- उत्तरदायी सरकारों की स्थापना
- एकीकरण का मार्ग प्रशस्त
- राष्ट्रीय एकता को बल
- सामन्तशाही समाप्त
- राष्ट्रीय आंदोलनो को बल

सामाजिक योगदान

- महिलाओं की स्थिति में सुधार
- शिक्षा का प्रचार-प्रसार
- आदिवासियों के कल्याण के लिये सुधार कार्यक्रम
- हरिजन उद्धार
- सामाजिक सौहार्द
- बेगार प्रथा का उन्मूलन
- सामाजिक सुधार

(2)

* **बाँह पसाव :**

इसमें जब कोई सामन्त राजा के दरबार में आता था तो वह अपनी तलवार राजा के पैरों में रखकर उसके पैरों को छूता था। बदले में राजा उसके कंधे पर हाथ रखता था।

* **हाथ का कुरब :**

इसमें भी सामन्त राजा के पैरों में तलवार रखकर उसके पैरों को छूता था बदले में राजा उसके कंधे पर हाथ रखकर, हाथ को हृदय से लगा लेता था

सामन्तों द्वारा दिये जाने वाले (राज्यों को) कर :

* रेख : यह किसी जागीर का अनुमानित भू-राजस्व होता था, जो उस जागीर के पट्टे पर लिखा होता था।

पट्टा रेख	भरतु रेख
पट्टे में लिखा अनुमानित भू- राजस्व	जागीर का वास्तविक भू राजस्व, जो सामन्त राज्य को भरता था।

* उत्तराधिकार शुल्क : किसी जागीर में सामन्त की मृत्यु हो जाने पर राज्य द्वारा उस जागीर पर जब्ती बिठा दी जाती थी फिर नया सामन्त राज्य को उत्तराधिकार शुल्क चुका कर अपने लिए जागीर पुनः प्राप्त करता था। दूसरे शब्दों में कहें तो यह उस जागीर का नवीनीकरण था। इसे मारवाड़ में हुक्मनामा व पेशकशी तथा मेवाड़ में कैद या तलवार बंधाई कहते हैं।

जैसलमेर एकमात्र ऐसी रियासत थी जहाँ उत्तराधिकार शुल्क नहीं लिया जाता था।

* न्यौत कर:

राजकुमारी की शादी के अवसर पर सामन्तों द्वारा राजा को दिया जाने कर।

गनीम बराड़:

युद्ध के अवसर पर दिया जाने कर

जागीर के प्रकार

- पन्त जागीर
  जा द्वारा अपने त सम्बन्धियों दी जाने ी जागीर न्त जागीर लाती थी, जिस उनका जन्मजात धिकार होता था।
- हकुमत जागीर
  राज्य द्वारा प्रशासनिक कार्यों के बदले में मुत्सद्दी (कर्मचारी) वर्ग को दी जाने वाली जागीर, जिसे उस जागीरदार की मृत्यु के बाद 'खालसा' कर दिया जाता था।
- भौम जागीर
  राज्य के लिए बलिदान के बदले में दी जाने वाली जागीर, भौम जागीर कहलाती थी।
- सासण जागीर
  चारणों, ब्राह्मणों, मंदिरों, शिक्षा केन्द्रों आदि को दी जाने वाली जागीर, सासण जागीर कहलाती थी, जिस पर किसी प्रकार का कर नहीं लिया जाता था, जिसे 'माफी जागीर' कहा जाता था।

सामन्तों की श्रेणियां:

ामन्तों को उनके सेवा कार्य तथा बलिदानों के बदले में जो जागीरें । जाती थी, उनका अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तरीके र्गीकरण होता था। इन सामन्तों के विशेषाधिकार व सम्मान भी न श्रेणियों से तय होते थे। उदाहरणस्वरूप - मेवाड़ में प्रथम श्रेणी सामन्तों की संख्या (16) थी, इसमें भी सलूम्बर (उदयपुर)

(3)

के चूंडावतों का महत्त्वपूर्ण स्थान था, उसे राज्य में प्रधान का पद दिया जाता था। युद्ध के समय वह सेना का सेनापति होता था। राजा की अनुपस्थिति में राजधानी संभालता था। राजा के राजतिलक के समय उसके तलवार बांधता था।

जोधपुर में सामन्तों की मुख्यतः 4 चार श्रेणियां थी जिन्हें राजवी, सिरदार, गिनायत व मुत्सद्दी में विभक्त किया गया है।

जयपुर (आमेर) रियासत में पृथ्वीसिंह के समय 12 कोटडी व्यवस्था लागू की गयी।

सामन्तों में मुख्यतः दो वर्ग होते थे।

(1) भौमिया सामन्त

भूमि की रक्षा करते हुये मारे जाने पर उस बलिदान के बदले में जो जागीर दी जाती थी, उन्हें भौमियां सामन्त कहते थे। इनका अपनी जागीर पर वंशानुगत अधिकार होता था व इन्हें बेदखल नहीं किया जा सकता था।

- भौमिया सामन्तों की राज्य कार्यों में नियुक्तियां कर दी जाती थी जैसे - डाक पहुंचाना, युद्ध सामग्री पहुंचाना

(2) ग्रासिया सामन्त

जिन्हें सैनिक सेवा के बदले भूमि दी जाती थी, उन्हें ग्रासिया सामंत कहते थे। इनकी सेवाओं में किसी प्रकार की कमी आने पर इनकी भूमि छीन ली जाती थी

प्रशासनिक व्यवस्था :

• राजा – राज्य का मुख्य सर्वेसर्वा होता था। सभी प्रशासनिक, सैनिक व न्यायिक शक्तियां इसमें निहित होती थी। परन्तु राजा की निरकुंश सत्ता नहीं होती थी। उस पर नियत्रंण करने वालों
सामन्त,
पुरोहित,
युवराज,
परम्परागत नीति नियमों व धर्म शास्त्रों का दबाव हमेशा बना रहता था।

राजा के अल्पवयस्क होने पर राजमाताएँ शासन चलाया करती थी।
कभी-2 बड़े पुत्र का युवराज के रूप में राज्याभिषेक कर दिया जाता था तो युवराज भी शासन कार्यों में सहयोग करता था।

प्रधान – राजा के बाद में दूसरा मुख्य अधिकारी, जो राजा को सैनिक व न्याय सम्बन्धी मामलों में सलाह दिया करता था।

कोटा रियासत में – फौजदार
बीकानेर, भरतपुर – मुख्त्यार
जयपुर – मुसाहिब

वान – दीवान राज्य के वित्त व राजस्व सम्बन्धी मामलों की देख रेख
के करता था वह राज्य के आय-व्यय का लेखा-जोखा व जागीरों
र)की द्वारा दिये जाने वाले वार्षिक कर का हिसाब रखता था। कई बार
की
रा राजा की अनुपस्थिति में जब राज्य पर नियंत्रण रखता थो तो उसे
। देश दीवान के नाम से जाना जाता था।

हिब – राजा का मुख्य सलाहकार

ी – यह सैन्य विभाग पर नियंत्रण रखता था। सैनिक सामग्री.

सैनिकों के अनुशासन व प्रशिक्षण की व्यवस्था करता था।

- **शिकदार** – शिकदार नगर कोतवाल होता था जो नगर में कानून व्यवस्था व शांति बनाए रखने का प्रयास करता था।

- **खानसामा** – यह राजा का विश्वसनीय अधिकारी होता था जो राजकीय सामानों की खरीद, राजमहल की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा राजकीय उद्योगों के सामानों का क्रय विक्रय किया करता था। इस पद पर राजा किसी ईमानदार व्यक्ति की नियुक्ति करता था।

- **वकील** – यह राजधानी में ठिकाणे का प्रतिनिधि होता था।

- **मीर मुंशी** – यह कूटनीतिक पत्र व्यवहार का कार्य देखता था।
  - * रुक्का : राजा द्वारा सामन्तों को भेजे जाने वाले पत्र।
  - * खरीता : राजा द्वारा किसी दूसरे राजा को भेजे जाने वाले पत्र।

- **किलेदार**
- **चौढ़ीदार**

ग्राम प्रशासन :

- मौजा (गांव) → ग्रामिक (पटवारी)
- मौजा (गांव) → चौधरी (पटेल)

- तपो (गांवो का समूह)

→ तफेदार – फसल कटते समय राज्य के भू-राजस्व को निश्चित करता था।

भू - राजस्व प्रशासन :

→ भूमि को दो भागों में विभक्त किया गया था।

- **कृषि भूमि**
  - खेती की जाती थी।
- **चरणोता भूमि / गोचर**
  - सार्वजनिक भूमि, जिसे राजा भी खालसा घोषित नहीं कर सकता था।

किसान भी दो तरह के होते थे -

- **बापीदार**
  - दाखला (पट्टा)
  - कुएँ खुदवा सकते थे।
  - लकड़ी उपयोग में लेक सकते थे।
  - मालिकाना हक
- **गैर - बापीदार**
  - खेतीहर मजदूर
  - शिकमी किसान

भू- राजस्व को भोग, हासिल, लगान कहा जाता था।

बारानी व उन्नाव भूमि पर भू- राजस्व अलग-2 होता था

- बारानी ↓ बरसात के पानी से सिंचित भूमि
- उन्नाव ↓ तालाबों, नहरों, कुओं से सिंचित भूमि

[जयपुर में उन्नाव भूमि पर राजस्व, बारानी भूमि से $1\frac{1}{2}$ गुणा था।

भू- राजस्व वसूलने के तरीके :

* **लाटा** : फसल को काटकर, खलिहान में उसकी सफाई करने के बाद फसल का हिस्सा निश्चित किया जाता है। इस समय

राज्य का कर्मचारी (तफेदार) वहां उपस्थित होता था।

* **कूंता** - खड़ी फसल का अंदाजा लगाकर ही भू-राजस्व निश्चित कर दिया जाता था।

मुकता - जब किसी गांव का एक मुश्त भू-राजस्व निर्धारित कर दिया जाता था।

* **डोरी** - जब खेत को नापकर भू-राजस्व निर्धारित किया जाता था।

* **घूघरी** - राज्य द्वारा दिये गये बीज के बदले लिया जाने वाला भू-राजस्व घूघरी कहलाता था।

* **बीघोडी** - जब गांवो में बीघा के आधार भू-राजस्व लिया जाता था, बीघोडी कहलाता था।

सामन्ती व्यवस्था के प्रभाव :

नकारात्मक प्रभाव

1). जनता कूपमडूकता की स्थिति में बनी रही, बाहरी दुनिया से अवगत नहीं हो पायी। (जागीर में ही)

2. कृषि व्यवस्था का ह्रास

3. व्यापार - वाणिज्य को प्रोत्साहन नहीं दिया जैसे परिवहन - संचार के साधनों का अभाव।

4. उद्योग - धंधो को प्रोत्साहन नहीं दिया गया।

5. आर्थिक शोषण की परिणति किसान विद्रोहों में हो गयी थी।

6. फिजूल खर्ची

7). विलासितापूर्ण जीवन शैली

(6)

सकारात्मक प्रभाव –

हस्तकला उद्योग को प्रोत्साहन किया।

कला एवं संस्कृति का संरक्षण।

स्थापत्य कला को प्रोत्साहन।

लोकगीतों, लोकनृत्यों, शास्त्रीय गायन (लंगा, मांगणियार) को जीवित बनाए रखा।

शुक्र नीति के 9 प्रकार के किले बताए गए हैं –

1) एरण दुर्ग – जिसमें जाने के लिए कांटो - पत्थरों का दुर्गम पथ हो।

2) गिरि दुर्ग – पहाड़ी पर

3) धान्वन दुर्ग – मरुस्थल में

उदा॰ – जैसलमेर का किला

4) वन दुर्ग – वन में।

उदा॰ – रणथम्भौर, चित्तौड़

5) पारिख दुर्ग – चारों तरफ खाई /नहर हो।

उदा॰ – बीकानेर का किला

6) पारिघ दुर्ग – चारों तरफ परकोटा हो।

उदा॰ – बीकानेर का किला

7) सैन्य दुर्ग – सैनिकों का निवास स्थान

उदा॰ – चितौड़

8) औदक दुर्ग – चारों तरफ पानी हो। (नदियों के किनारे बसा हुआ दुर्ग)

उदा॰ – गागरोन और भैंसरोड गढ़

9, सहाय दुर्ग – बन्धु बान्धवों, शूरवीरों का निवास स्थान।

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ

विषय वस्तु की विविधता, वर्ण विविधता, प्रकृति परिवेश, देश - काल के अनुरूप होना राज॰ चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

धार्मिक एंव सांस्कृतिक क्षेत्र की चित्रकला में भक्ति एंव श्रृंगार रस की प्रधानता है।

दीप्तियुक्त, चटकदार एंव सुनहरे रंगो का अधिक प्रयोग किया जाता है।

किलों, महलों व हवेलियों में चित्रकला का पोषण हुआ।

मुगल चित्रकला से प्रभावित राजस्थानी चित्रकला में विलासिता, तडक - भड़क अन्तः पुर के चित्र व पारदर्शी वस्त्र पहने पात्रों के चित्र बनाए गए हैं।

राजस्थानी चित्रकला में समग्रता के दर्शन होते हैं। मुख्य आकृति व पृष्ठभूमि का हमेशा सामन्जस्य बना रहता था। चित्र में प्रत्येक वस्तु का अनिवार्य महत्त्व होता था।

राजस्थानी चित्रकला में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। प्रकृति को जड़ नहीं मानकर उसका मानव के सुख - दुःख के साथ तारतम्य स्थापित किया गया।

मुगलों की अपेक्षा राजस्थानी चित्रकारों को अधिक स्वतन्त्रता होने के कारण लोक विश्वासों को अधिक अभिव्यक्ति मिली।

विभिन्न ऋतुओं का श्रृंगारिक वर्णन कर मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का चित्रण किया गया।

राज॰ चित्रकला में नारी सौन्दर्य का चित्रण अधिक किया गया है।

प्राकृतिक सौन्दर्य का अधिक चित्रण होने के कारण राजस्थानी चित्रकला अधिक मनोरम हो गयी है।

राजस्थान की संगीतबद्ध जातियां

ढोली
राणा
लंगा
मांगणियार
कलावन्त
भवई
कंजर
भोपा
ढाढी

लोकगीतों की विशेषताएं

मनुष्य मन की सुख - दुःख की भावनाओं का मौखिक रूप में लयबद्ध होना ही लोकगीत है।

- राजस्थानी लोकगीतों में पेड़ - पौधों का वर्णन कर प्रकृति के साथ लोगों का जुड़ाव प्रकट होता है।
  जैसे - चिरमी, पीपली, जीरा
- पशु - पक्षियों के माध्यम से विरहणी महिलाओं ने अपने प्रियतम के पास संदेश भेजे हैं तथा उन पक्षियों को अपने परिवार के सदस्य के समान माना गया है,
  जैसे - कुरजां, सुवटियो, मोरियो, बिच्छूड़ो.
- राज. लोकगीतों में काम व श्रृंगार रस का प्रयोग हुआ है। परन्तु कहीं भी यौन सम्बन्धों की स्वतंत्रता की बात नहीं की गई है। ये पति - पत्नी के निर्मल दाम्पत्य प्रेम के गीत है।
- राज. लोकगीतों में हमारे लोक विश्वासों की मुखर अभिव्यक्ति हुई है।
- विभिन्न देवी - देवताओं पर लिखे गए गीत निराश मनुष्य में भी आशा का संचार करते है।

(५)

- राजस्थानी लोकगीतों में पायल की झंकार व तलवार की टंकार दोनों ही सुनाई देती हैं।
- सामन्ती परिवेश में लिखे गए राज. लोकगीतो मे वीर रस की प्रधानता रहती है।

लोक देवी - देवताओं एवं ~~संत-सम्प्रदायों~~ का योगदान

- समाज सुधार
- लोक साहित्य / क्षेत्रीय भाषा को प्रोत्साहन
- धर्म एवं संस्कृति की रक्षा
- पर्यावरण रक्षा व जीव रक्षा
- कष्टों से निवारण
- सरल पद्धति पर आधारित भक्ति भावना
- सामाजिक समरसता
- स्थापत्य कला (मंदिर / थान) से पर्यटन को बढ़ावा
- लोक कला (गीत, नृत्य)
- नैतिक उत्थान
- चित्रकला एवं मूर्तिकला (फड़ चित्रण, पिछवाई)
- आध्यात्मिक उत्थान (संत, सम्प्रदाय द्वारा)
  ↓
  ईश्वर महिमा पर बल।